FAIZAN E MADINA

माहनामा

# फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

अक्तूबर 2025 इ. / रबीउ़ल आख़िर 1447 हि.

## ग्यारहवीं शरीफ़ मुबारक हो

- आमदे मुस्तफ़ा ﷺ के क़ुरआनी मक़ासिद 3
- रिज़्क़ और उ़मर में इज़ाफ़ा 6
- नाकाम लोगों की 23 निशानियां 20
- ग़ौसे पाक और इ़ल्मे ह़दीस 36
- सफ़र और बच्चे 49

# क़र्ज़ से नजात का अ़मल

हर नमाज़ के बाद सात 7 बार

## सूरए क़ुरैश

पढ़ कर दुआ़ मांगिये।

पहाड़ जितना क़र्ज़ होगा तब भी اِنْ شَآءَاللہُ الْکَرِیْم अदा हो जाएगा।
अ़मल ता हुसूले मुराद जारी रखिये।

(नोट : वज़ीफ़े के अव्वल आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है) (देखिये : फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 112)

# निनान्वे बीमारियों के लिये दवा

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ईर्शाद फ़रमाया :

“لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہ”

निनान्वे बीमारियों की दवा है, उन में सब से हल्की बीमारी रंजो ग़म है। (معجم اوسط، 4/10، حدیث:5028)

# तबीअ़त इबादत की त़रफ़ माइल हो

## یَامُحْصِی

(ऐ हर चीज़ के घेरने वाले)

अगर त़बीअ़त इ़बादत की त़रफ़ माइल न होती हो तो सोते वक़्त अपना हाथ सीने पर रख कर 7 मर्तबा येह इस्म पढ़े, اِنْ شَآءَاللہُ الْکَرِیْم बहुत जल्द इ़बादतो रियाज़त का शौक़ पैदा हो।

(नोट : वज़ीफ़े के अव्वल आख़ित तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है)

# तक्लीफ़ में कमी

## یَاحَلِیْمُ

## ग्यारह सौ बार

(अव्वल आख़िर ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ के साथ)
मरीज़ के पास बैठ कर पढ़िये और पानी पर दम कर के इसे पिला दीजिये, اِنْ شَآءَاللہُ الْکَرِیْم इस की तक्लीफ़ में कमी आएगी।

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी)
(4 रमज़ान करीम 1446 हि./04-03-2025 ई.)

माहनामा
# फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

अक्तूबर 2025 इ. | जिल्द : 09 | शुमारा : 10

ब फ़ैज़ाने नज़र

सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ब फ़ैज़ाने करम

आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

*माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर*
*या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर*

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)


**क़ुरआनो हदीस**

आमदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ुरआनी मक़ासिद 3

रिज़्क़ और उम्र में इज़ाफ़ा 6

**फ़ैज़ाने सीरत**

तब्लीग़े दीन में रसूलुल्लाह ﷺ की हिक्मते अ़मलियां 9

आख़िरी नबी, मुहम्मदे अ़रबी ﷺ एक अ़ज़ीम नफ़्सियात शनास 12

**फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत** — ग़ौसे पाक अ़रबी थे या अ़जमी ? मअ़ दीगर सुवालात 14

**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत** — क्या नाबालिग़ पर सज्दए तिलावत लाज़िम होता है ? मअ़ दीगर सुवालात 16

**मज़ामीन** — इस्लाम ही मुकम्मल ज़ाबितए ह़यात है 18

नाकाम लोगों की 23 निशानियां 20

शराइते नमाज़ की ह़िक्मतें 22

जन्नती बालाख़ाने दिलाने वाली नेकियां 24

इस्लाम का निज़ाम त़हारत व नज़ाफ़त 26

अल्लाह पाक की इ़बादत की तालीम 29

बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन 31

**ताजिरों के लिये** — अह़कामे तिजारत 32

**बुज़ुर्गाने दीन की सीरत**

ह़ज़रते सय्यिदुना याक़ूब عَلَیْہِ السَّلَام 34

ग़ौसे पाक और इ़ल्मे ह़दीस 36

ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत मौलाना सय्यिद अह़मद अशरफ़ किछौछवी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ 38

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये 40

**क़ारिईन के सफ़ह़ात** — नए लिखारी 42

**बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"** — घर वालों को सलाम करो, बरकत पाओ ! 45

बारगाहे रिसालत से क़ुव्वते हाफ़िज़ा की बख़्शिश 46

बेल की नसीह़त 47

बच्चों के इस्लामी नाम 48

सफ़र और बच्चे 49

**इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"** — अपना वक़ार बनाइये 51

इ़ज़्ज़ते निस्वां और इस्लाम 53

इस्लामी बहनों के शरई़ मसाइल 55

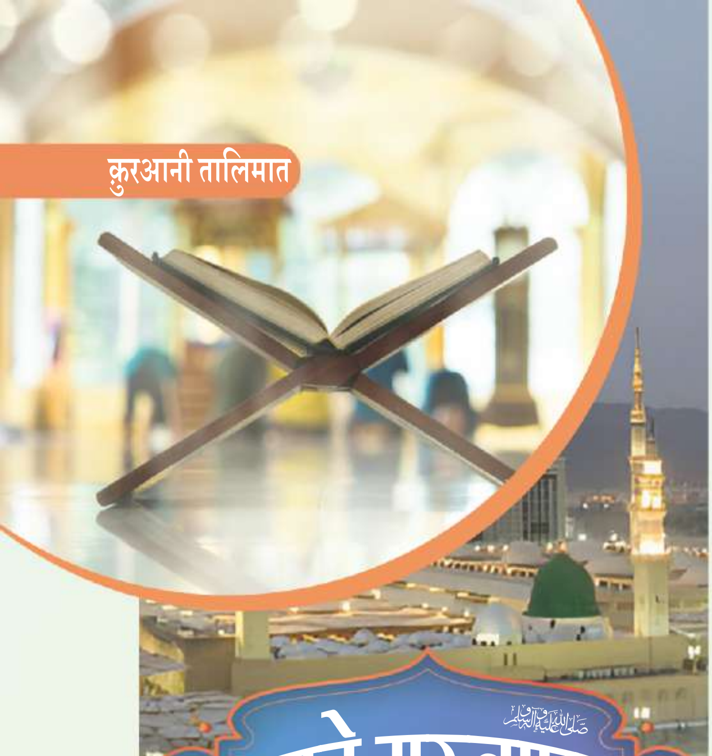

# आमदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ुरआनी मक़ासिद

(क़िस्त : 02)

## क़ुरआन की तिलावत

अम्बियाए किराम की बे'सत का एक नुमायां मक़्सद हमेशा येह रहा है कि वोह अल्लाह के नाज़िल कर्दा कलाम को इन्सानों तक पहुंचाएं। हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी येह फ़रीज़ा सोंपा गया और उसे आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मक़ासिदे बे'सत में शुमार फ़रमाया चुनान्चे क़ुरआने करीम में कई मक़ामात पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे'सत के जिन फ़राइज़ का ज़िक्र किया गया है, उन में "**तिलावते आयात**" को निहायत नुमायां हैसिय्यत दी गई है। सूरतुल बक़रह में इर्शाद होता है :

﴿رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे और भेज उन में एक रसूल उन्हीं में से कि उन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए।[1]

येह दुआ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने की थी जिसे अल्लाह करीम ने क़बूल फ़रमाया और अपना प्यारा महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा में मबऊस फ़रमाया, चुनान्चे सूरए आले इमरान में है : ﴿لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुवा मुसलमानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर उस की आयतें पढ़ता है।[2]

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जब भी कोई नई वही नाज़िल होती, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे फ़ौरी तौर पर लोगों को सुनाते। कई मवाक़ेअ़ पर क़ुरआन ने ख़ुद इस अ़मल को बयान किया। मसलन सूरतुल क़ियामह में है :

﴿لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ؕ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम याद करने की जल्दी में क़ुरआन के साथ अपनी ज़बान को ह़रकत न दो बेशक इस का मह़फ़ूज़ करना और पढ़ना हमारे ज़िम्मे है।[3]

आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े तिलावत, वक़ार, तरतीब, ठहराव और तासीर सह़ाबा के दिलों को लरज़ा देता था। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द, ह़ज़रते उबय बिन कअ़ब, ह़ज़रते ज़ैद बिन साबित जैसे क़ारियाने वही आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बराहेरास्त क़ुरआन सुनते और आगे उम्मत को पहुंचाते।

तिलावते रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह ख़ुसूसिय्यत मह़ज़ अदाएगिये कलिमात न थी बल्कि एक दावती अ़मल था जिस में ह़िक्मत, तदब्बुर, तालीम, इस्लाह़ और बसीरत शामिल थी। सूरए बनी इसराईल में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

﴿وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और क़ुरआन हम ने जुदा जुदा कर के उतारा कि तुम उसे लोगों पर ठहर ठहर कर पढ़ो।[4]

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तिलावते क़ुरआन में ऐसी तासीर थी कि कुफ़्फ़ार भी बाज़ अवक़ात छुप कर सुना करते और एक बार सूरतुन्नज्म की तिलावत पर कुफ़्फ़ारे मक्का भी सज्दे में जा गिरे, एक मरतबा कुफ़्फ़ारे मक्का ने उ़त्बा बिन रबीआ़ को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बात करने और इस्लाम की तब्लीग़ रोकने पर आमादा करने के लिये भेजा, जब उस ने अपना मुद्दआ बयान कर दिया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूरए حٰمٓ السجدة की तिलावत शुरूअ़ फ़रमा दी। आप तिलावत फ़रमाते रहे और उ़त्बा तअ़ज्जुब ख़ेज़ अन्दाज़ में अपने दोनों हाथ ज़मीन पर रखे आप को देखता रहा और आप की तिलावत सुनता रहा, जब आप इस आयत

﴿فَإِنۡ أَعۡرَضُواْ فَقُلۡ أَنذَرۡتُكُمۡ صَٰعِقَةً مِّثۡلَ صَٰعِقَةِ عَادٖ وَثَمُودَ﴾

(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अगर वोह मुंह फेरें तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूं एक कड़क से जैसी कड़क आद और समूद पर आई थी।) पर पहुंचे तो उत्बा ने अपना हाथ आप के दहन मुबारक पर रख दिया और आप को क़सम दे कर कहने लगा : आप आगे न पढ़ें हम पर रहम फ़रमाएं। इसे डर हुवा कि कहीं क़ौमे आद व समूद की त़रह यहां भी कोई अ़ज़ाब न आ जाए, उस के बाद भी आप ने तिलावत जारी रखी। आयते सज्दा पढ़ने के बाद आप ने सज्दए तिलावत भी अदा फ़रमाया, इस के बाद ख़त्मे सूरत तक तिलावत फ़रमाई और उ़त्बा से फ़रमाया कि ऐ उ़त्बा ! तुम्हें जो सुनना था वोह सुन चुके, बाक़ी तुम्हें इख़्तियार है। उ़त्बा जब आप के पास से रुख़्सत हुवा तो उस के चहरे पर हवाइयां उड़ी हुई थीं।[5]

## इतमामे हुज्जत और कलिमए ह़क़ की सरबुलन्दी

बे'सते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक निहायत अहम और फ़ैसलाकुन मक़्सद येह था कि **बातिल के ख़िलाफ़ मुकम्मल इतमामे हुज्जत हो जाए और ह़क़ का बोलबाला हो।** क़ुरआने करीम वाज़ेह करता है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे'सत और आप के वाज़ो नसीह़त और अख़्लाक़ी तालीमात में एक फ़ैसला कुन हुज्जत थी, जिन के ज़रीए अल्लाह तआ़ला ने क़ियामत तक के लिये ह़क़ व बातिल में फ़र्क़ वाज़ेह कर दिया। उस के बाद किसी के लिये उ़ज़्र बाक़ी नहीं रहता और फिर जो ह़क़ को क़बूल न करे, वोह ख़ुद अपनी ज़िद और गुमराही का ज़िम्मेदार हो जाता है। जैसा कि फ़रमाया : ﴿وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبۡعَثَ رَسُولٗا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम अ़ज़ाब करने वाले नहीं जब तक (हम उन में) रसूल न भेज लें।[6]

इसी त़रह सूरतुन्निसा में फ़रमाया : ﴿رُّسُلٗا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةُۢ بَعۡدَ ٱلرُّسُلِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रसूल ख़ुशख़बरी देते और डर सुनाते कि रसूलों के बाद अल्लाह के यहां लोगों को कोई उ़ज़्र न रहे।[7] येह इतमामे हुज्जत बे'सते मुह़म्मदी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए अपने कमाल को पहुंचा, जैसा कि सूरतुस्सफ़ में फ़रमाया गया :

﴿هُوَ ٱلَّذِيٓ أَرۡسَلَ رَسُولَهُۥ بِٱلۡهُدَىٰ وَدِينِ ٱلۡحَقِّ لِيُظۡهِرَهُۥ عَلَى ٱلدِّينِ كُلِّهِۦ وَلَوۡ كَرِهَ ٱلۡمُشۡرِكُونَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे पड़े बुरा माने मुश्रिक।[8]

येह आयात साफ़ बताती हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमदे मुबारक का मक़्सद **बातिल पर हुज्जत क़ाइम करना और ह़क़ को ग़ालिब करना था।** आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़मली मैदान में ज़ुल्म, शिर्क, जहालत और इस्तिबदाद के ख़िलाफ़ जिहाद किया, मुआ़शरती व क़ानूनी निज़ाम क़ाइम किया और अल्लाह के दीन को अ़मली शक्ल दी।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह हुज्जत न सिर्फ़ अ़रबों पर, बल्कि यहूद, नसारा, मुनाफ़िक़ीन, मुश्रिकीन और दुन्या की बड़ी तहज़ीबों पर भी क़ाइम की। सूरतुल फ़ुरक़ान में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को "अल फ़ुरक़ान" यानी **ह़क़ व बातिल के दरमियान फ़ैसला करने वाले क़ुरआने करीम** का मक़्सदे नुज़ूल फ़रमाया गया :

﴿تَبَارَكَ ٱلَّذِي نَزَّلَ ٱلۡفُرۡقَانَ عَلَىٰ عَبۡدِهِۦ لِيَكُونَ لِلۡعَٰلَمِينَ نَذِيرًا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बड़ी बरकत वाला है वोह कि जिस ने उतारा क़ुरआन अपने बन्दे पर जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो।[9]

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए इतमामे हुज्जत का येह अ़मल मुकम्मल हुवा, जैसा कि सूरतुल माइदह में फ़रमाया गया : ﴿قَدۡ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٞ وَكِتَٰبٞ مُّبِينٞ يَهۡدِي بِهِ ٱللَّهُ مَنِ ٱتَّبَعَ رِضۡوَٰنَهُۥ سُبُلَ ٱلسَّلَٰمِ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की त़रफ़ से एक नूर (नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) आया और रौशन किताब अल्लाह उस से हिदायत देता है उसे जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चला सलामती के रास्ते।[10]

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इतमामे हुज्जत की सब से बड़ी मिसाल आप की वफ़ात से पहले का ख़ुत्बए ह़िज्जतुल वदाअ़ है, जिस में आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : أَلَا هَلْ بَلَّغْتُ ؟ सुन लो ! क्या मैं ने (पैग़ाम) पहुंचा दिया ? सब सह़ाबा ने कहा : نَعَمْ ! तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ यानी ऐ अल्लाह ! गवाह रह।[11]

आज भी मुसलमान इसी मक़्सदे बे'सते रसूल के वारिस हैं। दावत, इब्लाग़, अ़द्ल, ह़िक्मत और इस्तिक़ामत के ज़रीए उन्हें ह़क़ की बालादस्ती क़ाइम करना है और दुनिया को बताना है कि ह़क़, अम्न, इन्साफ़ और हिदायत कहां है।

## कितमाने ह़क़ का पर्दा चाक करना और नूरे वह़ी का ज़ुहूर

जब दुनिया उफ़ुक़े तारीख़ पर बात़िल की धुन्द में गुम हो चुकी थी और अहले किताब की वोह जमाअ़तें, जिन पर अल्लाह तआ़ला ने अपने अम्बिया और सह़ाइफ़ भेजे थे, हिदायत के निगेहबान की बजाए ख़ुद गुमराही का सबब बन चुकी थीं, तब अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक ऐसा रसूल बना कर भेजा जो **कितमाने ह़क़ के पर्दे चाक करता है और वह़ी की रौशनी को हर जानिब फैला देता है।**

अहले किताब, ख़ास त़ौर पर यहूदो नसारा, वोह क़ौमें थीं जिन्हें अल्लाह ने तौरात और इन्जील की शक्ल में हिदायत अ़त़ा फ़रमाई थी। मगर उन अक़्वाम ने अम्बियाए किराम के पैग़ाम को छुपाया, इस में मनपसन्द तावीलात कीं और रसूले आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद की वोह वाज़ेह़ निशानियां जो उन की किताबों में दर्ज थीं, उन्हें पर्दए तअ़स्सुब और ह़सद के नीचे दफ़न कर दिया। क़ुरआने मजीद उन के इस त़र्ज़े अ़मल की पुरज़ोर मज़म्मत करता है और फ़रमाता है: ﴿اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْتُمُوْنَ مَاۤ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَیِّنٰتِ وَ الْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَیَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِی الْكِتٰبِۙ اُولٰٓىٕكَ یَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ یَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَۙ(۱۵۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो हमारी उतारी हुई रौशन बातों और हिदायत को छुपाते हैं बाद इस के कि लोगों के लिये हम उसे किताब में वाज़ेह़ फ़रमा चुके उन पर अल्लाह की लानत है और लानत करने वालों की लानत।[12]

येही कितमान और तह़रीफ़ जब दीन के नाम पर फैलने लगे तो अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया और आप को वोह नूर अ़त़ा फ़रमाया जिस के ज़रीए ह़क़ को वाज़ेह़ करना और छुपाए गए दीन को नुमायां करना मुम्किन हुवा। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: ﴿یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا یُبَیِّنُ لَكُمْ كَثِیْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ یَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ۬ؕ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِیْنٌۙ(۱۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ किताब वालो बेशक तुम्हारे पास हमारे येह रसूल तशरीफ़ लाए कि तुम पर ज़ाहिर फ़रमाते हैं बहुत सी वोह चीज़ें जो तुम ने किताब में छुपा डाली थीं और बहुत सी मुआ़फ़ फ़रमाते हैं बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की त़रफ़ से एक नूर आया और रौशन किताब।[13]

यहां "नूर" से मुराद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस है और "किताबे मुबीन" से मुराद क़ुरआने मजीद । रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न सिर्फ़ एक मुबल्लिग़ थे बल्कि "ज़ुल्मात" को चीरने वाला **चराग़े हिदायत** थे, जिन की नज़र बात़िन तक जाती थी और जिन की ज़बान वह़ी के मुत़ाबिक़ सदाक़त की रौशनी फैलाती थी।

क़ुरआने मजीद ने उन तमाम पहलूओं को, जिन्हें अहले किताब ने या तो छुपाया था या मस्ख़ कर दिया था, निहायत वाज़ेह़ अन्दाज़ में दोबारा उजागर किया। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए अल्लाह तआ़ला ने वोह इ़ल्म लोगों को अ़त़ा किया जिस से वोह आज़ादाना त़रीक़े से ह़क़ और बात़िल में तमीज़ कर सकें। फ़रमाया: ﴿وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَیِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ وَ لَا تَكْتُمُوْنَهٗ٘ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब अल्लाह ने अ़हद लिया उन से जिन्हें किताब अ़त़ा हुई कि तुम ज़रूर उसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना तो उन्हों ने उसे अपनी पीठ पीछे फेंक दिया।[14]

जब अहले किताब ने येह अ़हद तोड़ा, तब रिसालते मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस ख़ला को पूरा किया। आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न सिर्फ़ ह़क़ को ज़ाहिर करने वाले थे बल्कि आप ने **रह़म, ह़िक्मत और ह़िल्म** के साथ उन लोगों को हिदायत दी, जिन्हों ने सच्चाई को झूट में गुम कर दिया था।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद के इस अ़ज़ीम मक़्सद का तक़ाज़ा है कि आज उम्मत भी ह़िक्मत, इ़ल्म, नर्मी और इस्तिक़ामत के साथ ह़क़ को ज़ाहिर करे, जैसा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किया था। येही इस उम्मत का शरफ़ है, येही इस का फ़र्ज़ और येही इस का फ़लाह़ का रास्ता।

(बक़िय्या अगले माह के शुमारे में)

---

(1)پ1،البقرۃ: 129(2)پ4، آل عمرٰن: 164(3)پ29،القیٰمۃ:16، 17
(4)پ15،بنی اسرآءیل:106(5)دلائل النبوۃ للبیہقی،2/203(6)پ15،بنی
الاسرآءیل:15(7)پ6، النسآء:165(8)پ28، الصف:9(9)پ18، الفرقان:1
(10)پ6المآئدۃ:15، 16(11)بخاری،3/140، حدیث:4403(12)پ2،
البقرۃ:159(13)پ6،المآئدۃ:15(14)پ4،اٰل عمرٰن:187۔

क़ुरआनी वाक़िआ़त व अ़जाइबात का बेहतरीन गुलदस्ता

लो मदीने का फूल लाया हूं
मैं ह़दीसे रसूल लाया हूं

शर्हे ह़दीसे रसूल

# रिज़्क़ और उ़म्र में इज़ाफ़ा

(Increase in sustenance and lifespan)

मुस्लिम शरीफ़ में है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ईर्शाद फ़रमाया :

مَنْ اَحَبَّ اَنْ يُّبْسَطَ لَهٗ فِىْ رِزْقِهٖ وَيُنْسَاَ لَهٗ فِىْ اَثَرِهٖ فَلْيَصِلْ رَحِمَهٗ

तरर्जमा : जिसे येह पसन्द हो कि उस के रिज़्क़ में वुस्अ़त हो और उ़म्र में इज़ाफ़ा हो, उसे चाहिये कि सिलए रेह़मी करे।[1]

इस फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में रिज़्क़ और उ़म्र में इज़ाफ़े का नबवी नुस्ख़ा बताया गया है और वोह है रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक ! अपना फ़ाएदा चाहना इन्सानी फ़ित़रत का तक़ाज़ा है लिहाज़ा जिस अ़मल पर उस का फ़ाएदा मौक़ूफ़ हो वोह काम करने में उसे रग़बत हो जाती है। इस रिवायत में रिज़्क़ में फ़राख़ी और उ़म्र में इज़ाफ़ा मौक़ूफ़ जब कि रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक मौक़ूफ़ अ़लैह है। इन तीनों के बारे में वज़ाह़ती कलाम यहां पेश किया जा रहा है :

## 1 रिज़्क़ में वुस्अ़त

रिज़्क़ बढ़ने से मुराद दर अस्ल उस में बरकत है क्यूंकि सिलए रेह़मी सदक़ा है और सदक़ा माल को बढ़ाता और उस में इज़ाफ़ा करता है।[2]

## 2 उ़म्र में इज़ाफ़ा

इस ह़दीसे पाक में "يُنْسَاَ فِىْ اَثَرِهٖ" फ़रमाया है يُنْسَاَ نَسَاء से है। نَسَاء कहते हैं देर लगाने को इस लिये उधार को نَسِيْئَه कहा जाता है कि वहां माल देर से मिलता है। اَثَر कहते हैं निशाने क़दम को, मरने से निशाने क़दम जाते रहते हैं कि फिर इन्सान चलता फिरता नहीं। फिर ज़िन्दगी को असर कहने लगे कि ज़िन्दगी में निशाने क़दम ज़मीन पर पड़ते हैं। मौत में देर लगाने से मुराद है उ़म्र दराज़ होना, यानी जो रिज़्क़ में बरकत उ़म्र में दराज़ी चाहे वोह रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करे।[3]

ह़ज़रते इमाम नववी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : उ़म्र में इज़ाफ़े का तअ़ल्लुक़ लौह़े मह़फ़ूज़ में लिखी हुई उस उ़म्र से है कि जो फ़रिश्तों को मालूम है। मसलन : फ़रिश्तों को लौह़े मह़फ़ूज़ पर येह दिखाया जाता है कि उस आदमी की उ़म्र साठ 60 बरस है लेकिन अगर उस ने सिलए रेह़मी की तो उस की उ़म्र में चालीस 40 साल का और इज़ाफ़ा कर दिया जाए और अल्लाह करीम को इ़ल्म होता है कि येह सिलए रेह़मी करेगा या नहीं ! लेकिन मख़्लूक़ को मालूम नहीं होता। जब वोह सिलए रेह़मी करता है तो लौह़े मह़फ़ूज़ में लिखी हुई उ़म्र में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है। तो येह ज़ियादती मख़्लूक़ के इ़ल्म के लिहाज़ से है अल्लाह पाक के इ़ल्म के एतिबार से नहीं।[4]

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : उ़म्र में ज़ियादती से एक मुराद नेक औलाद भी है जो उस

के लिये दुआ करने वाली और उस की नेकनामी को ज़िन्दा रखने वाली है।[5]

अ़ल्लामा बद्रुद्दीन ऐ़नी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "उ़म्र में ज़ियादती का माना है कि मरने के बाद भी दुन्या में उस शख़्स का ज़िक्रे जमील बाक़ी रहेगा और लोगों की ज़बानों पर उस की तारीफ़ रहेगी तो गोया कि मरने के बाद भी वोह नहीं मरा, अब येह तारीफ़ चाहे इस बिना पर हो कि उस ने लोगों को ऐसा इ़ल्म पहुंचाया जिस से उन को नफ़ा ह़ासिल हुवा या उस ने सदक़ए जारिया किया हो या अपने पीछे नेक औलाद छोड़ गया हो।[6]"

इर्शादुस्सारी शर्हे बुख़ारी में है : उ़म्र में इज़ाफ़े का मत़लब येह है कि इन्सान के जिस्म में क़ुव्वतो त़ाक़त ह़ासिल हो जाती है, या फिर उस की अच्छी शोहरत और नेक नामी लोगों की ज़बानों पर बाक़ी रहती है गोया वोह मरा ही नहीं। येह भी मुराद हो सकता है कि अगर येह शख़्स सिलए रेह़मी करेगा तो उस की उ़म्र और रिज़्क़ इतने होंगे, और अगर क़त़्ए रेह़मी करेगा तो इतने होंगे। अत्तरग़ीब वत्तरहीब में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत किया है कि नबिय्ये अकरम, रसूले मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक इन्सान सिलए रेह़मी करता है ह़ालांकि उस की उ़म्र में सिर्फ़ तीन दिन बाक़ी होते हैं, तो अल्लाह तआ़ला उस की उ़म्र में तीस साल का इज़ाफ़ा फ़रमा देता है। और बेशक एक शख़्स क़त़्ए रेह़मी करता है ह़ालांकि उस की उ़म्र में तीस साल बाक़ी होते हैं, तो अल्लाह तआ़ला उस की उ़म्र को घटा देता है यहां तक कि सिर्फ़ तीन दिन बाक़ी रह जाते हैं।"[7]

## 3 सिलए रेह़मी

सिला के माना हैं : اِيْصَالُ نَوْعٍ مِّنْ اَنْوَاعِ الْاِحْسَان यानी किसी भी क़िस्म की भलाई और एह़सान करना।[8] और रह़म से मुराद : क़राबत, रिश्तेदारी है।[9] बहारे शरीअ़त में है : सिलए रेह़म के माना : रिश्ते को जोड़ना है यानी रिश्ते वालों के साथ नेकी और सुलूक (यानी भलाई) करना।[10]

इस ह़दीसे पाक में रिज़्क़ व उ़म्र में इज़ाफ़े को जिस अ़मल पर मौक़ूफ़ किया गया है वोह सिलए रेह़मी करना है और इस से मुराद येह है कि ज़ी रेह़म हो या वारिस व जानशीन हो या फिर क़रीबी रिश्तेदार हर एक से सिलए रेह़मी व ह़ुस्ने सुलूक करना है और येह सिलए रेह़मी (मौक़अ़ के मुत़ाबिक़) कभी माल से होती है, कभी ख़िदमत से और कभी मेलजोल से होती है।[11]

मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बाज़ उ़लमा ने इस ह़दीस को ज़ाहिर पर ह़म्ल किया है (यानी ह़दीस के ज़ाहिरी माना मुराद लिये हैं) यानी यहां क़ज़ा मुअ़ल्लक़ मुराद है क्यूंकि क़ज़ा मुबरम टल नहीं सकती। (क़ज़ा से मुराद यहां क़िस्मत है। क़ज़ा की अक़्साम और उस के बारे में तफ़्सीलात जानने के लिये मकतबतुल मदीना की मत़बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल 14 ता 17 का मुत़ालआ़ कीजिये)

## सिलए रेह़मी की सूरतें

क़ुरआने पाक में है : ﴿وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَ الْاَرْحَامَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिह़ाज़ रखो।[12]

एक और फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में भी सिलए रेह़मी की फ़ज़ीलत बयान की गई है : रिश्ते जोड़ना घर वालों में मह़ब्बत, माल में बरकत और उ़म्र में दराज़ी है।[13]

### 12 हज़ार दिरहम रिश्तेदारों को बांट दिये

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِيَ اللهُ عَنْه ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِيَ اللهُ عَنْهَا की ख़िदमत में 12 हज़ार दिरहम भेजे तो उन्हों ने येह रक़म अपने रिश्तेदारों में तक़्सीम कर दी।[14]

शारेह़ बुख़ारी अ़ल्लामा सय्यिद मह़मूद अह़मद रज़वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "सिलए रेह़मी की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं मसलन ● उन को हदिया व तोह़फ़ा देना ● उन की इम्दाद व इआ़नत करना ● उन के साथ लुत़्फ़ो मेहरबानी से पेश आना

उन्हें सलाम करना उन के साथ मुलाक़ात करना उन के पास उठना बैठना उन के साथ ख़तो किताबत रखना, ग़रज़ येह कि हर वोह अच्छा फ़ेल जिस से जानिबैन में महब्बत व उल्फ़त पैदा हो सिलए रेहम है। बेहतर येह है मुलाक़ात में नाग़ा करे, एक दिन मिले तो दूसरे दिन न जाए कि इस तरह महब्बत व उल्फ़त ज़ियादा होती है। नीज़ सिलए रेहमी उसी का नाम नहीं कि जब वोह अच्छी तरह पेश आएं तब ही उन से अच्छाई की जाए बल्कि सिलए रेहमी तो येह है कि अगर वोह सख़्ती और बे एतिनाई बरतें तो उन के साथ नर्मी और बुर्दबारी से पेश आया जाए।[15]"

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रिश्ता जोड़ने वाला वोह नहीं जो बदला चुकाए बल्कि जोड़ने वाला वोह है कि जब उस से रिश्ता तोड़ा जाए तो वोह उसे जोड़ दे।[16]

## सिलए रेहमी करने के 10 फ़ाएदे

हज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सिलए रेहमी करने के 10 फ़ाएदे हैं : 1 अल्लाह पाक की रिज़ा हासिल होती है 2 लोगों की ख़ुशी का सबब है 3 फ़रिश्तों को मसर्रत होती है 4 मुसलमानों की तरफ़ से उस शख़्स की तारीफ़ होती है 5 शैतान को उस से रंज पहुंचता है 6 उ़म्र बढ़ती है 7 रिज़्क़ में बरकत होती है 8 फ़ौत हो जाने वाले आबाओ अज्दाद (यानी मुसलमान बाप दादा) ख़ुश होते हैं 9 आपस में महब्बत बढ़ती है 10 वफ़ात के बाद उस के सवाब में इज़ाफ़ा हो जाता है, क्यूंकि लोग उस के हक़ में दुआए ख़ैर करते हैं।[17]

## रिश्तेदारों के दरजात

मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहारे शरीअ़त जिल्द 3 सफ़हा 559 पर लिखते हैं : अहादीस में मुतलक़न (यानी बग़ैर किसी क़ैद के) रिश्ते वालों के साथ सिला (यानी सुलूक) करने का हुक्म आता है, क़ुरआने मजीद में मुतलक़न (यानी बिला क़ैद) ज़विल क़ुर्बा (यानी क़राबत वाले) फ़रमाया गया मगर येह बात ज़रूर है कि रिश्ते में चूंकि मुख़्तलिफ़ दरजात हैं (इसी तरह) सिलए रेहम (यानी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) के दरजात में भी तफ़ावुत (यानी फ़र्क़) होता है। वालिदैन का मरतबा सब से बढ़ कर है, उन के बाद ज़ू रेहम महरम का, (यानी वोह रिश्तेदार जिन से नसबी रिश्ता होने की वज्ह से निकाह हमेशा के लिये ह़राम हो) उन के बाद बक़िय्या रिश्तेवालों का अ़ला क़द्रे मरातिब। (यानी रिश्ते में नज़दीकी की तरतीब के मुताबिक़)[18]

## रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक के समाजी फ़वाइद

ख़ानदान मज़बूत होता है आपस के तअ़ल्लुक़ात बेहतर होने से ख़ानदान में इत्तिहाद, महब्बत और तआवुन बढ़ता है समाजी हम आहंगी क़ाइम रहती है अगर कोई मुसीबत, बीमारी या माली तंगी आ जाए तो रिश्तेदार ही सब से पहले मदद को पहुंचते हैं जब बच्चे अपने बड़ों को रिश्तेदारों के साथ अच्छे तअ़ल्लुक़ात रखते देखते हैं तो उन में भी ईसार, हमदर्दी और सिलए रेहमी की आ़दत पैदा होती है।

अल्लाह करीम हमें मुसलमानों बिलख़ुसूस रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)مسلم، ص1062، حدیث:6524(2)ارشاد الساری،5/33، تحت الحدیث:2067(3)مرآۃ المناجیح، 6 / 520(4)شرح مسلم للنووی،16/114(5)اشعۃ اللمعات،4/109(6)عمدۃ القاری،15/154، تحت الحدیث:5985(7)ارشاد الساری، 5/33، تحت الحدیث: 2067(8)الزواجر عن اقتراف الکبائر، 2/156 (9)لِسانُ العَرب،1/1613(10)بہار شریعت، 3/558(11)ارشاد الساری، 5 / 33، تحت الحدیث: 2067(12)پ4،النسآء:1(13)ترمذی، 3/394، حدیث:1986(14)اسد الغابہ،7/140(15)فیوض الباری،8/43ملخصًا(16)بخاری، 4/98،حدیث:5991(17)تنبیہ الغافلین، ص73(18)رَدّالمحتار،9/678۔

रिश्तेदारों के हुक़ूक़, सिलए रेहमी और दीगर बहुत सारी मालूमात पर मुश्तमिल बेहतरीन रिसाला

## तब्लीग़े दीन में

# रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिक्मते अमलियां

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

(Strategic Methods of Propagation)

**सब्रो इस्तिक़ामत : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दावती हिक्मत का सुतून** दावते दीन की राह में मुश्किलात, इन्कार, इस्तिहज़ा, ज़ुल्म और मुज़ाहमत एक आम सा मुआमला है, मगर जो दाई सब्र व इस्तिक़ामत से काम लेता है, वोही अपने मिशन में कामयाब होता है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका सब्रो इस्तिक़ामत की बेमिसाल दास्तान है। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने न सिर्फ़ ख़ुद ज़ुल्म बरदाश्त किया, बल्कि अपने मुत्तबईन को भी हौसला दिया कि वोह दीन की राह में साबित क़दम रहें। सब्र, दरहक़ीक़त, दावत की रूह है, और इस्तिक़ामत उस का दिल। अगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जल्दबाज़ी करते या मक्का के ज़ुल्म से घबरा कर दावत का मिशन तर्क कर देते तो दीने इस्लाम का नूर आलमगीर न होता।

क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआला ने मुतअद्दद मवाक़ेअ पर सब्र की तल्क़ीन की और उसे अम्बियां की सुन्नत क़रार दिया :

﴿فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम सब्र करो जैसा हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया।[(1)]

येह हुक्म रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उस वक़्त दिया गया जब कुफ़्फ़ारे मक्का की तरफ़ से ज़ुल्मो सितम की शिद्दत बढ़ रही थी। इस से ज़ाहिर होता है कि सब्र न सिर्फ़ अख़्लाक़ी सिफ़त है, बल्कि नबवी दावत का एक बुन्यादी जुज़ भी है।

मक्कए मुकर्रमा के इब्तिदाई तेरह साल का दौर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सहाबा के लिये सख़्त आज़माइशों का था। हज़रते ख़ब्बाब बिन अरत رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को दहकते अंगारों पर लिटाया गया, हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को गर्म रेत पर घसीटा गया, और हज़रते सुमय्या व हज़रते यासर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को शहीद किया गया। लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन सब को सब्र की तल्क़ीन की। ताइफ़ का वाक़िआ सब्र की एक इन्तिहाई बुलन्दी की मिसाल है, जब आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पथ्थर मार कर लहूलुहान कर दिया गया, मगर आप ने बददुआ के बजाए हिदायत की दुआ की। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ की :

"اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْن"

यानी ऐ अल्लाह ! मेरी क़ौम को मुआफ़ कर दे, क्यूंकि वोह जानते नहीं।[(2)]

दीन की दावत में सब्र का मतलब येह है कि मुबल्लिग़ फ़ौरी नताइज की उम्मीद न रखे, बल्कि वोह मुसलसल, तदरीजी और पुरअम्न जिद्दोजहद को अपनाए। सख़्त लहजे, तन्ज़िया रद्दे अमल

के बजाए दलाइल, नर्म गुफ़्तारी और साबित क़दमी से अपना मिशन जारी रखे। मौजूदा दौर में भी जब इस्लामोफ़ोबिया, इल्हाद या मुआशरती मुज़ाहमत का सामना हो तो दाई को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत से सीख कर सब्रो इस्तिक़ामत की रविश अपनानी चाहिये, जैसा कि सूरए फ़ुस्सिलत में फ़रमाया गया :

﴿وَلَا تَسْتَوِی الْحَسَنَةُ وَلَا السَّیِّئَةُ ؕ اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नेकी और बदी बराबर न हो जाएंगी ऐ सुनने वाले बुराई को भलाई से टाल।[3]

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत येह सिखाती है कि सब्र सिर्फ़ ज़ुल्म सहने का नाम नहीं, बल्कि अपने मोक़िफ़ पर इस्तिक़ामत के साथ क़ाइम रहना और बातिल के सामने डटे रहना भी सब्र है। चुनान्चे तब्लीग़ी मिशन की कामयाबी के लिये सब्रो इस्तिक़ामत बुन्यादी रूह हैं।

**नर्मिये ज़बान और लहजे में एतिदाल: रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तब्लीग़ी हिक्मते अ़मली** तब्लीग़े दीन की राह में लाज़िमी तौर पर इख़्तियार की जाने वाली हिक्मते अ़मलियों में से एक ज़बान की नर्मी और लहजे का एतिदाल भी है। येह एक ऐसी हिक्मते अ़मली है जिस ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पैग़ाम को दिलों में उतारा। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दावती ज़िन्दगी में नर्मी, शिगुफ़्तगी और दिलसोज़ी नुमायां औसाफ़ थे, जिन्हों ने सख़्त दिल दुश्मनों को भी मुतअस्सिर किया। ज़बान की सख़्ती और लहजे की तुन्दी दिलों को दूर करती है, जब कि नर्मी दिलों में महब्बत पैदा करती और क़बूलिय्यत का दर खोलती है।

एक देहाती मस्जिदे नबवी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पेशाब करने लगा, सहाबए किराम ने उसे रोकने की कोशिश की, तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : " لَا تُزْرِمُوْهُ دَعُوْهُ " यानी उसे मत रोको, उसे छोड़ दो। जब वोह फ़ारिग़ हो गया तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पानी मंगवाया और सफ़ाई करवाई, फिर नर्मी से उसे समझाया कि येह अल्लाह का घर है, यहां ऐसी चीज़ जाइज़ नहीं।[4]

नेकी की दावत में अ़मली ततबीक़ येह है कि आज का मुबल्लिग़ अपने अल्फ़ाज़ और अन्दाज़े गुफ़्तगू पर कड़ी नज़र रखे। बहुत दफ़्अ़ सख़्त लहजे में की गई अहम बात भी रद हो जाती है जब कि नर्मी से कही गई मामूली बात भी दिल में घर कर जाती है। बहुत से लोग अपने इ़ल्म के बावुजूद महज़ सख़्ती और तह़क़ीर आमेज़ अन्दाज़ की वज्ह से लोगों के हां मक़्बूलिय्यत नहीं पाते, जब कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के बरअ़क्स हिक्मत, शफ़क़त और ख़ुश अख़्लाक़ी के ज़रीए लोगों के दिलों में अपने पैग़ाम के लिये जगह बनाई।

नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

" اِنَّ الرِّفْقَ لَا یَکُوْنُ فِیْ شَیْءٍ اِلَّا زَانَهٗ، وَلَا یُنْزَعُ مِنْ شَیْءٍ اِلَّا شَانَهٗ "

यानी नर्मी जिस चीज़ में होती है, उसे ज़ीनत बख़्शती है और जिस से निकाल दी जाए, उसे बदसूरत बना देती है।[5] येह ह़दीस वाज़ेह करती है कि नर्मी कोई कमज़ोरी नहीं बल्कि जमाल है, दावते दीन के हुस्न का अहम तरीन अ़न्सुर है।

आज जब मुआ़शरा इख़्तिलाफ़ात, तअ़स्सुब और नफ़रत का शिकार है, तो एक मुबल्लिग़ के लिये लाज़िमी है कि वोह ज़बान और लहजे की नर्मी को अपनाए। सीरते रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस का अ़मली मॉडल है, जिस में न सिर्फ़ बात का असर था बल्कि दिलों को मुसख़्ख़र कर लेने वाली मिठास भी।

**मुख़ात़ब की ज़ेहनी सत़ह का लिहाज़** तब्लीग़े दीन के मुअस्सिर अन्दाज़ में सब से बुन्यादी उसूल येह है कि मुबल्लिग़, मुख़ात़ब के फ़िक्री, इ़ल्मी और ज़ेहनी पसे मन्ज़र को समझे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत हमें इस उसूल की कामिल मिसाल फ़राहम करती है। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हर फ़र्द, क़ौम या क़बीले को उस के मिज़ाज, इ़ल्मी दर्जे और ज़ेहनी उफ़ुक़ के मुताबिक़ दावत दी। इस हिक्मते अ़मली की तब्लीग़ी अहमिय्यत इस में है कि बात मुख़ात़ब की फ़हम के दायरे में आती है तो क़बूलिय्यत के इम्कानात बढ़ जाते हैं। येही वोह राज़ है जिसे क़ुरआने करीम ने यूं बयान किया : ﴿اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर (से)[6] यहां "**हिक्मत**" का मफ़्हूम ही येह है कि हर बात उस की जगह, वक़्त और समझने वाले की इस्तिअ़्दाद के मुताबिक़ कही जाए।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते त़य्यिबा में इस ह़िक्मते अ़मली की बेशुमार मिसालें हैं। जैसा कि एक नौजवान नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आ कर ज़िना की इजाज़त त़लब करता है। सह़ाबए किराम उसे झिड़कने लगे लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे क़रीब बुलाया, नर्मी से सुवालात किये : क्या तू येह अपनी मां, बहन, बेटी या बीवी के लिये पसन्द करेगा ? नौजवान ने हर बार नहीं कहा, तो आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तु भी दूसरों के लिये वोही पसन्द कर जो अपने लिये पसन्द करता है।[(7)] येह उस्लूब नफ़्सियाती और ज़ेहनी दरजए फ़हम को मद्दे नज़र रखते हुए इख़्तियार किया गया।

येह ह़िक्मते अ़मली आज के दौर में भी निहायत मुअस्सिर है। अगर मुबल्लिग़ किसी नौजवान से गुफ़्तगू कर रहा हो तो उस के रुजह़ानात और सुवालात को समझे बग़ैर कोई बात दिल में नहीं उतरेगी। इसी त़रह किसी दानिशवर, साइन्सदान या आ़म मज़दूर से यक्सां अन्दाज़ में बात करना ह़िक्मत से ख़ाली है। हर फ़र्द से उस की अ़क़्ल, तरबियत और समाजी ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ बात करना ही नबवी त़र्ज़े दावत है।

**इन्फ़िरादी मुलाक़ातों के ज़रीए दावत** तब्लीग़े दीन का बुन्यादी मक़्सद सिर्फ़ पैग़ाम पहुंचाना नहीं बल्कि दिलों को क़ाइल करना और फ़िक्रों को बदलना है। इस के लिये एक मुअस्सिर ह़िक्मते अ़मली **"इन्फ़िरादी दावत"** है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इब्तिदा में दीने इस्लाम की दावत अपने क़रीबी अफ़राद को दी। सब से पहले ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا, ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہُ, ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللہُ عَنْہُ और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ को इन्फ़िरादी त़ौर पर ईमान की दावत दी, और सब ने बग़ैर किसी हिचकिचाहट के इस्लाम क़बूल किया, ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ख़ुद भी इन्फ़िरादी दावत के माहिर बन गए और उन की दावत से ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ عَنْہُ, ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़वाम, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते त़ल्ह़ा, ह़ज़रते सअ़द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ عَنْہُم जैसे बड़े सह़ाबए किराम इस्लाम में दाख़िल हुए।

मौसमे हज के मौक़अ़ पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिना और अ़रफ़ात में क़बीलों के ख़ैमों में जाते, उन के सरदारों से अकेले मिलते और दीने इस्लाम की दावत पेश करते। ह़ज़रते रबीआ़ बिन उ़बाद رَضِیَ اللہُ عَنْہُ बयान करते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि वोह क़बीलए क़ुरैश के सरदारों के पास जा कर कहते : ऐ बनी फ़ुलां ! मैं अल्लाह का रसूल हूं, तुम्हें अल्लाह की त़रफ़ बुलाता हूं।[(8)]

जब त़ाइफ़ के सरदारों ने इज्तिमाई़ त़ौर पर रद किया, तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने त़ाइफ़ के तीन बड़े अशराफ़ से फ़र्दन फ़र्दन बात की। येह इस बात की दलील है कि अगर इज्तिमाई़ दावत का माह़ौल साज़गार न हो तो इन्फ़िरादी त़ौर पर दिलों में राह तलाश की जाए।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दारे अरक़म को मर्कज़ बना कर वहां एक एक फ़र्द को तरबियत दी। ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ عَنْہُ, ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ عَنْہُ, ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللہُ عَنْہُ, ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللہُ عَنْہُ जैसे अफ़राद इन्फ़िरादी दावत के नतीजे में ईमान लाए।

आज के दौर में इन्फ़िरादी दावत का त़रीक़ा स्कूल, दफ़ातिर, अस्पताल, सोशल मीडिया और ज़ाती मुलाक़ातों में मुअस्सिर अन्दाज़ से इस्तिमाल किया जा सकता है। दावत का येह त़रीक़ा ख़ास त़ौर पर उन अफ़राद के लिये मुफ़ीद है जो मुआ़शरती दबाव की वज्ह से खुले आ़म ह़क़ बात सुनने या तस्लीम करने से घबराते हैं। इन्फ़िरादी दावत में मुबल्लिग़ को येह मौक़अ़ मिलता है कि वोह सामेअ़ की ज़ाती कैफ़िय्यत, ज़ेहनी सत़ह और दिलचस्पियों को मद्दे नज़र रख कर पैग़ाम दे, जैसा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किया।

सफ़ह़ात का दामन इतनी वुस्अ़त नहीं रखता कि हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबल्लिग़ाना ह़िक्मते अ़मलियां मज़ीद लिख सकें, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़कीमाना तालीमात पर अ़मल करने और उन ह़िक्मते अ़मलियों को अपनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہ وسلَّم

---

(1)پ26، الاحقاف: 35(2)بخاری، 2/468، حدیث: 3477 (3)پ24، فصلت: 34(4)مسلم، ص133، حدیث: 661(5)مسلم، ص1073، حدیث: 6602 (6)پ14، النحل: 125(7)مسند احمد، 8/285، حدیث: 22274
(8)دیکھیے: مسند امام احمد، 5/424، حدیث: 16025۔

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

# आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुह़म्मदे अ़रबी एक अ़ज़ीम नफ़्सियात शनास

**3 किरदारी त़रीक़ए इ़लाज (Behavior Therapy ) :** किसी भी साइकोलॉजिकल प्रॉब्लम की बुन्याद कोई सोच, फ़िक्रिया नज़रिया होता है, जो मरीज़ के दिमाग़ में रच बस जाता है और मरीज़ उसी को ह़र्फ़े आख़िर क़रार दे लेता है। मसलन कोई शख़्स लोगों के सामने बोलने में झिजक मह़सूस करता है, इस झिजक के पीछे ज़रूर कोई सानिह़ा होगा, मसलन बचपन में कभी उस ने तक़रीर की होगी और लोगों ने उस का मज़ाक़ बनाया होगा या उस ने किसी का मज़ाक़ बनते देखा होगा या फिर उस ने ख़ुद से मज़ाक़ बनने की कैफ़िय्यत को अपने दिमाग़ में बिठा कर उस की तस्वीर बनाली होगी। ऐसी सूरत में एक माहिर साइकोलॉजिस्ट को चाहिये होता है कि वोह अपने किरदार, अ़मल या क़ौल से मरीज़ को कोई मज़बूत़ दूसरी वज्ह (Strong second reason) दे, जब येह दूसरी मज़बूत़ वज्ह पहले वाली मन्फ़ी सोच की जगह ले लेगी तो मरीज़ ख़ुद ही सेहतमन्द हो जाएगा। ग़रज़ : इस त़रीक़ए इ़लाज में मुआ़लिज मरीज़ का मस्अला ख़त्म ही नहीं करता बल्कि उस की मन्फ़ी सोच की जगह मुस्बत सोच, ग़लत़ आ़दत की जगह अच्छी आ़दत और बुरे किरदार की जगह अच्छे किरदार को रख देता है। प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सीरत में इस त़रीक़ए इ़लाज की भी कई मिसालें मौजूद हैं, मसलन

◎ ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है, एक अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه जिन के मआ़शी ह़ालात बहुत कमज़ोर थे, वोह एक दिन प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और मदद का सुवाल किया। (उन्हों ने सुवाल अगर्चे माली इम्दाद का किया था, लेकिन ग़ैबों पर ख़बरदार नबी, रसूले हाशिमी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जानते थे कि उन की अस्ल ज़रूरत माल नहीं कोई और चीज़ है) चुनान्चे फ़रमाया : क्या तुम्हारे घर में कोई चीज़ नहीं है ? अ़र्ज़ किया : हमारे पास एक चटाई है जो हम आधी नीचे बिछा लेते हैं, आधी ऊपर ओढ़ लेते हैं और एक पियाला है, उस में हम पानी पीते हैं। फ़रमाया : जाओ ! दोनों चीज़ें ले आओ ! वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه घर गए चटाई उठाई, प्याला हाथ में लिया और बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए, रह़मते दो जहान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एलान किया : कौन येह चीज़ें ख़रीदता है ? एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ किया : ह़ुज़ूर ! मैं एक दिरहम (चांदी के सिक्के) के बदले ख़रीदता हूं। फ़रमाया : कोई है जो इस से ज़ियादा क़ीमत लगाए ? दूसरे सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه बोले : ह़ुज़ूर ! मैं 2 दिरहम के बदले ख़रीदता हूं । नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोनों चीज़ें उन सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को दीं, 2 दिरहम वुसूल फ़रमाए और उन चीज़ों के अस्ल मालिक को दिरहम दे कर फ़रमाया : बाज़ार जाओ, एक दिरहम का ग़ल्ला (खाने पीने का सामान) ख़रीदो, घर पहुंचाओ, दूसरे दिरहम की कुल्हाड़ी ख़रीदो और मेरे पास ले आओ ! वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه जल्दी से बाज़ार गए, ग़ल्ला ख़रीदा, घर पहुंचाया, कुल्हाड़ी ख़रीदी, ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए, ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मेराज के दूल्हा, ताजदारे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने हाथ मुबारक से उस कुल्हाड़ी में लकड़ी का दस्ता डाला, अन्सारी

सहाबी رَضِیَ اللہُ عَنْہ को दिया और फ़रमाया : जंगल में जाओ, लकड़ियां काटो, बाज़ार में फ़रोख़्त करो ! 15 दिन तक मुझे नज़र नहीं आना। अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने कुल्हाड़ी ली और चले गए। 15 दिन बाद वापस आए तो उन के हाथ में 10 दिरहम थे। नबिय्ये रहमत صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم देख कर ख़ुश हुए और फ़रमाया : तुम सुवाल करो और वोह सुवाल कल क़ियामत के दिन तुम्हारे चेहरे पर दाग़ बने, तुम्हारा अपने हाथ से कमा कर खाना इस से बहुत बेहतर है।[1]

ख़ुद को बेकार महज़ या दूसरों का मोहताज समझ लेना, अपनी इस्तिअ़दाद (Potential) को समझ ही न पाना शायद सब से बड़ा साइकोलॉजिकल प्रॉब्लम है, येही वोह मस्अला है जो क़ौमों को ग़ुलाम बनने और ग़ुलाम रहने पर मजबूर कर देता है, उस वक़्त एक माहिर साइकोलॉजिस्ट की बड़ी कामयाबी होती है अगर वोह सामने वाले को येह बावर करवा दे कि तुम बेकार नहीं बल्कि क़ुदरत का शाहकार हो। उन अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللہُ عَنْہ की येही ह़ालत थी, उन्हें लगता था कि मेरी मआ़शी ह़ालत का येही इ़लाज है कि मैं माली मदद ह़ासिल करूं मगर प्यारे नबी, रसूले हाशिमी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें बताया कि मआ़शी मसाइल का ह़ल माली इम्दाद नहीं बल्कि मेह़नत है।

साह़िबे इ़ल्म नबी, रसूले हाशिमी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह नुस्ख़ा आज भी कारआमद है, अब भी एक मज़दूर से ले कर क़ौम तक जहां जहां मआ़शी मसाइल दरपेश हैं, उन का ह़ल माली इम्दाद नहीं बल्कि मेह़नत व क़नाअ़त है। हमारे हां लोग चाहते हैं : कहीं से छत फटे और ख़ज़ाना गिरना शुरूअ़ हो जाए मगर येह मह़ज़ ख़याल है, इस ख़्वाब की ताबीर निकली हो शायद अभी तक तारीख़ में ऐसा नहीं हुवा, इस आ़लमे अस्बाब में क़ुदरत ने येही निज़ाम रखा है कि मन जद्द वजद जिस ने कोशिश की उस ने कामयाबी पाई।

जो करते हैं मेहनत, मशक़्क़त ज़ियादा
ख़ुदा उन को देता है बरकत ज़ियादा

ख़ैर ! सीरते त़य्यिबा से किरदारी त़रीक़ए इ़लाज (Behavior Therapy) का दूसरा वाक़िआ़ देखिये ! बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत है, एक मरतबा एक आराबी ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : मेरी बीवी ने काले रंग के बच्चे को जन्म दिया है। प्यारे नबी, मक्की मदनी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम्हारे पास ऊंट हैं ? बोला : जी हां ! बहुत सारे हैं। फ़रमाया : किस रंग के हैं। बोला सुर्ख़ रंग के। आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर पूछा : उन ऊंटों में कोई ख़ाकी रंग का भी है ? बोला : जी हां ! कुछ ऊंट ख़ाकी रंग के भी हैं। फ़रमाया : बताओ सुर्ख़ रंग के ऊंटों की नस्ल में ख़ाकी रंग के ऊंट कैसे पैदा हो गए ? आराबी ने अ़र्ज़ किया : सुर्ख़ ऊंटों के बाप दादाओं में कोई ख़ाकी रंग का ऊंट रहा होगा, उस की रग ने उसे अपने रंग में खींच लिया होगा। येह सुन कर आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फिर येह भी तो मुम्किन है कि तुम्हारे बाप दादाओं में भी कोई काले रंग का रहा होगा, उस की रग ने तुम्हारे बच्चे को अपने रंग में खींच लिया होगा, इस लिये येह बच्चा उस का हम शक्ल हो गया है।[2]

देखिये ! प्यारे नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कितनी आसानी और महारत से फ़िक्री इस्तिह़साल की जड़ काट डाली, आराबी को उस की अ़क़्ल के मुताबिक़ आसान मिसाल के ज़रीए उसी की ज़बानी समझा दिया और अपने इस ह़कीमाना अन्दाज़ से न सिर्फ़ एक सुवाल का मुस्बत जवाब दिया बल्कि एक ख़ानदान को टूटने से भी बचा लिया।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सच है कि

ज़िन्दगियां ख़त्म हुईं और क़लम टूट गए
तेरे औसाफ़ का इक बाब भी पूरा न हुवा

प्यारे नबी, रसूले हाशिमी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक सीरत के एक पहलू पर येह चन्द बातें हैं, मौज़ूअ़ अभी तिशना है, सीरते मुस्त़फ़ा के एक साइकोलॉजीकल मुत़ालआ़ में अभी बहुत कुछ बाक़ी है मगर...!!

तेरे औसाफ़ बयां हो किस से, तेरी कौन करेगा बड़ाई
इस गर्दे सफ़र में गुम है, जिब्रीले अमीं की रसाई

(1) ابو داؤد، 2/168، حدیث:1641 (2) بخاری، 3/497، حدیث:5305۔

# मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

## 1 ग्यारहवीं शरीफ़ की निय्यत से अ़तिय्यात में रक़म मिलाना

**सुवाल :** क्या मदनी अ़तिय्यात बॉक्स में ग्यारहवीं शरीफ़ की निय्यत से रक़म डाल सकते हैं ?

**जवाब :** जी हां ! मदनी अ़तिय्यात में ग्यारहवीं शरीफ़ यानी ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ईसाले सवाब की निय्यत से रक़म डाल सकते हैं। अलबत्ता इस में ज़कात की रक़म नहीं डाल सकते।

## 2 ग़ौसे पाक अ़रबी थे या अ़जमी ?

**सुवाल :** ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अ़रबी थे या अ़जमी ?

**जवाब :** ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अ़जमी थे।

(دیکھئے: بہجۃ الاسرار، ص58)

जो अ़रबी न हो वोह अ़जमी कहलाता है जैसा कि हम अ़जमी हैं।

## 3 आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के एक शेर की वज़ाहत

**सुवाल :** आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इस शेर की वज़ाहत फ़रमा दीजिये ?

क़समें दे दे के खिलाता है पिलाता है तुझे
प्यारा अल्लाह तेरा चाहने वाला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 19)

**जवाब :** आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस शेर में ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के एक इरशाद की त़रफ़ इशारा किया है। ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : “मेरा रब फ़रमाता है कि ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! तुझे मेरी क़सम खा ले, तुझे मेरी क़सम पी ले।”

(دیکھئے: الحقائق فی الحدائق، ص167)

## 4 अगर मां बेटी का दिल दुखाए तो ?

**सुवाल :** अगर मां बेटी का बार बार दिल दुखाए तो बेटी को क्या करना चाहिये ?

**जवाब :** सब्र करना चाहिये और मां के ह़क़ में दुआ़ करनी चाहिये, इसी त़रह अपनी फ़रियाद मां के सामने नर्मी के साथ पेश करनी चाहिये मसलन फ़ुलां चीज़ या फ़ुलां काम से मुझे तक्लीफ़ होती है ऐसा न किया जाए। अगर बेटी जवाबी कारवाई करेगी तो फिर बात ख़राब हो सकती है। नर्मी, नर्मी और सिर्फ़ नर्मी से काम ले।

है फ़लाहो कामरानी नर्मी व आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

## 5 “हज़ारों साल जियो” किसी को येह दुआ़ देना कैसा ?

**सुवाल :** “जीते रहो इ़ज़्ज़त व आ़फ़िय्यत से हज़ारों साल” इस त़रह किसी को दुआ़ देना कैसा है ?

**जवाब :** जाइज़ है। हज़ारों साल से मुराद येह है कि आप की उ़म्र लम्बी हो।

### 6 "صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد" का मत़लब

**सुवाल :** صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد का क्या मत़लब है?

**जवाब :** صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد का मत़लब येह है कि (ह़ज़रते) मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर अल्लाह का दुरूद हो।[1]

### 7 नमाज़े फ़ज्र दिन की नमाज़ है या रात की?

**सुवाल :** फ़ज्र की नमाज़ का शुमार दिन की नमाज़ में होता है या रात की नमाज़ में?

**जवाब :** दिन की नमाज़ों में।

### 8 सदक़े का गोश्त फेंकना कैसा?

**सुवाल :** क्या सदक़े का गोश्त फेंक सकते हैं?

**जवाब :** सदक़े का गोश्त हो या क़ुरबानी का उसे फेंक देना येह माल ज़ाएअ़ करना है और येह गुनाह है। हां अगर गोश्त ख़राब हो गया है या सड़ गया है तो उस का खाना ह़राम है, उसे फेंकना ही होगा। बाज़ बाबाजी ऐसे होते हैं जो कहते हैं कि जब बकरा सदक़ा करो तो उस की सीरी फ़ुलां क़ब्रिस्तान में दफ़्ना देना उस से तुम्हारी फ़ुलां मुश्किल दूर हो जाएगी, सीरी दफ़्न करना येह भी ग़लत़ है, इस में भी माल ज़ाएअ़ करना पाया जा रहा है जो कि ह़राम। बाबाजियों को भी अल्लाह पाक से डरते हुए ऐसे उल्टे मशवरे देने से बचना ज़रूरी है।

### 9 رَبِّ اغْفِرْلِىْ का मत़लब

**सुवाल :** رَبِّ اغْفِرْلِىْ का मत़लब बता दीजिये।

**जवाब :** इस का मत़लब है : परवरदिगार! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा।

### 10 मुआ़फ़ न करने वाला ह़ौज़े कौसर पर न जा सकेगा!

**सुवाल :** अगर कोई अपने दोस्त से मुआ़फ़ी मांगे और वोह मुआ़फ़ न करे तो अब क्या करना चाहिये?

**जवाब :** मुआ़फ़ कर देना चाहिये कि ह़दीसे पाक में है : "जिस के पास उस का भाई मुआ़फ़ी लेने आए और वोह मुआ़फ़ न करे तो उसे ह़ौज़े कौसर पर आना न मिलेगा।"

(دیکھئے: معجم اوسط، 4/376، حدیث:6295)

### 11 शौहर तंगदस्त हो तो बीवी क्या करे?

**सुवाल :** अगर शौहर तंगदस्त हो तो बीवी को क्या करना चाहिये?

**जवाब :** शौहर की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करे और तसल्ली दे कि अल्लाह पाक सब बेहतर कर देगा आप फ़िक्र न कीजिये। ऐसे मौक़अ़ पर कोई फ़रमाइश वग़ैरा न करे, क्यूंकि फ़रमाइश भी आज़माइश में डाल देती है और बाज़ अवक़ात शौहर ह़राम की त़रफ़ रुख़ कर बैठता है। बीवी अगर शौहर को Freehand दे (रोक टोक न करे) गी तो शौहर को सुकून मिलेगा और वोह (Tension free) (ज़ेहनी दबाव से फ़ारिग़) भी रहेगा, अल्लाह पाक करेगा तो बरकतें भी आ ही जाएंगी। अपने नसीब में जो रोज़ी हो वोह मिल कर रहती है। अ़वामी मुह़ावरा है : "हर बहाने रोज़ी और हर बहाने मौत है।"

### 12 दौराने सफ़र क़ज़ा होने वाली नमाज़ें क़स्र पढ़ेंगे या पूरी?

**सुवाल :** दौराने सफ़र जो नमाज़ें क़ज़ा हुईं उन्हें बाद में क़स्र कर के पढ़ेंगे या पूरी?

**जवाब :** सफ़र में जो नमाज़ें क़ज़ा हुईं अगर उन्हें अपने वत़न जा कर पढ़ेंगे तो क़स्र ही क़ज़ा करेंगे और अगर किसी की नमाज़ें वत़न में क़ज़ा हुई थीं और अब वोह सफ़र पर निकला तो सफ़र में क़स्र नहीं बल्कि पूरी रक्अ़तें क़ज़ा करेगा यानी जो नमाज़ जैसी क़ज़ा हुई उसे वैसे ही पढ़े। (دیکھئے: فتاویٰ عالمگیری، 1/121)

---

(1) दुरूद की निस्बत जब अल्लाह पाक की त़रफ़ की जाए तो उस से मुराद रह़मत फ़रमाना है और जब उस की निस्बत फ़िरिश्तों की त़रफ़ की जाए तो उस से मुराद इस्तिग़फ़ार करना है और जब उस की निस्बत आ़म मोमिनीन की त़रफ़ की जाए तो उस से मुराद दुआ़ करना है।

(تفسیراتِ احمدیہ، پ22، الاحزاب، تحت الآیۃ:56، ص634)

# दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

## 1 वली नाबालिग़ को हिबा करे तो वोह क़ब्ज़े के बग़ैर मालिक हो जाता है

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि मेरे पास कुछ सोना मौजूद है, मैं ने अपने बच्चों की अम्मी से कहा था कि येह सोना हमारी फ़ुलां बच्ची के लिये है, लेकिन उस के क़ब्ज़े में नहीं दिया, अभी तक वोह मेरे पास ही है और वोह बच्ची भी अभी तक नाबालिग़ ही है। आप से पूछना येह है कि वोह सोना बच्ची की मिल्क हो गया या नहीं ? अब मेरी बड़ी बेटी की शादी है और मैं येह चाहता हूं कि येह सोना उस को दे दूं, तो क्या मैं ऐसा कर सकता हूं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में वोह सोना बच्ची की मिल्क हो गया और अब इस की मालिक वोह बच्ची ही है, लिहाज़ा अब न आप किसी को वोह सोना दे सकते हैं और न ही वोह नाबालिग़ बच्ची ख़ुद किसी को हिबा कर सकती है।

इस की तफ़्सील येह है कि आप ने जो अल्फ़ाज़ कहे कि **“येह सोना हमारी फ़ुलां बच्ची के लिये है”** येह हिबा के अल्फ़ाज़ हैं और जब वली (मसलन बाप वग़ैरा) नाबालिग़ बच्चे को कोई चीज़ हिबा करे और वोह चीज़ वली ही के क़ब्ज़े में हो, तो महज़ ईजाब करने से हिबा ताम हो जाता है और वोह चीज़ बच्चे की मिल्क हो जाती है, क्यूंकि इस सूरत में वली का क़ब्ज़ा नाबालिग़ की त़रफ़ से बत़ौरे नियाबत होता है, जो शरअ़न बच्चे का ही क़ब्ज़ा शुमार किया जाता है। और क़ानूने शरई़ है कि जब कोई चीज़ नाबालिग़ की मिल्क हो जाए तो उसे हिबा करने का इख़्तियार किसी को नहीं होता।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 2 क्या नाबालिग़ पर सज्दए तिलावत लाज़िम होता है ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि नाबालिग़ बच्चा अगर आयते सज्दा पढ़ या सुन ले, तो क्या उस पर सज्दए तिलावत लाज़िम होगा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़वानीने शरइय्या के मुताबिक़ आयते सज्दा पढ़ने या सुनने वाला जब बत़ौरे अदा या क़ज़ा नमाज़ के लाज़िम होने का अहल हो, तो उस पर सज्दए तिलावत वाजिब होता है और अगर वोह नमाज़ लाज़िम होने का अहल न हो तो उस पर सज्दए तिलावत वाजिब नहीं होता। उस के मुताबिक़ चूंकि नाबालिग़ बच्चा नमाज़ के लाज़िम होने का अहल नहीं होता, लिहाज़ा अगर येह आयते सज्दा पढ़ या सुन ले तो उस पर सज्दए तिलावत वाजिब नहीं होगा, अलबत्ता नाबालिग़ से अगर किसी आ़क़िल बालिग़ नमाज़ के अहल शख़्स ने आयते सज्दा सुनी, तो उस पर सज्दए तिलावत वाजिब होगा।

याद रहे कि नाबालिग़ों पर आयते सज्दा तिलावत करने या सुनने से अगर्चे सज्दए तिलावत वाजिब नहीं होता, लेकिन फिर भी उन्हें सज्दए तिलावत करने का ज़ेहन दिया जाए ताकि उन की आ़दत बने और येह बड़े हो कर सज्दए तिलावत किया करें।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 3 वत़ने अस्ली से मुस्तक़िल मुन्तक़िली पर नमाज़ का हुक्म

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि मैं अपने आबाई शहर अहमदआबाद से अपने अहलो इ़याल समेत इन्दौर शिफ़्ट हो गया हूं और अब यहीं मुस्तक़िल रहने की निय्यत कर ली है, कहीं और जाने की निय्यत नहीं, अलबत्ता अहमदआबाद में मेरी कुछ ज़मीनें

और घर है, इस लिये कभी कभार अह़मदआबाद आना जाना होगा। तो क्या अह़मदआबाद अब भी मेरा वत़ने अस्ली है या नहीं ? और जब मैं इन्दौर से अह़मदआबाद पन्दरह दिन से कम रहने के इरादे से जाऊंगा तो नमाज़ क़सर पढूंगा या पूरी पढूंगा ?

**नोट :** साइल ने वज़ाह़त की, कि अह़मदआबाद को छोड़ने के अ़ज़्म व इरादे से इन्दौर मुन्तक़िल हुवा हूं।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जब एक जगह आदमी का वत़ने अस्ली हो और वोह उसे तर्क करने के अ़ज़्म व इरादे से अपने अहले इ़याल समेत किसी दूसरी जगह मुन्तक़िल हो जाए और वहां मुस्तक़िल रहने की निय्यत कर ले, तो पहली जगह उस के लिये वत़ने अस्ली नहीं रहती अगर्चे वहां उस की ज़मीनें और घर मौजूद हो। पूछी गई सूरत में चूंकि आप भी अपने अहलो इ़याल समेत अह़मदआबाद को छोड़ने के अ़ज़्म व इरादे से मुस्तक़िल त़ौर पर इन्दौर मुन्तक़िल हो गए हैं, लिहाज़ा अह़मदआबाद में चाहे आप की ज़मीनें और घर मौजूद है तब भी वोह आप का वत़ने अस्ली न रहा और जब आप पन्दरह दिन से कम रहने के इरादे से अह़मदआबाद जाएंगे तो नमाज़े क़सर पढ़ेंगे।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 4 माले ह़राम सय्यिद को बत़ौरे सदक़ा देना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि सूद की रक़म के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म है कि या तो देने वाले को वापस करें या फ़क़ीर शरई पर सदक़ा करें। पूछना येह है कि क्या सय्यिद को बत़ौरे सदक़ा दिया जा सकता है जब कि वोह फ़क़ीर शरई हो ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

सूद की रक़म सय्यिद समेत तमाम बनू हाशिम (यानी ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़रते जाफ़र, ह़ज़रते अ़क़ील और ह़ज़रते अ़ब्बास व ह़ज़रते ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہم की औलाद, और उन के मवाली यानी आज़ाद कर्दा ग़ुलाम) को नहीं दे सकते, नाजाइज़ है।

अव्वलन इस लिये कि येह वाजिब सदक़ा है और फ़ुक़हाए किराम ने येह तफ़्सील फ़रमाई है कि बनू हाशिम को, ज़कात, उ़श्र, कफ़्फ़ारा वग़ैरा कोई भी वाजिब सदक़ा नहीं दिया जा सकता, सिर्फ़ नफ़्ली सदक़ा दे सकते हैं।

सानियन इस लिये कि ज़कात वग़ैरा सदक़ाते वाजिबा बनू हाशिम को न देने की जो इ़ल्लत बयान हुई, वोह इ़ल्लत सूद की रक़म देने में भी मुतह़क़्क़िक़ है। इस की तफ़्सील येह है कि ज़कात व सदक़ाते वाजिबा की अदाएगी से बन्दा अपने आप को पाकीज़ा व सुथरा करता है, जिस के सबब सदक़े के त़ौर पर दिया जाने वाला माल, गन्दा व मैला हो जाता है और बनू हाशिम की शान के लाइक़ नहीं होता कि उन को येह गन्दा व मैला माल दिया जाए। इस एतिबार से सूद की रक़म का जाइज़ा लें तो येह इ़ल्लत बदर्जए अतम उस में मौजूद होती है कि सूद लेने की वज्ह से बन्दा गुनाहगार होता है और सूद में लिया गया माल, सिर्फ़ मैला नहीं बल्कि माले ख़बीस कहलाता है। गुनाह से पाक होने के लिये बन्दे पर लाज़िम होता है कि तौबा के साथ उस ख़बीस माल से जान छुड़ाए और देने वाले को वापस करे या फ़ुक़रा पर सदक़ा करे, यूं दरह़क़ीक़त यहां भी जो सदक़ा किया जाता है, वोह अपनी पाकी, दफ़्ए ख़बीस और गुनाह मिटाने के लिये होता है तो जब सिर्फ़ मैला व गन्दा माल बनू हाशिम की शान के लाइक़ नहीं, तो उस से कई गुना ज़ाइद गन्दा व मैला व ख़बीस माल बदर्जए औला उन की शान के लाइक़ नहीं होगा, लिहाज़ा ज़कात व उ़श्र वग़ैरा सदक़ाते वाजिब की त़रह सूद की रक़म बनू हाशिम को नहीं दी जा सकती।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 5 अगर जुमुआ की सुन्नते क़ब्लिया छूट जाएं तो ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि जुमुए की सुन्नते क़ब्लिया अगर किसी वज्ह से रह जाएं तो क्या उन को जुमुआ के फ़र्ज़ों के बाद अदा कर सकते हैं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जुमुआ की सुन्नते क़ब्लिया अगर रह जाएं तो जुमुआ के फ़र्ज़ों के बाद वक़्त के अन्दर अन्दर उन सुन्नतों को अदा कर सकते हैं, और अफ़्ज़ल येह है कि जुमुआ की सुन्नते बादिया पढ़ने के बाद, उन सुन्नतों को अदा करे, अलबत्ता ज़ोहर का वक़्त ख़त्म होने के बाद उन सुन्नतों की क़ज़ा नहीं, नीज़ येह याद रहे कि ज़ोहर और जुमुआ की सुन्नते क़ब्लिया को फ़र्ज़ों से पहले पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है, बिला उ़ज़्र शरई उस को फ़र्ज़ों के बाद अदा करना बुरा है, और उस की आदत बना लेना गुनाह है, लिहाज़ा बिला वज्ह शरई उन सुन्नतों को फ़र्ज़ों के बाद तक मुअख़्ख़र न किया जाए, बल्कि फ़र्ज़ों से पहले ही अदा किया जाए।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

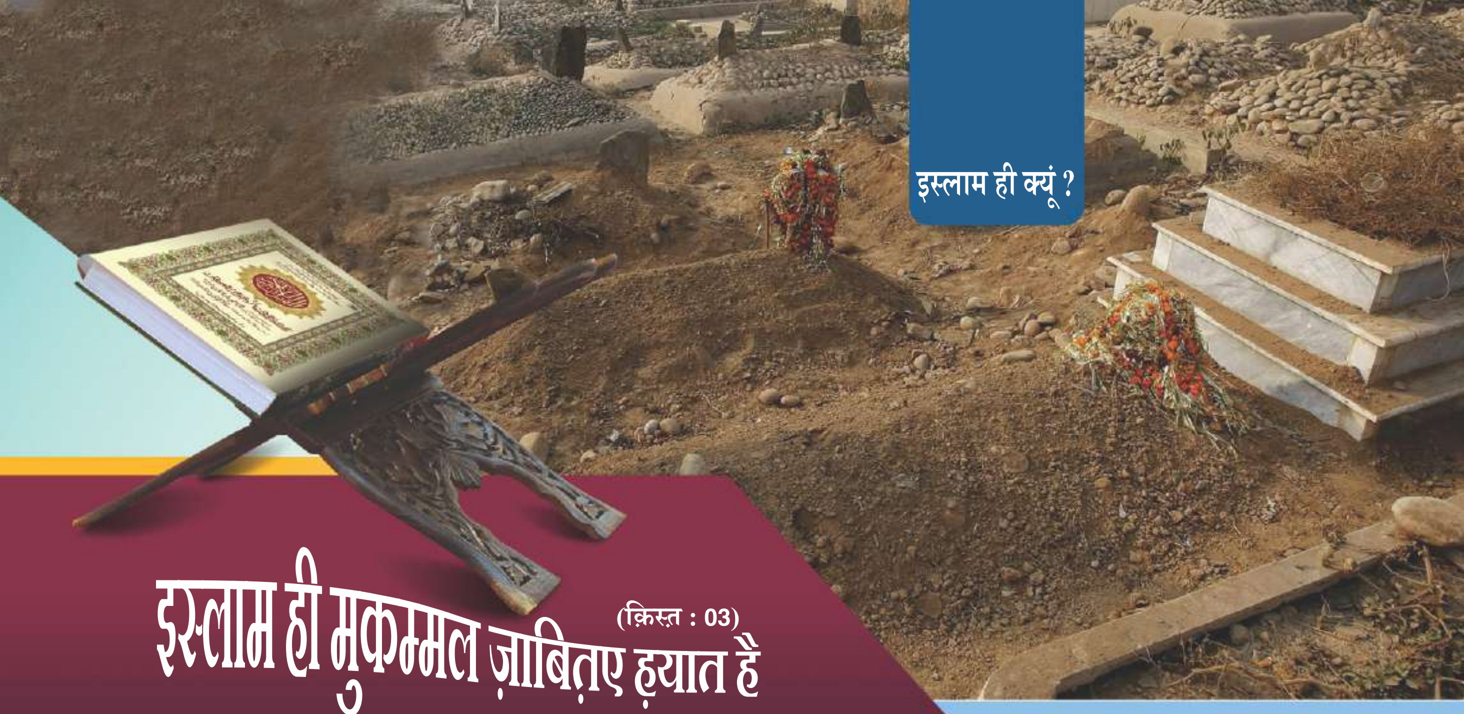

# इस्लाम ही मुकम्मल ज़ाबितए हयात है

(क़िस्त : 03)

येह एक मुसल्लमा और नाक़ाबिले इन्कार हक़ीक़त है कि "**इस्लाम ही मुकम्मल ज़ाबितए हयात**" है। इस पर पहली दो इक़्सात में इन्सानी ज़िन्दगी और बक़ाए हयात के लिये पाई जाने वाली ज़रूरिय्यात के तनाज़ुर में इस्लामी तालीमात का इज्माली बयान आप दलाइल व बराहीन से जान चुके। याद रहे कि इस्लामी तालीमात का तअल्लुक़ सिर्फ़ इन्सान की ज़िन्दगी तक ही महदूद नहीं है बल्कि जहां इस्लाम ज़िन्दगी के हर हर शोबे में रहनुमाई करता है वहीं सांसों की माला टूट जाने के बाद भी इस्लाम के मानने वाले बे यारो मददगार नहीं बल्कि अब इस जिस्मे बेजान के साथ क्या करना है ? इस्लाम उस बारे में भी तफ़्सीली रहनुमाई फ़रमाता है। चूंकि येह इस्लाम का मानने वाला था इस लिये इस्लाम इस हाल में भी इसे लावारिस नहीं रहने देता, अब भी उस की इज़्ज़त व हुर्मत का पूरा पूरा ख़याल रखा जाता है उसे आतिश परस्तों की तरह गिधों के हवाले नहीं किया जाता, न ही बाज़ ग़ैर मुस्लिमों की तरह जलाया जाता है बल्कि इज़्ज़तो तकरीम के साथ कन्धों पर सुवार कर के सूए क़ब्रिस्तान ले जाया जाता और इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ सिपुर्द किया जाता है। अलग़रज़ इस्लाम किसी भी ऐसे काम की हरगिज़ इजाज़त नहीं देता जो कि मुसलमान मय्यित की हुर्मतो वक़ार को तार तार कर दे।

## फ़ौतशुदा मुसलमान और इस्लाम

जब किसी मुसलमान पर मौत के आसार ज़ाहिर होने लगते हैं तो इस्लाम के अहकामात फ़ौरन उस की जानिब मुतवज्जेह होते हैं, इस कैफ़िय्यत में उस के अहले ख़ाना के लिये क्या हुक्म है ? उसे लिटाना किस तरह है ? इस के सामने अगर कुछ बोलना या पढ़ना है तो वोह कौन से कलिमात हैं ? इस्लाम उन सब की रहनुमाई फ़रमाता है जैसा कि हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से रिवायत है रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने मरने वालों को कलिमए तय्यिबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ की तल्क़ीन करो।[1] इस कलिमे को पढ़ने पढ़ाने की न सिर्फ़ तरग़ीब है बल्कि जिस का आख़िरी कलाम येही कलिमए तय्यिबा हो उस के लिये तो जन्नत की ख़ुशख़बरी भी दी गई है जैसा कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है कि जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ हो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।[2] इन्तिक़ाल होते ही हाथ पांव सीधे करने का हुक्म है, आंखें खुली हों तो बन्द कर दी जाएं, आंखें खुली रहने से कुछ फ़ाएदा तो नहीं अलबत्ता शक्ल डरावनी हो जाती है इस लिये आंखें फ़ौरन बन्द कर दें बल्कि अगर मुंह खुला रह गया हो तो उसे भी बन्द कर दिया जाए और जबड़े बान्ध दिये जाएं।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللہُ عَنْہ के इन्तिक़ाल के बाद तशरीफ़ लाए उन की आंखें बन्द कीं और फ़रमाया : जब रूह क़ब्ज़ कर ली जाती है तो नज़र उस के पीछे जाती है । उन के घर के लोगों ने आहो बुका की तो हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने मुतअ़ल्लिक़ ख़ैर ही की दुआ़ करना क्यूंकि फ़रिश्ते तुम्हारे कहे पर आमीन कहते हैं।[3] फ़ौत हो जाने वाले मोमिन को इस त़ौर पर भी अहमिय्यत दी जाती है कि उस की तदफ़ीन में देर न की जाए ताकि बदन में वाक़ेअ़ होने वाली तब्दीली से लोग उस के बारे में अंगुश्त नुमाई न करें । इस लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

لَا يَنْبَغِي لِجِيفَةِ مُسْلِمٍ اَنْ تُحْبَسَ بَيْنَ ظَهْرَانَيْ اَهْلِهِ

यानी किसी मुसलमान की मय्यित को उस के अहलो इ़याल में ज़ियादा देर रोक कर न रखा जाए।[4] इस्लाम तो अपने मुसलमान भाई के लिये क़ब्र खोदने का भी अज्रो सवाब बताता है ताकि कोई उसे बोझ न समजे बल्कि क़ब्र खोदने को सआ़दत और अपने लिये जन्नती मह़ल की ज़मानत जान कर येह काम ख़ुशदिली से सरअन्जाम दे जैसा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ حَفَرَ قَبْرًا بَنَى اللهُ لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ यानी जिस ने (किसी मुसलमान के लिये) क़ब्र खोदी अल्लाह करीम उस के लिये जन्नत में घर बनाएगा।[5] इस्लाम न सिर्फ़ क़ब्र खोदने बल्कि ग़ुस्ल व कफ़न का सवाब बता कर तरग़ीब दिला कर उस नेक काम में शिर्कत की रग़बत दिलाता है जैसा कि ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है : जिस ने किसी मय्यित को ग़ुस्ल दिया वोह अपने गुनाहों से ऐसा पाको साफ़ हो जाएगा जैसा अपनी पैदाइश के दिन था।[6] एक और ह़दीसे पाक में फ़रमाया : जिस ने मय्यित को ग़ुस्ल दिया और उस की पर्दापोशी की तो अल्लाह करीम 40 बार उस के गुनाह बख़्शेगा।[7] एक ह़दीस में है : जिस ने मय्यित को कफ़न पहनाया अल्लाह पाक उसे जन्नत के सुन्दुस व इस्तिबरक़ (बारीक और मोटे रेशम) का लिबास पहनाएगा।[8] जिस आदमी ने किसी मुसलमान मय्यित को ग़ुस्ल दिया और नापसन्दीदा चीज़ को देखा तो उसे लोगों से छुपाया ऐसे आदमी के बारे में ह़दीसे पाक में है : जिस ने किसी मय्यित को ग़ुस्ल दिया और उस के ऐ़ब को छुपाया अल्लाह करीम ऐसे शख़्स के चालीस कबीरा गुनाह बख़्स देता है।[9] येह तो तदफ़ीन तक के बारे में इस्लाम की इज्माली रहनुमाई का बयान है, अब इस फ़ौत हो जाने वाले मुसलमान के पीछे बच जाने वाले मालो मताअ़, घर बार और कारोबार का क्या होगा ? कौन किस चीज़ का ह़क़दार होगा ? किस को कितना और क्या क्या मिलेगा ? फ़ौत होने वाले मुसलमान की बेवा का गुज़र बसर कैसे होगा ? इ़द्दत के दौरानिया के अख़राजात कहां से दिये जाएंगे ? विरासत से उस बेवा को कितना मिलेगा ? औलाद होने और न होने हर दो सूरत के अह़काम क्या हैं ? मय्यित के बेटों को कितना मिलेगा ? बेटी कितने ह़िस्से की ह़क़दार बनेगी ? सिर्फ़ एक बेटी हो तो क्या सूरत बनेगी एक से ज़ाइद हों तो विरासत कैसे तक़्सीम होगी ? कौन मह़रूम होगा कौन किस से मिल कर अ़स्बा बनेगा ? कौन किस के लिये ह़ाजिब क़रार पाएगा ? मय्यित के माल में से पहले कौन से अह़कामात को पूरा किया जाएगा ? उस के ग़ुस्ल व कफ़न और तदफ़ीन के अह़काम क्या होंगे ? उन कामों की तक्मील में जो रक़म ख़र्च होगी वोह कहां से अदा की जाएगी ? फ़ौत होने वाला मक़रूज़ था तो उसका कर्ज़ कहां से अदा किया जाएगा ? अलग़रज़ कौन सी ऐसी सूरत है कि जिस के बारे में इस्लाम रहनुमाई नहीं करता । येह इज्माली और मुख़्तसर सूरतेह़ाल येह कहने पर मजबूर करती है कि वाक़ेई़ **"इस्लाम ही मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है।"** येह तो कुछ ज़ाहिरी मुआ़मलात हैं इस के इ़लावा ख़ुद फ़ौत होने वाले की उख़रवी ज़िन्दगी के बारे में भी इस्लाम बड़ी तफ़्सील से रहनुमाई फ़रमाता है, आइन्दा इक़्सात़ में इस पर मुफ़स्सल कलाम किया जाएगा।

---

(1) مسلم، ص356، حدیث: 2123 (2) ابوداؤد، 3/255، حدیث: 3116
(3) مسلم، ص357، حدیث: 2130 (4) ابوداؤد، 3/268، حدیث: 3159
(5) معجم اوسط، 6/429، حدیث: 9292 (6) معجم اوسط، 6/429، حدیث: 9292
(7) مستدرک للحاکم، 1/677، حدیث: 1347 (8) مستدرک للحاکم، 1/677، حدیث: 1347 (9) معجم کبیر، 1/315، حدیث: 929۔

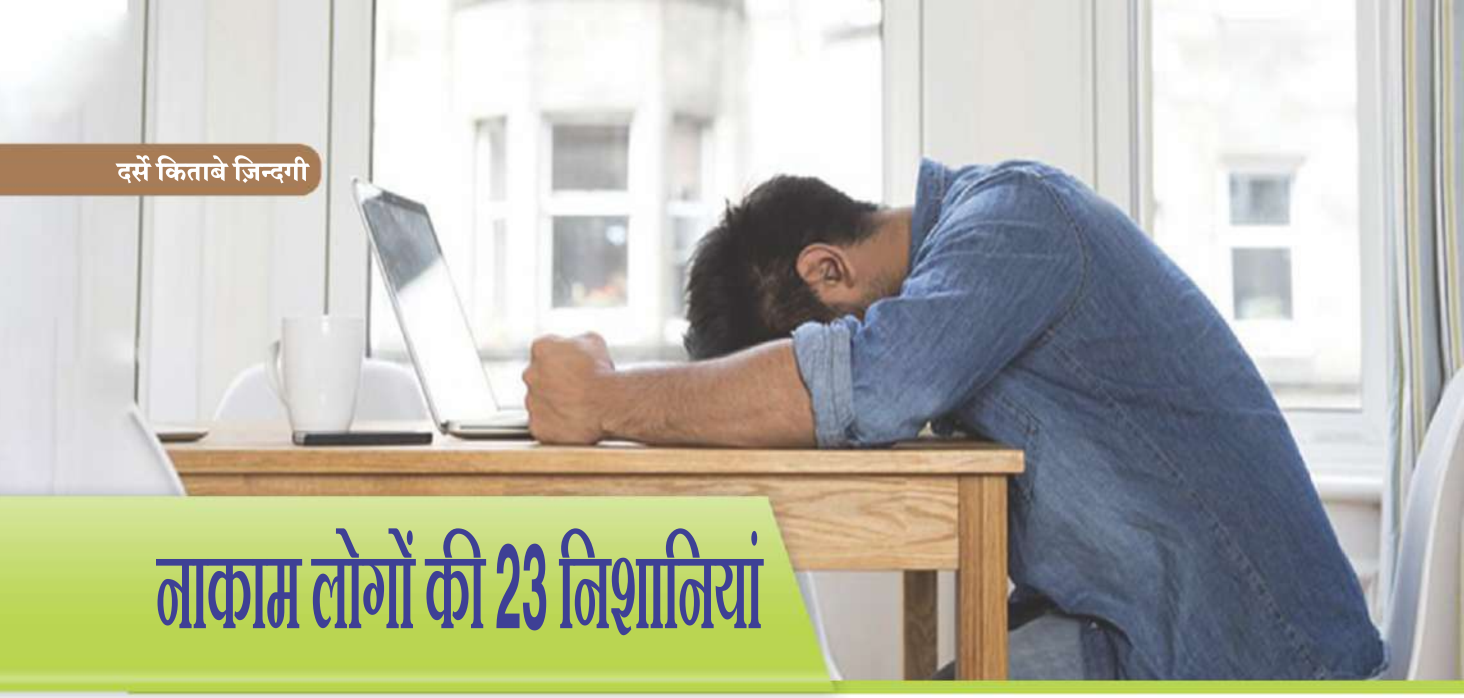

# नाकाम लोगों की 23 निशानियां

कामयाबी और नाकामी हमारी ज़िन्दगी का हिस्सा है जिस में तक़्दीर और तदबीर दोनों कारफ़रमा होते हैं। कुछ लोगों को मिलने वाली कामियाबियां उन की नाकामियों से बहुत ज़ियादा होती हैं क्यूंकि वोह ऐसी आ़दात और रवय्ये इख़्तियार करते हैं जिन्हें कामयाबी की अ़लामात शुमार किया जाता है जब कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें पै दरपै नाकामियों का सामना होता है क्यूंकि उन की आ़दतें और रवय्ये ऐसे होते हैं जिन्हें नाकाम लोगों की निशानियां क़रार दिया जा सकता है। येह निशानियां रंग, नस्ल, उ़म्र, जिन्स और ह़ालात के एतिबार से थोड़ी बहुत मुख़्तलिफ़ हो सकती हैं। बहरह़ाल उन में से 23 मुन्तख़ब निशानियां इस तह़रीर का ह़िस्सा हैं जिन से बच कर नाकामियों से पीछा छुड़ाया जा सकता है।

**1 वक़्त ज़ाएअ़ करना** वक़्त की अनमोल दौलत को बेकार मश्ग़लों में ख़र्च करना जैसे मोबाइल का बेजा इस्तिमाल, सैरो तफ़रीह़ में मश्ग़ूलिय्यत, घंटों टीवी के आगे बैठे रहना, नाकाम लोगों में मुश्तरक होता है।

**2 सुस्ती और टाल मटोल** कामों की तक्मील में सुस्ती करने वाले और टाल मटोल से काम लेने वाले लोग कम ही कामयाब होते हैं।

**3 तन्क़ीद बरदाश्त न करना** जो काम करता है उस पर किसी न किसी त़रफ़ से तन्क़ीद भी होती है। अब तन्क़ीद को बरदाश्त कर के मुम्किना सूरत में अपनी सम्त दुरुस्त करना कामयाब लोगों की अ़लामत है जब कि नाकाम लोग तन्क़ीद को बरदाश्त कर के अपनी इस्लाह़ नहीं करते।

**4 मन्फ़ी सोचें** मुसल्सल नाकामियों का शिकार शख़्स मन्फ़ी सोचों में मुब्तला हो सकता है मसलन फ़ुलां शख़्स मुझ से बुग़्ज़ो ह़सद रखता है, मेरी कामयाबी की राह में रोड़े अटकाता है। येह न होता तो आज मैं नाकाम नहीं कामयाब फ़र्द होता। यूं बद गुमानियों में मुब्तला हो कर नाकामी के ह़क़ीक़ी अस्बाब तक नहीं पहुंच पाता और कामयाबी व तरक़्क़ी से मज़ीद दूर हो जाता है।

**5 ख़ुद एतिमादी की कमी** अपनी सलाह़िय्यतों पर एतिमाद न होना भी नाकामी की एक वज्ह होती है। "मुझ से नहीं होगा", "मैं नहीं कर सकता" ख़ुद एतिमादी में कमी की अ़लामत है।

**6 मुसल्सल सीखने से गुरेज़** इन्सान किसी काम में कितना ही माहिर क्यूं न हो जाए, मज़ीद सीखने की गुन्जाइश बाक़ी रहती है लेकिन नाकाम अफ़राद इस ख़ुश फ़हमी में रहते हैं कि हमें सब आता है और मुसल्सल सीखने पर तय्यार नहीं होते और अपनी सत़्ह़ी सलाह़िय्यतों की वज्ह से नाकामी के सदमे का शिकार होते रहते हैं।

**7 नाकामी का ज़िम्मेदार दूसरों को क़रार देना** नाकामी की ज़िम्मेदारी ख़ुद उठाने के बजाए हालात या दूसरे लोगों को इल्ज़ाम देना भी नाकाम लोगों की निशानी है।

**8 जल्दबाज़ी** नाकाम अफ़राद को कामयाब होने की बड़ी जल्दी होती है, इस जल्दबाज़ी में वोह अपना काम ठीक से नहीं कर पाते, यूं जल्दबाज़ी उन की कामयाबी के रास्ते का पत्थर बन जाती है।

**9 फ़ीडबैक को ख़ातिर में न लाना** दूसरे आप के काम को किस तरह देखते हैं, येह फ़ीडबैक आप के काम को बेहतर बनाने में मदद देगा लेकिन नाकाम लोग येह नुक्ता समझने में नाकाम रहते हैं।

**10 डिसिप्लिन की कमी** किसी भी शोबे में बेहतर कारकर्दगी के लिये डिसिप्लिन (नज़्मो ज़ब्त) होना बहुत ज़रूरी है। नाकाम लोग बेतरतीब और बिखरी हुई ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

**11 शॉर्टकट की तलाश में रहना** लोग अपनी नाकामियों के तसल्सुल से घबराकर कामयाब होने के लिये तवीलुल मुद्दत कामों के लिये शॉर्टकट की तमन्ना करने लगते हैं।

**12 ग़लतियों से न सीखना** ग़लती किस से नहीं होती ! लेकिन समझदार लोग अपनी ग़लतियों से सीखते हैं और उसे दोहराते नहीं जब कि नाकाम लोग उस का उलट करते हैं जिस की वज्ह से कामयाबी की मन्ज़िल से दूर हो जाते हैं।

**13 नाकामी का ख़ौफ़** मुसल्सल नाकामियों से घबराकर अपने ज़ेहन पर नाकामी का ख़ौफ़ सुवार कर लेना नाकाम लोगों की मज़ीद नाकामी का ज़रीआ बनता है।

**14 जल्द हिम्मत हार जाना** हिम्मत और जवांमर्दी से हारी हुई बाज़ी जीती जा सकती है लेकिन नाकाम लोग जल्द हिम्मत हार जाते हैं और नाकामियों की दलदल में धंसते चले जाते हैं।

**15 जदीद ज़राएअ़ से नावाक़िफ़िय्यत** एक नाकाम शख़्स रिवायती तौर तरीक़ों का पाबन्द बना रहता है और अपने कामों के लिये आसान और तेज़ तरीन डिजीटल ज़राएअ़ को इस्तिमाल में नहीं लाता।

**16 ज़रूरत से ज़ियादा ख़ुद एतिमादी** अपनी सलाहिय्यतों पर एतिमाद कामयाबी के लिये ज़रूरी है लेकिन ज़रूरत से ज़ियादा ख़ुद एतिमादी किसी भी अम्र में नाकामी का सबब बन सकती है।

**17 मुस्तक़िल मिज़ाजी का फ़ुक़्दान** मुस्तक़िल मिज़ाजी किसी भी मुआ़मले में कामयाबी की अहम सीढ़ी है। एक नाकाम शख़्स के अन्दर मुस्तक़िल मिज़ाजी का सख़्त फ़ुक़्दान पाया जाता है। महज़ वक़्ती और छोटी छोटी नाकामियों से मायूस हो कर वोह अपनी हिक्मते अ़मली और फ़ैसले बदलता रहता है और कभी एक मुस्तक़िल सोच पर क़ाइम नहीं रहता।

**18 ज़रूरत से ज़ियादा पुर उम्मीदी** हालात व वाक़िआ़त से हमेशा बेहतरी की उम्मीद रखना अच्छी बात है मगर एक नाकाम शख़्स के मन्सूबों की बुन्याद हक़ाइक़ के इदराक के बजाए पुर उम्मीदी व ख़ुश फ़हमी पर रखी होती है।

**19 तरजीहात का तअ़य्युन** याद रखिये कुछ काम अरजन्ट होते हैं जिन्हें पहले करना ज़रूरी होता है जब कि कुछ काम बाद में भी कर लिये जाएं तो फ़र्क़ नहीं पड़ता। एक कामयाब शख़्स उन दोनों में फ़र्क़ करना बख़ूबी जानता है। जब कि एक नाकाम शख़्स अपनी तरजीहात का तअ़य्युन नहीं कर पाता कि कौनसा मुआ़मला फ़ौरी तवज्जोह चाहता है।

**20 बद अख़्लाक़ी** अगर आप दूसरों के साथ नर्मी और हुस्ने सुलूक से पेश नहीं आएंगे, तो लोग आप से कतराने लगेंगे। येह रवय्या न सिर्फ़ आप की ज़ाती ज़िन्दगी को मुतअस्सिर करता है बल्कि आप की पेशावराना ज़िन्दगी में भी मसाइल पैदा करता है।

**21 वक़्ती नाकामी से घबरा जाना** नाकाम लोग वक़्ती नाकामी से घबरा कर जल्द हार मान लेते हैं हालांकि कामयाबी का बीज मुसल्सल महनत के बाद ही समर बार होता है।

**22 नातजरिबा कारी** बाज़ काम वसीअ़ तजरिबा मांगते हैं, लेकिन नाकाम लोग अपनी नातजरिबा कारी के बा वुजूद ऐसे कामों में भी हात डाल देते हैं और नाकामी के सदमे से दोचार होते हैं।

**23 ख़यालात की दुन्या में रहना** महज़ किसी काम के सोचते रहने से कामयाबी मिलना मुश्किल है, लेकिन नाकाम लोग ख़यालात की दुन्या में मगन रहते हैं, अ़मली कोशिश नहीं करते।

# शराइते नमाज़ की ह़िक्मतें

नमाज़ की छे शर्तें हैं : 1 त़हारत 2 सत्रे औ़रत 3 इस्तिक़्बाले क़िब्ला 4 वक़्त 5 निय्यत 6 तक्बीरे तह़रीमा।

इन छे बातों पर ग़ौर किया जाए कि नमाज़ से पहले इन छे बातों का पाया जाना क्यूं लाज़िम और ज़रूरी क़रार दिया गया है तो इस से इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत पर ईमान मज़ीद पुख़्ता होता है। इन छे शराइत़ में क्या ह़िक्मतें पोशीदा हैं, ज़ैल में मुख़्तसर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

**1 त़हारत** नमाज़ बारगाहे इलाही में ह़ाज़िरी का नाम है और येह आ़म दस्तूर है कि किसी भी मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्सिय्यत से मिलने से पहले अपने ज़ाहिरी लिबास पर ख़ास तवज्जोह दी जाती है, फिर येह देखा जाता है कि येह मुलाक़ात कहां होगी। अल्लाह पाक ने अपने मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर ख़ास करम नवाज़ी फ़रमाते हुए अगर्चे अपनी पूरी ज़मीन को ही मुलाक़ात की जगह क़रार दे दिया है कि जहां चाहे उस की बारगाह में ह़ाज़िरी दे ली जाए। येही वज्ह है कि रब को याद करने के लिये कोई वक़्त ख़ास है न कोई जगह मुतअ़य्यन है, इसी त़रह़ यादे इलाही के लिये किसी ख़ास ह़ालत का होना ज़रूरी है न किसी ख़ास कैफ़िय्यत का होना ज़रूरी है। अलबत्ता ! नमाज़ चूंकि बारगाहे इलाही में ख़ुसूसी ह़ाज़िरी का नाम है, लिहाज़ा उस के लिये ख़ास एहतिमाम की ताकीद की गई और इस के अवक़ात की तायीन के साथ साथ इस बात को भी शर्त़ ठहराया गया कि बारगाहे इलाही में ह़ाज़िरी से पहले येह ज़रूर देख लिया जाए कि ह़ाज़िरी की जगह यानी जहां नमाज़ पढ़नी है वोह नजासत व पलीदी वग़ैरा से पाको साफ़ हो और लिबास भी उस मुलाक़ात के शायाने शान हो। नीज़ ज़ाहिरी बदन भी पाको साफ़ हो यानी बदन की पाकी के ह़वाले से वुज़ू, ग़ुस्ल या तयम्मुम वग़ैरा में से जिस चीज़ की ह़ाजत हो उस का भी एहतिमाम करना ज़रूरी है।

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की बयान कर्दा ह़िक्मत का ख़ुलासा है कि नमाज़ चूंकि दिल को पाक करती है इस लिये ज़ाहिरी पाकी भी ज़रूरी है, इस ज़ाहिरी पाकी के दुन्यावी फ़वाइद भी हैं जैसा कि दिक़ की बीमारी वाले का कपड़ा मकान बदन साफ़ रखवाते हैं ताकि तन्दुरुस्ती ह़ासिल हो।

फिर वुज़ू में चार आज़ा को ही धोने की ह़िक्मत बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि ऐसा दो वज्ह से है :

एक येह कि वुज़ू के पानी से ख़त़ाएं और गुनाह झड़ते हैं। ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से पहली जो लग़्ज़िश सादिर हुई यानी गन्दुम खाना इस में उन ही चार आज़ा ने काम किया था कि दिमाग़ में खाने का ख़याल आया पांव उधर चले, हाथ से गन्दुम को पकड़ा और मुंह शरीफ़ ने खाया। लिहाज़ा हुक्म हुवा कि नमाज़ के लिये उन ही आज़ा पर पानी पहुंचाओ। दुवुम येह कि अब भी अक्सर गुनाह में उन ही आज़ा का ज़ियादा ह़िस्सा होता है। हाथ पांव, आंख, नाक कान और दिलो दिमाग़ से ही गुनाह किये जाते हैं। दिल

और दिमाग़ का तअ़ल्लुक़ बादशाह और वज़ीर का सा है कि दिल पर रंज आया तो फ़ौरन दिमाग़ से पानी आंसू की शक्ल में टपका और जहां दिमाग़ में बुरा ख़याल पैदा हुवा दिल मग़मूम हो गया। लिहाज़ा दिमाग़ पर मस्ह़ कर दिया गया। दिल की जगह न धोई गई कि दिमाग़ के ज़रीए दिल पाक होगा।[(1)]

**2 सत्रे औ़रत** फ़ुक़हा के नज़दीक अगर्चे इस से मख़्सूस जिस्मानी आज़ा को छुपाना मुराद है, मगर सूफ़ियाए किराम के नज़दीक इस बात को शर्त ठहराने में येह ह़िक्मत कारफ़रमा है कि बन्दा अपने बात़िनी अमराज़ और गुनाहों को छुपा कर बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर हो, अगर्चे ऐसा करना उस के लिये मुम्किन नहीं कि अल्लाह पाक तो हर शै को बख़ूबी जानने वाला है, लिहाज़ा नदामत व ख़ौफ़ से अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हो कर जब बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होगा तो उम्मीद है रब्बे करीम भी उस के गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाएगा।[(2)]

**3 इस्तिक़्बाले क़िब्ला** शाह वलियुल्लाह मुह़द्दिस देहल्वी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه अपनी किताब हुज्जतुल्ल बालिग़ा में फ़रमाते हैं नमाज़ के लिये इस्तिक़्बाले क़िब्ला को शर्त ठहराने में ह़िक्मत येह है कि अल्लाह पाक के शआइर और उस के उन घरों की ताज़ीम वाजिब है जिन को उस ने अपनी त़रफ़ मन्सूब फ़रमाया है, नमाज़ चूंकि तमाम अरकाने इस्लाम में अफ़्ज़ल है और उसे शआइर दीन की ह़ैसिय्यत ह़ासिल है, लिहाज़ा इस ह़ालत में किसी ऐसी जगह की त़रफ़ मुंह फेरना और उस को मरकज़ तवज्जोह क़रार देना कि ख़ास त़ौर पर उस जगह को अल्लाह पाक से निस्बत ह़ासिल है, इत़मीनाने क़ल्ब का ज़बरदस्त ज़रीआ़ है, इस से एक मक़्सूद येह भी ह़ासिल होता है कि बन्दे में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ की कैफ़िय्यत पैदा होती है, क्यूंकि उस की सूरत ऐसी है जैसे बादशाह के रूबरू खड़ा हो कर कोई अपनी अ़र्ज़ मारूज़ कर रहा हो। इस लिये नमाज़ में क़िब्ला रुख़ खड़ा होने को शर्त ठहराया गया।[(3)]

**4 वक़्त** हर नमाज़ का एक ख़ास वक़्त ही क्यूं मुतअ़य्यन किया गया, उस की ह़िक्मत बयान करते हुए मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُاللهِعَلَيْه फ़रमाते हैं : मोमिन की हर ह़ालत रब के ज़िक्र से शुरूअ़ होनी चाहिये, जिन की इब्तिदा अच्छी हो, उम्मीद है कि इन्तिहा भी अच्छी होगी। इसी लिये बच्चे के पैदा होते ही कान में अज़ान कहते हैं कि येह ज़िन्दगी की इब्तिदा है। चूंकि 24 घन्टे में इन्सान के पांच ह़ाल होते हैं। सुब्ह़ के वक़्त दिन की इब्तिदा है गोया नई ज़िन्दगी मिली है। पहले नमाज़ पढ़े, ज़ोहर के वक़्त खाने और आराम से फ़राग़त पाई। दिन के दूसरे हिस्से की इब्तिदा हुई, नमाज़ पढ़े, असर के वक़्त मुलाज़िमीन कारोबार से फ़ारिग़ हो कर सैरो तफ़रीह़ को चले। तिजारत के फ़रोग़ का वक़्त आया नमाज़ पढ़ ले। सो वक़्त जागने की इन्तिहा है। नींद जो एक त़रह़ की मौत है शुरूअ़ हो रही है नमाज़ पढ़ कर सोए, शायद येह आख़िरी नींद हो कि उस के बाद क़ियामत ही को जागे।[(4)]

**5 निय्यत** आमाल का दारोमदार चूंकि निय्यत पर होता है, लिहाज़ा नमाज़ में निय्यत का ख़ालिस होना शर्त़ है ताकि नमाज़ अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये पढ़ी जाए, अगर मक़्सूद कुछ और होगा तो बन्दे को वोही मिलेगा जिस की उस ने निय्यत की होगी। बहारे शरीअ़त में है : इ़बादत कोई भी हो उस में इख़्लास निहायत ज़रूरी चीज़ है यानी मह़ज़ रिज़ाए इलाही के लिये अ़मल करना ज़रूर है, दिखावे के त़ौर पर अ़मल करना बिलइज्माअ़ ह़राम है। रिया के साथ नमाज़ पढ़ी तो अगर्चे नमाज़ सह़ीह़ होगी मगर चूंकि इख़्लास नहीं है सवाब नहीं।[(5)]

**6 तक्बीरे तह़रीमा** जब बन्दा अल्लाह पाक की अ़ज़मत व बुलन्दी और उस की किब्रियाई का एतिराफ़ करते हुए तक्बीरे तह़रीमा कहता है तो गोया वोह आ़लमे दुनिया से निकल कर आ़लमे मल्कूत में दाख़िल हो जाता है और उस पर अल्लाह पाक के इ़लावा किसी और की त़रफ़ मुतवज्जेह होना ह़राम हो जाता है।[(6)]

---

(1)رسائل نعیمیہ، اسرار الاحکام، ص286 (2)جواہر البیان فی اسرار الارکان، ص36 مفہوماً (3)حجۃ اللہ البالغہ، الجزء الثانی، ص2 مفہوماً (4)رسائل نعیمیہ، اسرار الاحکام، ص283 (5)بہار شریعت، 3/636 (6)اسرار ارکان اسلام، ص35۔

# जन्नती बालाख़ाने दिलाने वाली नेकियां

ऐ आशिक़ाने रसूल ! जन्नत एक आलीशान जगह है जिसे अल्लाह पाक ने ईमान वालों के लिये बनाया है, उस में वोह नेमतें रखी हैं जिन्हें न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना, न किसी शख़्स के दिल पर उन का ख़याल गुज़रा। जो कोई मिसाल उस की तारीफ़ में दी जाए महज़ समझाने के लिये है, वरना दुनिया की आला से आला चीज़ को जन्नत की किसी चीज़ के साथ कोई मुनासबत नहीं है। आइये ! जन्नती बालाख़ाने (यानी जन्नत के बुलन्द महल्लात और ऊंचे ऊंचे मकानात) हासिल करने वाली नेकियों के बारे में चन्द रिवायात सुनिये और अमल की कोशिश कीजिये।

## 1 रसूलों की तस्दीक़ करने वाले

अल्लाह पाक के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अहले जन्नत बालाख़ाने (यानी ऊंचे ऊंचे मकानात) वालों को इस तरह देखेंगे जिस तरह तुम आस्मान के मशरिक़ी या मग़रिबी किनारे में दूर से चमकते हुए तारे को देखते हों क्युंकि बाज़ के दरजात बाज़ से ज़ाइद हैं। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या वोह अम्बियाए किराम के दरजात होंगे जिन तक कोई और नहीं पहुंच सकता ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्यूं नहीं उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! येह वोह लोग होंगे जो अल्लाह पाक पर ईमान लाए और रसूलों की तस्दीक़ की।(1)

## 2 अल्लाह के लिये महब्बत करने, मुलाक़ात करने और मिल कर बैठने वाले

ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बिलाशुबा जन्नत में याक़ूत के सुतून हैं जिन पर ज़बरजद के बालाख़ाने (यानी बुलन्द महल्लात) हैं उन के दरवाज़े ख़ुले हुए हैं वोह ऐसे चमकते हैं जैसे बहुत रौशन सितारा चमकता है, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उन बालाख़ानों में कौन (ख़ुश नसीब) रहेंगे ? इरशाद फ़रमाया : जो अल्लाह पाक ही के वासिते आपस में महब्बत रखते हैं और जो अल्लाह पाक ही के वासिते आपस में बैठते हैं और जो अल्लाह पाक ही के वासिते आपस में मुलाक़ात करते हैं।(2)

## 3 अच्छी गुफ़्तगू करने, खाना खिलाने और हमेशा रोज़े रखने वाले

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर

बाहर से देखा जाता है। एक आराबी (यानी देहात के रहने वाले ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : या नबियल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह किस के लिये हैं ? आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह उसके लिये हैं कि जो नर्म गुफ़्तगू करे, खाना खिलाए, मुतवातिर (यानी लगातार) रोज़े रखें और रात को उठ कर अल्लाह पाक के लिये नमाज़ पढ़े जब लोग सोए हुए हों।[3]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ "मुतवातिर (यानी लगातार) रोज़े रखने" की शर्ह़ करते हुए फ़रमाते हैं : यानी हमेशा रोज़े रखें सिवा उन पांच दिनों के जिन में रोज़ा ह़राम है यानी शव्वाल की यकुम और ज़िल ह़िज्जा की दसवीं ता तेरहवीं येह ह़दीस उन लोगों की दलील है जो हमेशा रोज़े रखते हैं, बाज़ ने फ़रमाया कि उस के माना हैं हर महीने में मुसल्सल तीन रोज़े रखे।[4]

## 4 सलाम को आ़म करने और हमेशा रोज़े रखने वाले

एक त़वील रिवायत में यूं बयान किया गया है कि ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : एक दिन प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें जन्नत के बालाख़ानों (यानी ऊंचे ऊंचे मह़ल्लात) के बारे में न बताऊं ? हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारे मां बाप आप पर क़ुरबान ! ज़रूर इरशाद फ़रमाइये ! इरशाद फ़रमाया : जन्नत में जवाहिर की मुख़्तलिफ़ अक़्साम के बालाख़ाने हैं जिन का बैरूनी मन्ज़र अन्दर से और अन्दरूनी मन्ज़र बाहर से दिखाई देता है। उन में ऐसी नेमतें, सवाब और इ़ज़्ज़तो करामत है जिनके मुतअ़ल्लिक़ न तो किसी कान ने सुना और न ही किसी आंख ने उन्हें देखा। हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारे मां बाप आप पर क़ुरबान ! येह किस के लिये हैं ? इरशाद फ़रमाया : उस ख़ुशबख़्त के लिये जो सलाम को आ़म करे, हमेशा रोज़े रखे, लोगों को खाना खिलाए और नमाज़ पढ़े जब कि लोग सो रहे हों। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! कौन इन कामों की त़ाक़त रखता है ? इरशाद फ़रमाया : मेरी उम्मत में से जो उस की त़ाक़त रखता है अ़न्क़रीब मैं उस के बारे में तुम्हें आगाह करूंगा। फिर इरशाद फ़रमाया : जो मुसलमान भाई से मिले, उसे सलाम करे और वोह जवाब दे तो यक़ीनन उस ने सलाम को आ़म किया, जो अपने अहलो इ़याल को पेट भर कर खाना खिलाए तो यक़ीनन उस ने खाना खिलाया, जिस ने पूरा माहे रमज़ानुल मुबारक और हर महीने तीन रोज़े रखे गोया उस ने हमेशा रोज़े रखे और जिस ने इ़शा व फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की गोया उस ने उस वक़्त नमाज़ पढ़ी जब लोग यानी यहूदो नसारा और मजूसी सोए हुए थे।[5]

## 5 अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बेशक जन्नत में बालाख़ाने हैं जिन के बाहर से अन्दर का ह़िस्सा नज़र आता है और अन्दर से बाहर का मन्ज़र नज़र आता है, अल्लाह पाक ने उसे अपने लिये मह़ब्बत करने वालों और अपने लिये एक दूसरे से मिलने वालों और अपनी राह में ख़र्च करने वालों के लिये तय्यार किया है।[6]

## 6 फ़क़्र (यानी ग़ुर्बत) इख़्तियार करने वाले

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने (यानी बुलन्द मह़ल्लात) हैं जिन की त़रफ़ अहले जन्नत ऐसे देखेंगे जैसे दुनिया वाले आस्मान के सितारों को देखते हैं, उन में सिर्फ़ फ़क़्र (यानी ग़ुर्बत) इख़्तियार करने वाले नबी, शहीद फ़क़ीर और फ़क़ीर मोमिन दाख़िल होंगे।[7]

ऐ आ़शिक़ाने जन्नत ! जन्नत में बुलन्द मक़ाम और ऊंचे ऊंचे मह़ल्लात पाने के लिये हमें ख़ूब नेकियां करना होंगी और बुराई से बचने वाला बनना होगा, अल्लाह पाक हमें अपनी रिज़ा के लिये जन्नत में बुलन्द मह़ल्लात ह़ासिल करने वाली नेकियां करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) مسلم، ص1163، حدیث:7144 (2) شعب الایمان، 6/487، حدیث: 9002 (3) ترمذی، 4/237، حدیث: 2535 (4) مرآۃ المناجیح، 2/260 (5) حلیۃ الاولیاء، 2/404، الحدیث 2739 (6) معجم اوسط، 2/166، حدیث: 2903 (7) احیاء علوم الدین، 4/249۔

(क़िस्त : 01)

# इस्लाम का निज़ामे त़हारत व नज़ाफ़त

इस्लाम जैसे बात़िन और ईमान व नज़रियात के बारे में इन्तिहाई पाकीज़ा तालीमात रखता है ऐसे ही ज़ाहिरी सुथराई व सफ़ाई के बारे में भी वाज़ेह तालीमात अ़ता फ़रमाता है, इस्लाम गन्दगी को नापसन्द और सफ़ाई सुथराई और पाकीज़गी को पसन्द करता है। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से रिवायत है, नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ والہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक ! इस्लाम साफ़ सुथरा (दीन) है तो तुम भी नज़ाफ़त ह़ासिल किया करो क्यूंकि जन्नत में साफ़ रहने वाला ही दाख़िल होगा।(1) अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رحمۃ اللہ علیہ लिखते हैं : येह मुबारक आ़दत (सफ़ाई सुथराई) भी मर्दों और औ़रतों के लिये निहायत ही बेहतरीन ख़सलत है जो इनसानिय्यत के सर का एक बहुत ही क़ीमती ताज है। अमीरी हो या फ़क़ीरी हर ह़ाल में सफ़ाई सुथराई इन्सान के वक़ार व शरफ़ का आइनादार और मह़बूब परवर दिगार है। इस लिये हर मुसलमान का येह इस्लामी निशान है कि वोह अपने बदन, अपने मकान व सामान, अपने दरवाज़े और सेह़न वग़ैरा हर हर चीज़ की पाकी और सफ़ाई सुथराई का हर वक़्त धयान रखे। गन्दगी और फूहड़पन इन्सान की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत के बदतरीन दुश्मन हैं इस लिये हर मर्द व औ़रत को हमेशा सफ़ाई सुथराई की आ़दत डालनी चाहिए।(2) इस्लाम ने एक ऐसा निज़ामे त़हारत मुहय्या किया है जिस के ज़रीए मुसलमान अपनी ज़ात, घर, ख़ानदान, मुआ़शरे ह़त्ता कि दिल और रूह़ को भी साफ़ सुथरा रख सकता है। त़हारत का मत़लब पाकी और सफ़ाई है और इस्लामी इ़बादात, मामूलात और ज़िन्दगी के दीगर उमूर में इस की बड़ी अहमिय्यत है। त़हारत के निज़ाम में मुख़्तलिफ़ उसूल और त़रीक़े शामिल हैं, आज इसी ह़वाले से कुछ मदनी फूल पढ़ने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे।

**ज़िस्म की त़हारत** इस्लाम ने जिस्मानी सफ़ाई सुथराई का हुक्म दिया और इस की त़हारत के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े भी बताएं जिन के ज़रीए जिस्म पाक साफ़ हो जाता है। मुकम्मल जिस्म की पाकी और सफ़ाई के लिये ग़ुस्ल और मुख़्तलिफ़ आज़ा की सफ़ाई के लिये वुज़ू और दीगर ज़राए भी बयान किये हैं जिन के ज़रीए जिस्मानी सफ़ाई का ख़याल रखा जा सकता है।

**1 इस्तिनजा के बाद त़हारत** बौलो बराज़ का इख़राज त़बई ह़ाजत है। इस्लाम ने क़ज़ाए ह़ाजत का त़रीक़ा भी बयान फ़रमाया है कि पहले पानी से नजासत को अच्छी त़रह़ दूर किया

जाए अगर पानी न हो तो मिट्टी के ढेलों के ज़रीए पाकी ह़ासिल की जाए। मिट्टी के ढेले से त़हारत का हुक्म इस लिये दिया गया है कि मिट्टी में भी पाक करने की सलाह़िय्यत रखी गई है। अगर इस्लाम के बताए हुवे त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ नजासत को साफ़ न किया जाए तो जिस्म पाक न होगा जिस से नमाज़ व दीगर इ़बादात की अदाएगी दुरुस्त नहीं होगी नीज़ सफ़ाई करने से बीमारियों से भी ह़िफ़ाज़त रहती है। एक तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ मिट्टी में नोशादर (AMMONIUM CHLORIDE) नीज़ बदबू दूर करने वाले बेहतरीन अजज़ा मौजूद हैं। पेशाब और फ़ुज़ला जरासीम से लबरेज़ होता है, इस का जिस्मे इन्सानी पर लगना नुक़्सान देह है। इस के अज्ज़ा बदन पर चिपके रह जाने की सूरत में त़रह़ त़रह़ की बीमारियां पैदा होने का अन्देशा है। "डॉक्टर हलूक" लिखता है : इस्तिनजा के मिट्टी के ढेले ने साइन्सी दुनिया को वरत़ए ह़ैरत में डाल रखा है। मिट्टी के तमाम अजज़ा जरासीम के क़ातिल होते हैं, लिहाज़ा मिट्टी के ढेले के इस्तिमाल से पर्दे की जगह पर मौजूदा जरासीम का ख़ातिमा हो जाता है बल्कि इस का इस्तिमाल "पर्दे की जगह के कैन्सर" से बचाता है।[3] इस बारे में मज़ीद मालूमात के लिये मक्तबतुल मदीना का रिसाला **"इस्तिन्जा का त़रीक़ा"** का मुत़ालआ करना मुफ़ीद है।

**2 वुज़ू** जिस्मानी सफ़ाई का एक एसा अ़मल है जिस के ज़रीए बन्दए मोमिन इ़बादत, तिलावत और उन कामों को करने के क़ाबिल हो जाता है जो बिग़ैर वुज़ू के जाइज़ नहीं होते। नमाज़ों की अदाएगी के लिये वुज़ू शर्त़ रखा गया और क़ुरआने पाक में इस का हुक्म दिया गया :

﴿يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो जब नमाज़ को खड़े होना चाहो तो अपने मुंह धोओ और कोहनियों तक हाथ और सरों का मसह़ करो और गट्टों तक पांव धोओ।[4]

वुज़ू करने से जहां एक मुसलमान हुक्मे ख़ुदावन्दी का आ़मिल बनता है वहीं उस के आज़ाए वुज़ू की सफ़ाई भी होती है और अह़ादीसे मुबारका के मुत़ाबिक़ जिस्म के उन ह़िस्सों के गुनाह भी झड़ जाते हैं।[5] नीज़ वुज़ू करने वाले को त़िब्बी और साइन्सी कई फ़वाइद व समरात भी ह़ासिल होते हैं। वुज़ू के त़िब्बी व साइन्सी फ़वाइद जानने के लिये मक्तबतुल मदीना का रिसाला "वुज़ू और साइन्स" का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद है।

**3 मिस्वाक करना** सुन्नत के मुत़ाबिक़ वुज़ू किया जाए तो इस का एक जुज़ मिस्वाक करना भी है कि नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वुज़ू से पहले मिस्वाक करना पसन्द फ़रमाते एक ह़दीसे पाक में यहां तक इरशाद फ़रमाया कि अगर मुझे मेरी उम्मत पर मशक़्क़त का ख़ौफ़ न होता तो मैं वुज़ू से पहले मिस्वाक को लाज़िम क़रार देता।[6] मिस्वाक करने से मुंह में मौजूद ग़िज़ाओं के अजज़ा सड़ते नहीं और मुंह की सफ़ाई हो जाती है और बन्दा साफ़ मुंह ले कर बारगाहे इलाही में सरबसुजूद होता है नीज़ मिस्वाक से इस के अ़लावा भी कसीर फ़वाइद ह़ासिल होते हैं। मिस्वाक के बारे में मज़ीद मालूमात के लिये रिसाला "मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल" का मुत़ालआ़ कीजिये।

**4 नाख़ुन तराशना** जिस्मानी सफ़ाई में नाख़ुन तराशना और मुए ज़ेरे नाफ़ साफ़ करना भी शामिल है। इस्लामी तालीमात के मुत़ाबिक़ इस बारे में येह हुक्म है कि 40 दिन के अन्दर अन्दर नाख़ुन और जिस्म के ग़ैर ज़रूरी बाल साफ़ कर लिये जाएं और बिला उ़ज़्रे शरई 40 दिन से ज़ाइद कर देना नाजाइज़ व गुनाह है। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो मुए ज़ेरे नाफ़ और नाख़ुन न तराशे और मूंछ न काटे, वोह हम में से नहीं।[7] त़िब्बी लिहाज़ से बड़े नाख़ुन मुज़िर्रे सेह़त हैं, नाख़ुन तराशना जहां एक त़रफ़ सेह़त का बाइ़स है तो दूसरी जानिब सुन्नत व मुस्तह़ब अ़मल है और बन्दा सुन्नत के मुत़ाबिक़ उन्हें तराश कर सवाब का मुस्तह़िक़ ठहरता है। जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरशवाना मुस्तह़ब है,

हां अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ का इन्तिज़ार न करें क्यूंकि नाख़ुन का बड़ा होना तंगिए रिज़्क़ का सबब है।[8]

**5 तयम्मुम** इस्लामी अहकाम इन्सानी त़बीअ़त के मुवाफ़िक़ हैं, इस्लाम नर्मी और आसानी का हुक्म देता है इसी वज्ह से अपने मानने वालों को नमाज़ और दीगर इ़बादात की अदाएगी के लिए सफ़र व ह़ज़र में पानी की अ़दम मौजूदगी या बीमारी की ह़ालत में पाकी ह़ासिल करने के लिये तयम्मुम का हुक्म फ़रमाया है जो वुज़ू व ग़ुस्ल का क़ाइम मक़ाम है। क़ुरआने करीम में इरशाद होता है: ﴿وَ اِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآىٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَیَمَّمُوْا صَعِیْدًا طَیِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَ اَیْدِیْكُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا(۴۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में या तुम में से कोई क़ज़ाए ह़ाजत से आया या तुम ने औ़रतों को छुवा और पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का मसह करो बेशक अल्लाह मुआ़फ़ फ़रमाने वाला बख़्शने वाला है।[9]

आयते मुबारका के आख़िरी जुज़ का शाने नुज़ूल येह है कि ग़ज़वए बनी मुसत़लक़ में जब लश्करे इस्लाम रात के वक़्त एक बयाबान में ठहरा जहां पानी न था और सुब्ह वहां से कूच करने का इरादा था, वहां उम्मुलम मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا का हार गुम हो गया, उस की तलाश के लिये सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वहां क़ियाम फ़रमाया, सुब्ह हुई तो पानी न था, इस पर अल्लाह तआ़ला ने तयम्मुम की आयत नाज़िल फ़रमाई।[10]

**तयम्मुम का त़रीक़ा** तयम्मुम करने वाला पाकी ह़ासिल करने की निय्यत करे और जो चीज़ मिट्टी की जिन्स से हो जैसे गर्द, रेत, पथ्थर, मिट्टी का फ़र्श वग़ैरा इस पर दो मर्तबा हाथ मारे, एक मर्तबा हाथ मार कर चेहरे पर फेर ले और दूसरी मर्तबा ज़मीन पर हाथ फेर कर कोहनियों समेत दोनों हाथों पर फेर ले। तयम्मुम के मज़ीद अह़काम जानने के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द 1 हिस्सा नंबर 2 से "तयम्मुम का बयान" मुतालआ फ़रमाए।

**6 ग़ुस्ल के ज़रीए त़हारत** ग़ुस्ल भी जिस्मानी सफ़ाई सुथराई और पाकी ह़ासिल करने का ज़रीआ़ है, इन्सानी फ़ित़रत सफ़ाई सुथराई और ख़ुबसूरती को पसन्द करती है इसी वज्ह से इस्लाम ने फ़ित़रते इन्सानी का लिह़ाज़ करते हुवे मुसलमानों को पूरे जिस्म की सफ़ाई के लिये ग़ुस्ल की तरग़ीब दिलाई है नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लाज़िम है हर मुसलमान पर कि हर सात दिन में एक दिन ग़ुस्ल करे जिस में सर व जिस्म धोए।[11]

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : यहां एक दिन से मुराद जुमुआ़ का दिन है। मत़लब येह है कि हफ़्ते में जुमुआ़ के दिन ग़ुस्ल कर लेना चाहिए ताकि बदन भी साफ़ हो जाए और कपड़े भी और जुमुआ़ की भीड़ में मुसलमानों को तकलीफ़ न हो, चूंकि सर में मैल जूएं ज़ियादा हो जाती हैं, इस लिये ख़ुसूसिय्यत से इस का ज़िक्र किया वरना जिस्म में येह भी दाख़िल था। ग़ुस्ल में कुल्ली और नाक में पानी लेना और तमाम जिस्म का धोना हमारे हां फ़र्ज़ है।[12]

बाज़ सूरतों में इ़बादात और मुआ़मलात की अदाएगी के लिये पूरा जिस्म पाक करना ज़रूरी क़रार दिया है और इस सूरत में ग़ुस्ल न करना या इस्लाम के बताए हुवे त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ न करना इ़बादात के ज़ाएअ़ होने और बन्दे के गुनहगार होने का सबब बन सकता है। दीने इस्लाम ने न सिर्फ़ ज़िन्दगी में जिस्मानी सफ़ाई के लिये ग़ुस्ल का हुक्म दिया बल्कि मरने के बाद भी मुर्दों को ग़ुस्ल दे कर दफ़नाने को लाज़मी क़रार दिया है। ग़ुस्ल के मुतअ़ल्लिक़ मसाइल जानने के लिये मक्तबतुल मदीना का रिसाला **"ग़ुस्ल का त़रीक़ा"** का मुतालआ़ कीजिये اِنْ شَآءَ اللہ बेह़द मुफ़ीद साबित होगा। (जारी है)

---

(1) کنز العمال، جز:9، 5/ 123، حدیث:25996 (2) جنتی زیور، ص139 (3) استنجا کا طریقہ، ص10 (4) پ6، المآئدۃ:6 (5) مسند احمد، 1/ 130، حدیث:415 (6) ترمذی، 1/ 100، حدیث:23 (7) مسند احمد، 9/ 125، حدیث:23539 (8) بہارِ شریعت، 3/ 582 (9) پ5، النسآء:43 (10) بخاری، 1/ 133، حدیث: 334 (11) بخاری، 1/ 310، حدیث:897 (12) مراٰۃ المناجیح، 1/ 345 تا 346 ملتقطاً۔

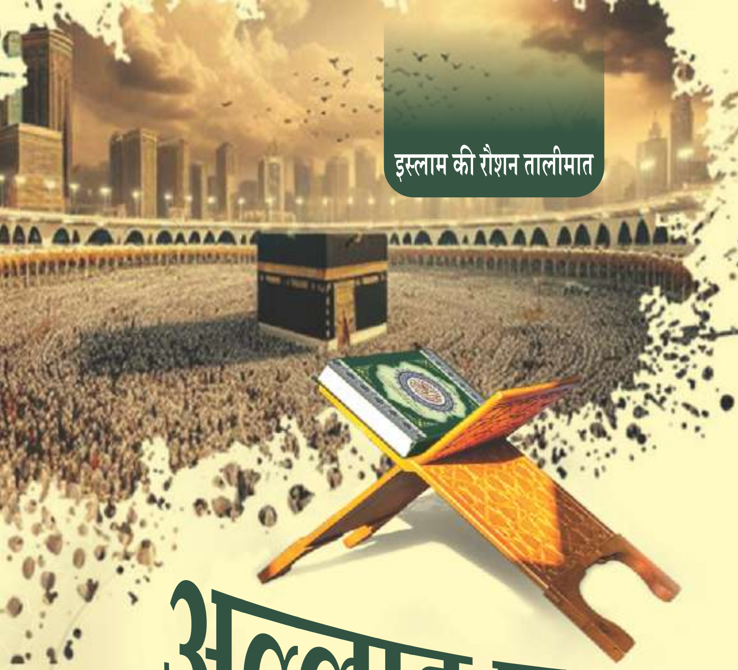

# अल्लाह पाक की इ़बादत की तालीम

मुसलमानों का सब से पहला और बुन्यादी अ़क़ीदा येह है कि अल्लाह पाक एक है, उस का कोई शरीक नहीं और वोही इ़बादत के लाइक़ है। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ(۱۶۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारा माबूद एक माबूद है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मगर वोह बड़ी रह़मत वाला मेहरबान।[1]

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : ﴿فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जान लो कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं।[2]

तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी अपनी उम्मतों को एक अल्लाह की इ़बादत करने की तालीम दी, उन की दावत के इस बुन्यादी नुकते को बयान करते हुवे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ لَقَدْ بَعَثْنَا فِیْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हर उम्मत में से हम ने एक रसूल भेजा कि अल्लाह को पूजो और शैत़ान से बचो।[3]

क़ुरआने करीम में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर कई अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का येह मक़ूला मौजूद है जो उन्हों ने अपनी अपनी क़ौम से फ़रमाया था :

﴿یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की इ़बादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं।[4]

अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम की मुतअ़द्दद आयाते मुबारका में अपनी इ़बादत करने का हुक्म दिया है चुनान्चे इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ اَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ(۹۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं तुम्हारा रब हूं तो मेरी इ़बादत करो।[5]

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : ﴿یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ وَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ(۲۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो अपने रब को पूजो जिस ने तुम्हें और तुम से अगलों को पैदा किया येह उम्मिद करते हुवे कि तुम्हें परहेज़गारी मिले।[6]

अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इ़बादत का हुक्म देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ اعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى یَاْتِیَكَ الْیَقِیْنُ(۹۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मरते दम तक अपने रब की इ़बादत में रहो।[7]

इन आयाते बय्यिनात से मालूम हुवा कि अल्लाह पाक ही इ़बादत के लाइक़ है, सिर्फ़ उसी की इ़बादत की जाये और वोही इ़बादत का अज्रो सवाब भी अ़त़ा फ़रमाएगा। किसी को दिखाने, सुनाने और अपनी वाहवा करवाने के बजाए मह़ज़ अल्लाह पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये इ़बादत करनी चाहिए कि इख़्लास के साथ किया जाने वाला अ़मल ही बारगाहे इलाही में मक़बूल होता है। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّیْنَ(۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अल्लाह को पूजो निरे उस के बन्दे हो कर।[8]

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : ﴿فَمَنْ كَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْیَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّ لَا یُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا(۱۱۰)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।[9]

**अल्लाह** पाक का बन्दों पर येह ह़क़ है कि बन्दे इस की इ़बादत करें और किसी को उस का शरीक न ठहराएं। ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ रिवायत करते हैं कि हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : मुआ़ज़ ! क्या जानते हो अल्लाह का ह़क़ अपने बन्दों पर क्या है और बन्दों का ह़क़ अल्लाह पर क्या है ? मैं ने अ़र्ज़ की : अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ियादा जानते हैं। फ़रमाया : अल्लाह का ह़क तो बन्दों पर येह है कि उस की इ़बादत करें और किसी को उस का शरीक न ठहराएं और बन्दों का ह़क़ अल्लाह पाक पर येह है कि जो उस का शरीक न ठहराता हो उसे अ़ज़ाब न दे।[10]

इ़बादत करने से जहां अल्लाह पाक के ह़क़ की अदाएगी होती है, वहां इन्सान के दुनिया में आने का अस्ल मक़्सद भी पूरा हो जाता है, अल्लाह पाक का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है :

﴿وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ(۵۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन और आदमी इतने ही (इसी लिये) बनाए कि मेरी बन्दगी करें।[11] अगर हम चाहते हैं कि अपने दुनिया में आने के मक़्सद में काम्याब हो जाएं तो हमें अपनी ज़िन्दगी शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारनी होगी। अगर हमारा उठना बैठना, खाना पीना, चलना फिरना, सोना जागना अल ग़रज़ हर हर काम शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ हो जाए तो हमारा एक एक लम्ह़ा इ़बादत में शुमार होगा। अल्लाह पाक की रह़मत हमारे शामिले ह़ाल होगी और हमारे बिगड़े हुवे काम भी बनते चले जाएंगे। रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ऐ इन्सान ! तू मेरी इ़बादत के लिये फ़ारिग़ हो जा मैं तेरा सीना ग़िना से भर दूंगा और तेरी मोह़ताजी का दरवाज़ा बन्द कर दूंगा और अगर तू ऐसा नहीं करेगा तो मैं तेरे दोनों हाथ मसरूफ़ियात से भर दूंगा और तेरी मोह़ताजी का दरवाज़ा बन्द नहीं करूंगा।[12]

इस ह़दीसे पाक में बयान कर्दा फ़रमाने आ़लीशान के नज़ारे फ़ी ज़माना आ़म देखने को मिलते हैं कि मुसलमान मालो दौलत कमाने में इस क़दर मगन हो चुके हैं कि दिन रात, सुब्ह़ शाम इसी में सर गर्दां हैं, इन के पास इतना वक़्त भी नहीं कि अल्लाह पाक की बारगाह में सज्दा रेज़ हो सकें और इस ख़ालिक़ व मालिक को याद कर सकें जो ह़क़ीक़ी रोज़ी देने वाला है। इतनी मेह़नत व कोशिश करने के बावुजूद आज जो इन का मुआ़शी ह़ाल है वोह सब के सामने है, हर कोई रिज़्क़ में तंगी, बे बरकती, मेहंगाई, बीमारी और परेशानी का रोना रो रहा है। इस के बर अ़क्स जिन्होंने अपने आप को अल्लाह पाक की इ़बादत के लिये फ़ारिग़ कर दिया, अपनी ज़बान को अल्लाह पाक के ज़िक्र से तर रखा और अपने दिल को अल्लाह पाक की याद से मामूर किया तो अल्लाह पाक उन्हें अपने फ़ज़्लो करम से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता, बरकतों से नवाज़ता और इन के तमाम तर मुआ़मलात में उन्हें काफ़ी हो जाता है।

याद रखिये ! अल्लाह पाक ने इन्सान को जो इतनी फ़ज़ीलत व करामत अ़ता फ़रमाई कि उसे अशरफ़ुल मख़्लूक़ात बनाया और इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत का ताज उस के सर पर सजाया, येह इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत उसी वक़्त है जब इन्सान अपने रब का फ़रमां बरदार बन कर उस की बन्दगी करता रहे वरना अल्लाह पाक के हां उस की कोई क़दरो मन्ज़िलत नहीं। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿قُلْ مَا یَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّیْ لَوْ لَا دُعَآؤُكُمْۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ तुम्हारी कुछ क़द्र नहीं मेरे रब के यहां अगर तुम उसे न पूजो।[13] यानी जो रब की इ़बादत न करे उस की बारगाहे इलाही में न क़दर है न इ़ज़्ज़त, इस से नतीजा येह निकला कि मुत्तक़ी व आ़बिद मोमिन की वहां क़द्र भी है इ़ज़्ज़त भी। रब फ़रमाता है : ﴿وَ لِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُوْلِهٖ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इ़ज़्ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल और मुसलमानों ही के लिये है।[14] फिर जैसा तक़्वा व इ़बादत ऐसी ही क़द्रो इ़ज़्ज़त है। इन्सान मिट्टी या पानी का ढेर है। इस में नूरे ईमान क़ाबिले क़द्र चीज़ है :

शकले बशर में नूरे इलाही अगर न हो !
क्या क़द्र उस ख़मीरए मा व मदर की है।[15]

लिहाज़ा इन्सान की क़द्रो इ़ज़्ज़त ईमान व इ़बादत से है।[16] ज़िन्दगी इ़बादत के लिये मिलती है, बग़ैर बन्दगी के बसर की जाने वाली ज़िन्दगी बाइ़से शर्मिन्दगी है।

जिन्दगी आमद बराए बन्दगी    ज़िन्दगी बे बन्दगी शर्मिन्दगी

---

(1)پ2، البقرۃ:163(2)پ26، محمد:19(3)پ14، النحل:36(4)پ8، الاعراف: 85 (5)پ17، الانبیآء: 92 (6)پ1، البقرۃ:21 (7)پ14، الحجر: 99 (8)پ23، الزمر:2(9)پ16، الکھف:110(10)بخاری،2/269، حدیث:2856(11)پ27، الذّٰریٰت: 56 (12)ترمذی، 4/211، حدیث:2474 (13)پ19، الفرقان:77 (14)پ28، المنٰفقون:8 (15)حدائق بخشش، ص206 (16)نور العرفان، پ19، الفرقان، تحت الآیۃ:77۔

# बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

The Blessed quotes of the pious predecessors

## बातों से ख़ुश्बू आए

### महब्बते इलाही का सुबूत

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ व अफ़्आल और अहकामात व सुन्नतों की पैरवी करना अल्लाह से महब्बत का सुबूत है।
(इरशादे हज़रते ज़ुन्नून मिसरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ) (तबक़ाते सूफ़िया, स. 30)

### दावए महब्बत की सदाक़त का मेयार

जो फ़क़्र से महब्बत के बिग़ैर महब्बते रसूल का दावा करे वोह कज़्ज़ाब (यानी बड़ा झूठा) है। (इरशादे हज़रते हातिम असम رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ) (حلیۃ الاولیاء، 8/79)

### इश्क़ व अदब लाज़िमे यक दिगर हैं

जिस दिल में इश्क़े मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मोजज़न होगा उस से बेअदबी हरगिज़ सरज़द न होगी और जिस दिल में इश्क़े रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न हो उस से बे अदबियां सरज़द होती रहती हैं।
(इरशादे हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अमीन क़ादिरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ)

(इश्क़े मुस्तफ़ा, स. 23)

## अहमद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

### मुहम्मद की महब्बत दीने हक़ की शर्ते अव्वल है

अल्लाह तआला सच्चा इस्लाम दे और इस पर सच्ची इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए और अपनी और अपने हबीबे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सच्ची महब्बत दे और इन के दुश्मनों से कामिल अ़दावत व नफ़रत अ़ता फ़रमाए कि बग़ैर इस के मुसलमान नहीं हो सकता अगर्चे लाख दावए इस्लाम करे और शबाना रोज़ नमाज़ रोज़े में मुन्हमिक रहे।

(फ़तावा रज़विय्या, 21/177)

### रब की नेमतों का सर चश्मा हैं हुज़ूर

दीनो दुनिया व जिस्मो जां में जो नेमत किसी को मिली और मिलती है और अबदुल आबाद तक मिलेगी सब हुज़ूरे अक़्दस ख़लीफ़तुल्लाहिल आज़म صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले और हुज़ूर के मुबारक हाथों से मिली और मिलती है और अबदुल आबाद तक मिलेगी। (फ़तावा रज़विय्या, 21/195)

### कोई दुआ तवस्सुल से ख़ाली नहीं

मुसलमान के दिल में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तवस्सुल रचा हुवा है इस की कोई दुआ तवस्सुल से ख़ाली नहीं होती अगर्चे बाज़ वक़्त ज़बान से न कहे।

(फ़तावा रज़विय्या, स. 21/194)

## अ़त्तार का चमन कितना प्यारा चमन

### इश्क़े रसूल बढ़ाने का नुस्ख़ा

इश्क़े रसूल बढ़ाने के लिये ख़ुश इलहान नातख़्वां से नात शरीफ़ सुननी चाहिए।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल अव्वल 1444 हि)

### मुतालए सीरत का समरा

बन्दा हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान के मुतअ़ल्लिक़ जितना मुतालआ़ करेगा महब्बत मज़ीद बढ़ेगी।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल अव्वल 1444 हि)

### जो तेरे दर से यार फिरते हैं

अगर कोई दरबारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दूर हो तो फिर उस को कोई जाए पनाह नहीं मिलेगी, दर दर की ठोकरें खाएगा, ख्वार होगा, बरबाद होगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 21 रबीउ़ल अव्वल 1445 हि)

# अहकामे तिजारत

## 1 दोस्त को घर में शरीक बना कर किराया आपस में तक़्सीम करना

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मसअले के बारे में कि ज़ैद ने कुछ अ़रसा पहले साढ़े छे लाख रुपै में एक मकान ख़रीदा। अब ज़ैद येह चाहता है कि अपने दोस्त उ़मर को उस घर के एक चौथाई हि़स्से में शरीक कर ले और दोनों मिल कर उस का किराया वुसूल करें। येह इरशाद फ़रमाएं कि क्या ज़ैद का अपने दोस्त उ़मर को इस मकान में शरीक करना शरअ़न जाइज़ है ? अगर जाइज़ है तो ज़ैद क़ीमतें ख़रीद के एतिबार से उसे घर में शरीक करेगा या मौजूदा वेल्यू के ऐतिबार से शरीक करेगा ? क्यूंकि उस घर की मौजूदा वेल्यू सात लाख रुपै है। नीज़ ज़ैद और उ़मर के दरमियान किराया की रक़म किस ऐतिबार से तक़्सीम होगी ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

**जवाब :** पूछी गई सूरत में ज़ैद अपनी मिलकियत में बकर को शामिल कर सकता है चौथाई हि़स्सा यानी 25 फ़ीसद अगर उसे देना चाहता है तो दे सकता है, लेकिन येह ज़रूरी है कि फ़रीक़ैन क़ीमत यानी मुआ़वज़ा की मिक़दार पर इत्तिफ़ाक़ करें। येह ज़रूरी नहीं कि क़ीमते ख़रीद के मुताबिक़ या फिर मौजूदा मार्केट वेल्यू के मुताबिक़ हि़स्सा बेचा जाए बल्कि बाहमी रज़ामन्दी से कोई भी क़ीमत तै की जा सकती है। रही बात किराया तक़्सीम करने की तो जिस का जितना शेयर होगा उस के मुताबिक़ ही वोह किराया का ह़क़दार होगा।

सदरुश्शरीअ़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : एक शख़्स ने कोई चीज़ ख़रीदी है किसी दूसरे शख़्स ने उस से येह कहा मुझे इस में शरीक कर ले मुश्तरी ने कहा शरीक कर लिया अगर येह बातें उस वक़्त हुईं कि मुश्तरी ने मबीअ़ पर क़ब्ज़ा कर लिया है तो शिर्कत सह़ीह़ है और क़ब्ज़ा न किया हो तो शिर्कत सह़ीह़ नहीं क्यूंकि अपनी चीज़ में दूसरे को शरीक करना उस के हाथ बैअ़ करना है और बैअ़ उसी चीज़ की हो सकती है जो क़ब्ज़ा में हो और जब शिर्कत सह़ीह़ होगी तो निस्फ़ समन देना लाज़िम होगा कि दोनों बराबर के शरीक क़रार पाएंगे अलबत्ता अगर बयान कर दिया है कि एक तिहाई या चौथाई या इतने हि़स्से की शिर्कत है तो जो कुछ बयान किया है उतनी ही शिर्कत होगी और उसी के मुवाफ़िक़ समन देना लाज़िम होगा।(बहारे शरीअ़त, 2/515)

उजरत की तक़्सीम कारी ब क़दरे हि़स्स होगी। जैसा कि दुररुल हुक्काम में है : ”لو اجر الشرکاء الحانوت المشترك بينهم لآخر فيجب تقسيم بدل الايجار بينهم حسب حصصهم فی الحانوت“

यानी अगर शुरका ने अपनी मुशतरिका दुकान दूसरे शख़्स को किराये पर दी तो उजरत की तक़्सीम कारी दुकान में मौजूद हि़स्सों के मुताबिक़ होगी।(درر الحکام شرح مجلۃ الاحکام، 3/27)

وَاللهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 2 कमेटी डालने वाले का इन्तिक़ाल हो जाए तो जमा शुदा रक़म का हुक्म

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक शख़्स दो कमेटियां डाली हुई थीं, उन में से एक कमेटी की रक़म यानी 8 लाख रुपै उसको मिल गई थी और टोटल वोह 10 लाख 50 हज़ार रुपै दोनों कमेटियों की रक़म भर चुका था और अब उस का इन्तिक़ाल हो गया जिस की वजह से मज़ीद कमेटियां वोह जमा नहीं करवाएगा और उस की दूसरी कमेटी तक़रीबन 7 माह बाद खुलेगी अब सुवाल येह है कि जो ढाई लाख रुपै मरहूम ने इज़ाफ़ी जमा करवाए थे क्या वोह वुरसा को फ़ौरन देना लाज़िम है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

**जवाब :** बयान कर्दा सूरत में मरहूम दोनों कमेटियों की मद में 10 लाख 50 हज़ार रुपै अदा कर चुका था और उस को एक कमेटी की मद में 8 लाख रुपै मिल चुके थे लिहाज़ा मजमूई त़ौर पर ढाई लाख रुपै की रक़म कमेटी वाले पर क़र्ज़ हुई और इ़न्दश्शरअ़ क़र्ज़ को मुत़ालबे पर लौटाना लाज़िम होता है बहर ह़ाल कमेटी वाले पर येह ढाई लाख रुपै वुरसा को देना लाज़िम है, अब इस का त़रीक़ए कार येह हो सकता है कि मय्यित के वुरसा और कमेटी वाला बाहमी रज़ामन्दी से कोई एक तारीख़ त़ै कर लें जिस में रक़म की वापसी होगी। और वुरसा को भी चाहिए कि अगर कमेटी वाला फ़ौरी अदाएगी पर क़ादिर नहीं है और वक़्त का मुत़ालबा करता है तो उस से फ़िलफ़ौर अदाएगी का मुत़ालबा न करें बल्कि कुछ मोहलत दे दें।

हमारा यहां कमेटी की रक़म बत़ौर क़र्ज़ दी जाती है चुनान्चे अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़सकफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه क़र्ज़ की तारीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ दुर्रे मुख़्तार में लिखते हैं :

“شرعا: ما تعطيه من مثلی لتتقاضاه”

यानी शरई़ ऐतिबार से क़र्ज़ वोह मिसली माल है जिसे तुम उस जैसा वापस ह़ासिल करने की ग़रज़ से देते हो। (در مختار، 5/161)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 3 कमेटी ताख़ीर से देने पर इज़ाफ़ी पैसे लेना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या कमेटी (B.C) जमा करने वाला येह शर्त़ लगा सकता है कि जो शख़्स ताख़ीर से कमेटी की क़िस्त़ जमा करवाएगा वोह उस ताख़ीर की बिना पर इज़ाफ़ी पैसे भी देगा ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

**जवाब :** कमेटी जमा करने वाले का ये शर्त़ लगाना कि जो शख़्स ताख़ीर से कमेटी की क़िस्त़ जमा करवाएगा वोह उस ताख़ीर की बिना पर इज़ाफ़ी पैसे भी देगा येह शर्त़ नाजाइज़ व ह़राम है क्यूंकि अगर क़िस्त़ जमा करवाने वाले की कमेटी अब तक नहीं खुली तो इस सूरत में वोह मक़रूज़ नहीं है लिहाज़ा ताख़ीर की बिना पर उस से इज़ाफ़ी पैसे लेना माली जुरमाना है जो कि ना नाजाइज़ व गुनाह है। और अगर उस शख़्स की कमेटी खुल चुकी है और उस पर बक़िया क़िस्तें बाक़ी हैं तो इस सूरत में वोह मक़रूज़ है लिहाज़ा कमेटी जमा करने वाले का ताख़ीर की बिना पर उस शख़्स से इज़ाफ़ी पैसे लेना सूद है जो कि सख़्त नाजाइज़ व ह़राम है।

चुनान्चे मब्सूत़ में है : “مقابلة الاجل بالدراهم ربا”

तर्जमा : मुद्दत के मुक़ाबले में (क़ीमत के अ़लावा) दिरहम लेना सूद है। (المبسوط، 13/126)

माली जुरमाने से मुतअ़ल्लिक़ आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ताज़ीर बिलमाल मन्सूख़ है और मन्सूख़ पर अ़मल जाइज़ नहीं।(फ़तावा रज़विय्या, 5/112)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# ह़ज़रते सय्यिदुना याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام

(क़िस्त़ : 01)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़लीलुल्लाह ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की उ़म्र मुबारक उस वक़्त 120 साल हो चुकी थी जब सादा रू, नौजवानों की ह़सीन शकलों में फ़िरिश्तों ने बेटे ह़ज़रते इस्ह़ाक़ और उन के बाद पोते ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِمَا السَّلَام की पैदाइश की ख़ुशख़बरी सुनाई थी। माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के पिछले शुमारों में आप मुअ़ज़्ज़ज़ नबी ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام के तफ़्सीली ह़ालाते मुबारका पढ़ चुके हैं, अब मुकर्रम नबी ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की बा बरकत सीरत पढ़ें :

**पैदाइश :** ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश सर ज़मीन कनआ़न (फ़िलिस्तीन) में हुई, उस वक़्त वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की उ़म्र मुबारक 60 साल से ऊपर थी ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की मह़ब्बतों और शफ़क़तों के साए में पल बढ़ कर जवान हुवे।[1]

**लक़ब का माना** आप عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब "इसराईल" है और येह इब्रानी ज़बान का लफ़्ज़ है, अ़रबी ज़बान में इस का माना "सफ़वतुल्लाह" है यानी अल्लाह पाक का मुन्तख़ब पसन्दीदा बन्दा, और येह भी कहा गया है कि "इसरा" का माना "अ़ब्द" यानी बन्दा और "ईल" से मुराद "अल्लाह" तो इसराईल का माना हुवा **"अ़ब्दुल्लाह"** यानी अल्लाह का बन्दा।[2]

**औसाफ़ व ह़ुलिया मुबारका** अल्लाह करीम के प्यारे करीम नबी ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करने वाले, मज़बूत आसाब रखने वाले, पुर वक़ार और ख़ामोश त़बीअ़त रखने के साथ साथ ज़ाहिरी व बात़िनी हुस्न व ख़ूबियों से मालामाल थे।[3] गोरा रंग जिस में सुर्ख़ी झलकती, नाक ऊंची, रुख़सार हलके, चेहरा ख़ूबसूरत जबकि लबे ज़ेरीं पर एक तिल था।[4] आप عَلَيْهِ السَّلَام को ऊंट का गोश्त और ऊंटनी का दूध बहुत पसन्द था लेकिन एक मरतबा बहुत ज़ियादा बीमार हुवे और बीमारी त़ूल पकड़ गई तो आप ने येह मन्नत मानी कि अगर अल्लाह इस बीमारी से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दे तो मैं अपनी सब से पसन्दीदा चीज़ न खाऊंगा और न पीऊंगा।[5]

**वालिदे मोह़तरम की दुआ़** एक मरतबा वालिदे माजिद ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام ने आप عَلَيْهِ السَّلَام को अपने क़रीब बुलाया और येह दुआ़ दी कि अल्लाह तुम्हारी औलाद में अम्बिया और बादशाहों को पैदा करे।[6]

**निकाह़ व औलाद** ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ से आप عَلَيْهِ السَّلَام को येह वसिय्यत थी कि किसी कनआ़नी औ़रत से निकाह़ न करें बल्कि अपने मामूं की बेटी से निकाह़ करें, लिहाज़ा आप عَلَيْهِ السَّلَام ने सफ़र इख़्तियार किया[7] और मामूं लयान की बड़ी बेटी **"लिय्या"** से फिर उन के इन्तिक़ाल के बाद छोटी बेटी **"राह़ील"** से निकाह़ किया।[8] अल्लाह करीम ने ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के माल व औलाद में बरकत अ़त़ा फ़रमाई अल्लाह की रह़मत से आप के हां 12 बेटे बैदा हुवे[9] पहली ज़ौजा मोह़तरमा **"लिय्या"** से 6 बेटे, मज़ीद दो बीवियों से 4 लड़कों की पैदाइश हुई जबकि बीबी **"राह़ील"** से दो बेटे ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام और बिनयामीन पैदा हुवे।[10] वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की ह़याते मुबारका में ही ह़ज़रते याक़ूब عَलَيْهِ السَّلَام के अकसर बेटे पैदा हो चुके थे।[11]

**ज़रीअ़ए मआ़श** हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام और उन की औलाद बकरियां चराते थे और बकरियां पाल पाल कर उन को बेचा करते थे।[12] जब आप عَلَيْهِ السَّلَام कन्आ़न से तशरीफ़ ले गए थे तो ख़ाली हाथ थे और जब वापस कन्आ़न लौट रहे थे तो आप के पास कसीर बकरियां, जानवर और ग़ुलाम थे।[13]

**बिअ़सते मुबारका और मोजिज़ात** हज़रते सय्यिदुना याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को शाम के शहरों में मुक़ीम कन्आ़नी क़ौम की तरफ़ मबऊ़स फ़रमाया गया था।[14] किताबों में आप عَلَيْهِ السَّلَام के कई मोजिज़ों का ज़िक्र मिलता है जिन में से कुछ येह हैं **1** आप عَلَيْهِ السَّلَام ने पानी पी कर बचा हुवा पानी कुंवें में वापस डाला तो कुंवां पानी से लबालब भर गया।[15] **2** आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दरख़्त के पत्तों पर लुआ़ब वाली फूंक मारी जिन बकरियों ने वोह पत्ते खाए तो उन्हों ने नर बच्चे पैदा किये, अगले साल इसी त़रह दूसरी बकरियों ने पत्ते खाए तो उन्हों ने मादा बच्चे जने।[16] **3** आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ की तो दुश्मने दीन का क़ल्आ़ ज़मीन बोस हो गया।[17] **4** एक बदज़बान के लिये आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ की तो उस की ज़बान बन्द हो गई फिर किसी की सिफ़ारिश पर उस के लिये दोबारा दुआ़ की तो उस की ज़बान सहीह हो गई।[18] **5** किताबों में येह मोजिज़ा भी मिलता है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام ने एक भेड़िये से कलाम किया।[19]

**वफ़ात** आप عَلَيْهِ السَّلَام को अपने बेटे हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से बड़ी महब्बत थी दूसरे बेटों की वज्ह से हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام आप से जुदा हो गए थे यहां तक कि हज़रते यूसुफ़ की जुदाई में रोते रोते आप عَلَيْهِ السَّلَام की आंख की सियाही का रंग जाता रहा और बीनाई कमज़ोर हो गई।[20] एक त़वील अ़र्से बाद अल्लाह करीम ने हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को उन के बेटे हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से मिला दिया, फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने दूसरों बेटों की त़रफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ और उन की ग़लतियों को मुआ़फ़ कर दिया।[21] हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने 147 साल की उ़म्र में इन्तिक़ाल फ़रमाया।[22]

**तफ़्सीली सीरते मुबारका** आइये ! हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की कुछ तफ़्सीली सीरते मुबारका पढ़िये: जब ह़ज़रते याक़ूब इ़राक़ के शहर बाबिल के क़रीब सरज़मीन **"फ़िदान आराम"** में अपने मामूं की त़रफ़ रवाना हुए तो रास्ते में रात हो गई[23] आप ने एक जगह आराम फ़रमाने की ग़रज़ से एक पत्थर लिया और अपने सर के नीचे रख कर सो गए। ख़्वाब में देखा कि आस्मान से ज़मीन तक एक सीढ़ी लटकी हुई है और फ़िरिश्ते उस सीढ़ी से ऊपर नीचे आ जा रहे हैं,[24] फिर अल्लाह करीम ने आप की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई : मैं अल्लाह हूं, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं ही तुम्हारा और तुम्हारे बाप दादा का माबूद हूं, मैं ने तुम्हें मुक़द्दस सरज़मीन का वारिस बना दिया है, फिर तुम्हारे बाद तुम्हारी औलाद को वारिस किया, और मैं तुम्हें और तुम्हारी औलाद को बाबरकत बनाऊंगा और किताब, ह़िक्मत और नुबुव्वत रखूंगा, मैं तुम्हारे साथ हूं, मैं तुम्हारी ह़िफ़ाज़त करूंगा।[25] हज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام जब नींद से बेदार हुए तो इस बाबरकत ख़्वाब की वज्ह से बहुत ख़ुश हुए आप ने मन्नत मानी कि उसी जगह पर अल्लाह करीम की एक इ़बादत गाह तामीर करूंगा, फिर आप ने वहां एक (मज़बूत़) पत्थर को तेल से रंग दिया ताकि बाद में याद रहे कि उसी बाबरकत जगह पर इ़बादतगाह तामीर करनी है, प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज उसी जगह पर क़िब्लए अव्वल बैतुल मुक़द्दस वाक़ेअ़ है।[26]

(जारी है)

---

(1)النبوۃ والانبیاء للصابونی، ص258-الانس الجلیل بتاریخ القدس والخلیل،1/151 (2)اصلاح اعمال،1/402- صراط الجنان،1/110ملخصًا(3)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص 102(4)تاریخ ابن عساکر، 74/15ماخوذاً(5)الاحادیث المختارہ، 11/22، رقم :11(6)عرائس المجالس للثعلبی، ص140(7)الانس الجلیل بتاریخ القدس والخلیل،1/152(8)خازن،یوسف، تحت الآیۃ:7، 3/5(9)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص103(10)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص103 تا 105 ملتقطاً-خازن،یوسف، تحت الآیۃ:7، 3/5(11)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص 104(12)جنتی زیور، ص547(13)قصص الانبیاء لابن کثیر، ص287 ماخوذاً(14)قصص الانبیاء لابن کثیر، ص287 (15)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص 102 ملخصًا (16)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص 103 ملخصًا (17)قصص الانبیاء للکسائی، ص155ملخصًا(18)قصص الانبیاء للکسائی ص 176، 177 ملخصًا(19)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص 111ملخصًا(20)صراط الجنان،5/49بتغیر(21)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص139(22)روح البیان،4/324، یوسف،تحت الآیۃ:100 (23)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص102۔ النبوۃ و الانبیا للصابونی، ص 258 (24)قصص الانبیاء،لابن کثیر، ص 285(25)تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص102

(26) النبوۃ والانبیاء للصابونی، ص259 । सब से पहले बैतुल मुक़द्दस की बुन्याद किस ने रखी ? इस बारे में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल मिलते हैं कि उस की बुन्याद मलाएका ने या ह़ज़रते आदम ने या साम बिन नूह ने या फिर ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِمُ السَّلَام ने रखी थी। ह़ज़रते दाऊद और ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِمَا السَّلَام ने उन ही बुन्यादों पर उस की तामीरे नौ की थी। (الانس الجلیل،1/71)

# ग़ौसे पाक और इ़ल्मे ह़दीस

तारीख़े इस्लाम में ऐसे जलीलुल क़द्र औलियाए किराम का रौशन ज़िक्र मिलता है जिन्हों ने दीने मतीन के मुख़्तलिफ़ शोबाजात में अपनी इ़ल्मी बसीरत, अ़मली सीरत और रूहानी तरबियत से ऐसी गिरां क़दर ख़िदमात अन्जाम दीं जो रहती दुनिया तक यादगार रहें। इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या में सय्यिदुना मुहयुद्दीन, ग़ौसुल आज़म, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ का इस्मे गिरामी आफ़्ताब व माहताब की मानिन्द रौशन और ताबनाक है। आप की शख़्सिय्यत इस जामेई़य्यत का पैकर थी जिस में शरीअ़त व त़रीक़त, इ़ल्मो इ़रफ़ान, ज़ोहदो तक़्वा और वाज़ो इरशाद के तमाम पहलू यकजा थे। आप की मजालिसे वाज़ में रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशादाते मुबारका की लफ़्ज़ी तौज़ीह़ के साथ उस के अख़्लाक़ी, रूहानी और मुआशरती पहलूओं को निहायत ह़कीमाना अन्दाज़ में वाज़ेह़ किया जाता।

इमाम शम्सुद्दीन ज़हबी رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ ने ह़ज़रते ग़ौसे आज़म رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ को त़ब्क़ए मुह़द्दिसीन में शुमार फ़रमाया और अपनी किताब "**المعین فی طبقات المحدثین**" में आप का ज़िक्र यूं किया :

"القطب الشیخ الامام عبد القادر بن ابی صالح عبد اللہ بن جنکی دوست الجیلی الحنبلی"।[1]

इमाम ज़हबी رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ "**तारीख़ुल इस्लाम**" में फ़रमाते हैं : ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ ने इ़ल्मे ह़दीस की समाअ़त ह़ज़रते अबू बक्र अह़मद बिन मुज़फ़्फ़र तमार, ह़ज़रते अबू ग़ालिब बाक़लानी, ह़ज़रते अबुल क़ासिम बिन बयान रज़ाज़, ह़ज़रते अबू मुह़म्मद जाफ़र सिराज, ह़ज़रते अबू सअ्द बिन ख़शीश और ह़ज़रते अबू त़ालिब बिन यूसुफ़ رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہِم वग़ैरा मुह़द्दिसीन से की। (साह़िबे अन्साब) इमाम अबू सअ़द सम्आ़नी, (साह़िबे मुग़नी) इमाम ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ग़नी मुक़द्दसी और इमाम मुवफ़्फ़िक़ुद्दीन इब्ने क़ुदामा ह़म्बली رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہِم वग़ैरा जलीलुल क़द्र मुह़द्दिसीन ने आप से अह़ादीस को सुना है।[2]

क़लाइदुल जवाहिर में है कि मुहयुस्सुन्नह वद्दीन ह़ज़रते अ़ब्दुल क़ादिर बिन अबू सालेह़ जीलानी जब बग़दाद तशरीफ़ ले गए तो आप ने वहां जा कर इ़ल्मे ह़दीस पढ़ा और उस में कमाल ह़ासिल किया। आप इ़ल्मे ह़दीस, फ़िक़्ह, वाज़ और उ़लूमे ह़क़ाइक़ में यदे तूला रखते थे।[3]

अदीबे शहीर ह़ज़रते शम्स बरेलवी رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ ज़िक्र करते हैं : ह़दीस शरीफ़ पर ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ की ज़र्फ़ निगाही (दिक़्क़त नज़र) का येह आ़लम था कि आप के असातिज़ए किराम (ह़दीस की) सनद देते वक़्त फ़रमाया करते थे : ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ! हम तुम को अल्फ़ाज़े ह़दीस की सनद दे रहे हैं वरना ह़दीस के मआ़नी में तो हम तुम से इस्तिफ़ादा करते हैं क्यूंकि बाज़ अह़ादीस के मत़ालिब जो तुम ने बयान किये हैं उन तक हमारी फ़हम की रसाई नहीं थी।[4]

ह़ज़रते ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ अपनी वाज़ की मजालिस में कभी अह़ादीसे नबविय्या ज़िक्र करते और उन की शर्ह़ और वज़ाह़त की रौशनी में लोगों को वाज़ो नसीह़त फ़रमाते चुनान्चे,

**दिल का संवरना और बिगड़ना** ह़दीसे पाक में है : "आदमी के जिस्म में गोश्त का एक टुकड़ा है जब वोह संवर जाता है तो उस की वज्ह से उस का सारा बदन संवर जाता है और जब वोह बिगड़ जाता है तो सारा बदन बिगड़ जाता है सुनो ! वोह दिल है।"[5] इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में ह़ुज़ूर ग़ौसे आज़म رَحۡمَۃُاللہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : दिल का संवरना और परहेज़गारी और

अल्लाह पाक की ज़ात पर तवक्कुल उस की वह़दानिय्यत और आमाल में इख़्लास पैदा करने से है और उस का बिगड़ना इन उमूर के न होने से है तो दिल बदन के पिन्जरे में एक परिन्दा है तो एतिबार परिन्दे का है पिन्जरे का नहीं है।[6]

**एक मोमिन दूसरे मोमिन का आईना** ह़दीसे पाक में है : "एक मोमिन दूसरे मोमिन का आईना है।"[7] इस ह़दीसे पाक को ज़िक्र कर के ह़ज़रते ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मुसलमान अपने मुसलमान भाइयों को नसीह़त करता है और उस का सच्चा ख़ैर ख़्वाह होता है। इन बातों को ज़ाहिर कर देता है जो इस पर मख़्फ़ी होती हैं और उस की ख़ूबियों और बुराइयों को जुदा कर देता है। इस को नफ़ा और नुक़्सान देह चीज़ों की पहचान करवा देता है। पाक है वोह ज़ात जिस ने मेरे दिल में मख़्लूक़ की ख़ैर ख़्वाही डाल दी है और उस को मेरा मक़्सूदे आज़म बना दिया। मैं ख़ैर ख़्वाह हूं इस पर बदला नहीं चाहता। मेरी उजरत अल्लाह पाक के हां है जो मुझे मिलनी है। मैं दुनिया आख़िरत का त़ालिब नहीं हूं। मैं दुनिया या आख़िरत का बन्दा नहीं मासिवा अल्लाह के मैं तो सिर्फ़ अल्लाह पाक की बन्दगी और इ़बादत करता हूं जो ख़ालिक़, यक्ता और वाह़िद और क़दीम है। तुम्हारी फ़लाह़ में मेरी ख़ुशी है और तुम्हारी हलाकत में मेरा ग़म है। जब मैं अपने सच्चे मुरीद का चेहरा देखता हूं जिस ने मेरे हाथों पर फ़लाह़ ह़ासिल की है तो मैं सैर और सैराब हो जाता हूं और येह देख कर ख़ुश हो जाता हूं।[8]

**मुत्तक़ी ह़ज़रात तकल्लुफ़ से बरी हैं** ह़दीसे पाक में है : "मैं और मेरी उम्मत के मुत्तक़ी तकल्लुफ़ से बरी हैं।"[9] इस ह़दीसे पाक को ज़िक्र कर के ह़ज़रत ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने मद्रसए क़ादिरिय्या में लोगों को वाज़ो नसीह़त करते हुए फ़रमाया : मुत्तक़ी शख़्स अल्लाह पाक की इ़बादत में तकल्लुफ़ नहीं करता क्यूंकि इ़बादते ख़ुदावन्दी तो उस की त़बीअ़त बन जाती है। मुत्तक़ी शख़्स अल्लाह पाक की इ़बादत ज़ाहिरो बात़िन से करता है लेकिन मुनाफ़िक़ शख़्स तो हर हालत में तकल्लुफ़ ही करता है और बिलख़ुसूस अल्लाह पाक की इ़बादत में और इ़बादत को ज़ाहिर में बतकल्लुफ़ अदा करता है और बात़िन में उस को छोड़ देता है।[10]

**बरकत अकाबिरीन के साथ है** ह़दीसे पाक में है : "**बरकत तुम्हारे बड़ों में है।**"[11] ह़ज़रत ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से मुराद मह़ज़ उ़म्र की बड़ाई नहीं है बल्कि उ़म्र की बड़ाई के साथ अह़कामाते इलाही की तामील और मम्नूआ़त से बाज़ रहना मुराद है और किताबो सुन्नत और तक़्वा को लाज़िम पकड़ना है। ह़क़ीक़त में अल्लाह पाक और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करने वाला ही बड़ा है और कितने ही लोग उ़म्र के एतिबार से बूढ़े हैं कि जिन की ताज़ीम करना और उन्हें सलाम करना भी जाइज़ नहीं है और उन के देखने में बरकत भी नहीं है। बड़े लोग वोही हैं जो मुत्तक़ी, सालेह़, परहेज़गार, इ़ल्म पर अ़मल करने वाले और अ़मल में इख़्लास करने वाले हैं। बड़े लोग वोही हैं जिन के दिल साफ़ सुथरे हैं और वोह मासिवा अल्लाह से एराज़ करने वाले हैं। बड़े लोग वोही अहले दिल हैं जो कि अल्लाह पाक की मारिफ़त रखने वाले हैं और अल्लाह पाक के लिये अ़मल करते हैं और उस के क़रीब हैं।[12]

**मुनाफ़िक़ की पहचान** ह़दीसे पाक में है : मुनाफ़िक़ जब गुफ़्तगू करता है तो झूट बोलता है और जब वादा करता है तो वादए ख़िलाफ़ी करता है और उस के पास अमानत रखी जाती है तो अमानत में ख़यानत करता है।[13] ह़ज़रत ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक को ज़िक्र करने के बाद मुनाफ़िक़ की पहचान के बारे में फ़रमाते हैं : येह तीन ख़स्लतें मुनाफ़िक़ शख़्स में मौजूद होती हैं जो कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़िक्र फ़रमाई हैं और जो शख़्स इन तीन ख़स्लतों से बरी हुवा वोह यक़ीनन निफ़ाक़ से बरी हुवा। येह ख़स्लतें कसौटी हैं और ईमान और निफ़ाक़ वालों के दरमियान फ़र्क़ व जुदाई करने वाली हैं तू भी उस कसौटी को ले। येह आईना ले कर उस में अपने दिल के चेहरे को देख और ग़ौर से देख कि आया तू मोमिन है या मुनाफ़िक़। मुवह़्ह़िद है या मुशरिक।[14]

---

(1) المعین فی طبقات المحدثین، ص169 (2) تاریخ الاسلام، 39/87 (3) قلائد الجواہر، ص8 (4) غنیۃ الطالبین مترجم، سوانح حضرت سیدنا غوث اعظم، ص12، حیات المعظم فی مناقب غوث اعظم، ص46 (5) بخاری، 1/33، حدیث: 52 (6) الفتح الربانی، المجلس الاول، ص15 (7) ابوداؤد، 4/365، حدیث: 4918 (8) الفتح الربانی، المجلس السادس، ص38 (9) ابن عساکر، 35/277 بتغیر قلیل (10) الفتح الربانی، المجلس العاشر، ص45 (11) ابن حبان، 1/385، حدیث: 560 (12) الفتح الربانی، المجلس العاشر، ص47 (13) بخاری، 1/24، حدیث: 33 (14) الفتح الربانی، المجلس الثانی والعشرون، ص84۔

# सौ साला उर्से मुबारक ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत मौलाना सय्यिद
# अह़मद अशरफ़ رحمۃ اللہ علیہ किछौछवी

ख़लीफ़ा व तिल्मीज़े आला ह़ज़रत, सुल्तानुल वाइ़ज़ीन अ़ल्लामा सय्यिद अबुल मह़मूद अह़मद अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी किछौछवी एक जय्यिद आ़लिमे दीन, माहिरे माक़ूलो मन्क़ूल, मद्रसए अशरफ़िया किछौछा शरीफ़ के उस्ताज़, सेहरबयान ख़तीब, मादरज़ाद वली, साह़िबे करामात, ह़ज़ारों मुरीदों के शैख़े त़रीक़त और आस्तानए आ़लिया अशरफ़िया हसनिय्या किछौछा शरीफ़, ज़िला अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश, हिन्द के जानशीन थे। आप ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के पैकर और अख़्लाक़े ह़स्ना से मुत्तसिफ़ थे। सारी ज़िन्दगी बेलौस इशाअ़ते दीने मतीन के लिये कमर बस्ता रहे। आप का विसाल 15 रबीउ़ल आख़िर 1347 हि. को हुवा। इस साल रबीउ़ल आख़िर 1447 हि. को आप के विसाल को एक सदी मुकम्मल हो रही है। इसी मौक़अ़ पर आप का मुख़्तसर तआ़रुफ़ पेश किया जा रहा है।

**पैदाइश, नाम और अल्क़ाबात** आप का नाम **अह़मद अशरफ़**, कुन्यत **अबुल मह़मूद** और अल्क़ाबात **सुल्त़ानुल वाइ़ज़ीन, आ़लिमे रब्बानी, शैख़े त़रीक़त और मुनाज़िरे इस्लाम** हैं। आप की विलादत 4 शव्वाल 1286 हि. मुत़ाबिक़ 7 जनवरी 1870 ई. को आस्तानए आ़लिया किछौछा शरीफ़ में हुई। विलादत से क़ब्ल ही आप के वालिदे गिरामी को ग़ौसुल आ'ज़म सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ने एक बाकमाल फ़रज़न्द की ख़ुशख़बरी दी थी।

**आबाओ अज्दाद** आप के वालिदे गिरामी **शैख़ुल मशाइख़, शबीहे ग़ौसुल आ'ज़म पीर सय्यिद अ़ली ह़ुसैन अशरफ़ी** थे और आप के ताया व ससुर अशरफ़ुल औलिया **पीर सय्यिद अशरफ़ ह़ुसैन अशरफ़ी** थे। इस ख़ानवादे के जद्दे आला ह़ज़रते सय्यिद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ नूरुल ऐ़न (ख़लीफ़ए आ'ज़म व जानशीने सुल्त़ानुल औलिया मख़्दूम सय्यिद अशरफ़ जहांगीर समनानी, बानिये ख़ानक़ाह किछौछा मुक़द्दसा) हैं। आप का सिल्सिलए नसब दस वासित़ों से ह़ुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी से जा मिलता है।

**तालीमो तरबियत** जब आप की उ़म्र चार साल चार माह चार दिन हुई तो ख़ानदानी रिवायत के मुत़ाबिक़ बिस्मिल्लाह ख़्वानी का एहतिमाम शानो शौकत से किया गया। येह सआ़दत ग़ौसे ज़माना ह़ज़रते अ़ल्लामा आले अह़मद फुलवारवी मुह़द्दिस बिहारी (मदफ़ून जन्नतुल बक़ीअ़) को ह़ासिल हुई। इब्तिदाई तालीम आप ने घर पर ह़ासिल की, फिर आला तालीम के लिये बरेली शरीफ़ ह़ाज़िर हुए। वालिदे गिरामी आप को ले कर आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान की ख़िदमत में पहुंचे और फ़रमाया : ग़ौसुस्सक़लैन के इस पोते को आप पढ़ा दें। आप ने वहां शाबान 1301 हि. मुत़ाबिक़ जून 1884 ई. तक तालीम ह़ासिल की। बाद अज़ां गोरखपूर में उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते मौलाना अबुल ख़ैर मुई़नुद्दीन इलाहाबादी से इक्तिसाबे इ़ल्म किया। 1302 हि. में दारुल उ़लूम कानपूर में उस्ताज़े ज़मन अ़ल्लामा अह़मद ह़सन कानपूरी के शागिर्द बने और माक़ूलात में महारत ह़ासिल की। 1307 हि. में जब उस्ताज़े ज़मन ह़ज के लिये रवाना हुए तो उन्हों ने आप को उस्ताज़ुल कुल मुफ़्ती लुत़्फ़ुल्लाह अ़लीगढ़ी के सिपुर्द किया। आप ने बक़िय्या दर्सी कुतुब की तक्मील उन ही से की। क़ियामे अ़लीगढ़ के दौरान 1310 हि. में ख़्वाब में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई। इसी ख़्वाब में ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप के सरे मुबारक पर दस्तार बांधी।

**बैअ़तो ख़िलाफ़त** ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी में ही आप ने

अपने वालिदे माजिद के दस्ते ह़क़ परस्त पर 23 रमज़ानुल मुबारक 1309 हि. को बैअ़त की। 1327 हि. में वालिदे गिरामी ने आप को अपना वलीये अ़हद व जानशीन मुक़र्रर फ़रमाया। आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ने भी आप को ख़िलाफ़त से नवाज़ा। यूं आप शागिर्द व ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत होने का शरफ़ रखते हैं। आला ह़ज़रत को इस ख़ानदान से बेपनाह मह़ब्बतो अ़क़ीदत थी। एक बार आप ने अपने भांजे, दामाद और ख़लीफ़ा मुह़द्दिसे आज़मे हिन्द सय्यिद मुह़म्मद किछौछवी (उस वक़्त वोह त़ालिबे इ़ल्म थे) के बारे में फ़रमाया : **मैं चाहता हूं कि हुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िर करूं, हुज़ूर जो मुनासिब फ़रमाएं उन से काम लें।** आला ह़ज़रत ने जवाब दिया : **ज़रूर तशरीफ़ लाएं, यहां फ़तवे लिखें और मद्रसे में दर्स दें। सय्यिद मुह़म्मद अशरफ़ी मेरे शहज़ादे हैं, मेरे पास जो कुछ है वोह उन के जद्दे अम्जद (हुज़ूर ग़ौसे पाक) का सदक़ा है।** आला ह़ज़रत ने अपने ख़ुलफ़ा का ज़िक्र एक नज़्म में किया और आप के बारे में येह शेर फ़रमाया : **अह़मद अशरफ़ ह़म्द व शरफ़ ले... इस से ज़िल्लत पाते येह हैं।**

**दर्सो तदरीस और ख़ित़ाबत** आप मुतबह़्ह़िर आ़लिमे दीन, इ़ल्म दोस्त और साहिबे फ़रासत थे, तालीम की तक्मील के बाद आप वालिदे गिरामी के क़ाइम कर्दा मद्रसए अशरफ़िया किछौछा शरीफ़ में तदरीस और इन्तिज़ामात में मसरूफ़ हो गए। आप का ख़्वाब था कि उसे जामिआ़ अज़्हर, क़ाहिरा की त़रह़ अ़ज़ीम इदारा बनाया जाए। आप वाज़ो तब्लीग़ के लिये मुख़्तलिफ़ शहरों का सफ़रत करते। आप की ख़ित़ाबत में ऐसा असर था कि आप को **सुल्त़ानुल वाइ़ज़ीन** कहा गया। आप के वाज़ क़ुरआनो ह़दीस, इरशादाते सह़ाबा व अहले बैत और अक़्वाले बुज़ुर्गान से मुज़य्यन होते। अन्दाज़ इतना दिलकश और दिलफ़रेब होता कि सामईन बे इख़्तियार अ़श अ़श कर उठते। अ़ल्लामा ह़सनैन रज़ा ख़ान फ़रमाते हैं : **वोह आला ह़ज़रत के अरशद तलामिज़ा में से थे, उन जैसा शीरीं बयान वाइ़ज़ फिर न देखा, उन्हों ने थोड़ी सी उ़म्र में दीन की बड़ी ख़िदमतें अन्जाम दीं, जवानी में विसाल फ़रमाया, आला ह़ज़रत उन्हें अक्सर याद फ़रमाते थे।**

**तस्नीफ़ात** आप ने आला ह़ज़रत के क़सीदए मेराजिया की एक उ़म्दा शर्ह़ तह़रीर फ़रमाई। इसी त़रह़ एक रिसाला اَلدَّلَائِلُ الْوَاضِحه فِی اِثْبَاتِ الْفَاتِحَه के नाम से लिखा, जो मुख़ालिफ़ीन के एतिराज़ात के जवाब में मुरत्तब किया गया। उसे सम्नान प्रेस, अक्बरपूर ने 31 सफ़ह़ात पर शाएअ़ किया।

**निकाह़ व औलाद** आप का निकाह़ अपने तायाजान पीर सय्यिद अशरफ़ ह़ुसैन अशरफ़ी जीलानी किछौछवी की साहिबज़ादी से हुवा। औलाद में तीन साहिबज़ादियां और दो साहिबज़ादे हुए। बड़ी साहिबज़ादी की शादी अच्छे मियां ह़ज़रते सय्यिद मुह़युद्दीन अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी से हुई। दूसरी की शादी मुह़द्दिसे आज़मे हिन्द अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद किछौछवी से हुई। तीसरी की शादी मौलाना सय्यिद त़ुफ़ैल अशरफ़ जीलानी से हुई। बड़े साहिबज़ादे सय्यिद मह़मूद अशरफ़ दो साल आठ माह की उ़म्र में चेचक के बाइ़स इन्तिक़ाल कर गए। उन्ही की निस्बत से आप की कुन्यत अबुल मह़मूद हुई। दूसरे साहिबज़ादे सरकारे कलां, मख़्दूमुल मशाइख़ पीर सय्यिद मुख़्तार अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी किछौछवी आप के विसाल के बाद सज्जादा नशीन हुए। उन का विसाल 9 रजब 1417 हि. को हुवा। उन के जानशीन शैख़े आज़म पीर सय्यिद इज़्हार अशरफ़ अशरफ़ी हुए जिन का विसाल 29 रबीउ़ल अव्वल 1433 हि. को हुवा। उन के बाद पीर सय्यिद मह़मूद अशरफ़ अशरफ़ी जीलानी मन्सबे सज्जादा नशीन पर फ़ाइज़ हुए।

**विसाल व तदफ़ीन** आप मरज़े इस्हाल व त़ाऊ़न में मुब्तला हुए और बह़ालते नमाज़े मग़रिब 15 रबीउ़ल आख़िर 1347 हि. मुत़ाबिक़ 30 सितम्बर, बरोज़ इतवार विसाल फ़रमा गए। नमाज़े जनाज़ा वालिदे गिरामी ने पढ़ाई। इस मौक़अ़ पर आप ने फ़रमाया : **मैं कई बुज़ुर्गों के जनाज़ों में शरीक हुवा हूं मगर इस क़दर हुजूम और इस शान का जनाज़ा कभी नहीं देखा।** आप की तदफ़ीन आस्तानए आ़लिया किछौछा शरीफ़ में सुल्त़ानुल औलिया मख़्दूम सय्यिद अशरफ़ जहांगीर समनानी के मज़ार मुक़द्दस के क़रीब नीर शरीफ़ के जुनूबी किनारे हुई। आप की तुर्बत के एक त़रफ़ तायाजान पीर सय्यिद अशरफ़ ह़ुसैन अशरफ़ी और दूसरी त़रफ़ वालिदे गिरामी पीर सय्यिद अ़ली ह़ुसैन अशरीफ़ी की तुर्बत है।

---

**मज़ीद तफ़्सीलात के लिये देखिये :** मआ़रिफ़े सय्यिद अह़मद अशरफ़ किछौछवी, अज़ शब्बीर अह़मद राज मह़ली, ह़यात मख़्दूमुल औलिया, स. 439 ता 452- मआ़रिफ़े शैख़े आज़म, 1/75 ता 81 – सीरते अशरफ़ी, स. 121 ता 131- फ़तावा रज़विय्या, 20/343-21/484- मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 141- अल इस्तिम्दाद अ़ला अजयालुल इर्तिदाद, स. 68 – सीरते आला ह़ज़रत, स. 117- तफ़्सीरे मीज़ानुल अदयान, 1/41,42 ।

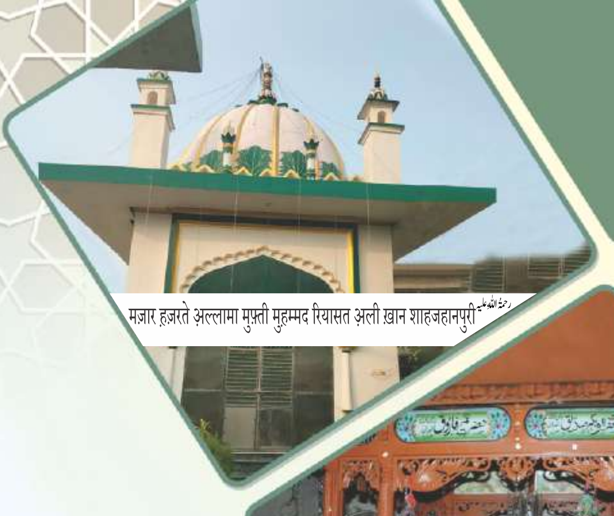

मज़ार हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद रियासत अ़ली ख़ान शाहजहानपुरी رحمۃ اللہ علیہ

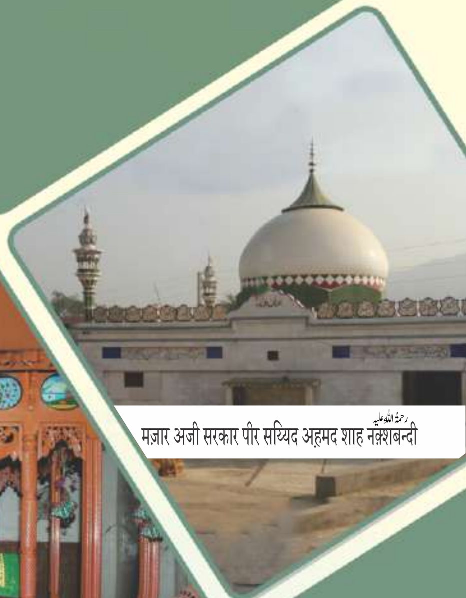

मज़ार अज़ी सरकार पीर सय्यिद अहमद शाह नक़्शबन्दी رحمۃ اللہ علیہ

मज़ार पीर सय्यिद सख़ी बचल शाह सानी رحمۃ اللہ علیہ

# अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

रबीउ़ल आख़िर इस्लामी साल का चौथा महीना है। इस में जिन औलियाए किराम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल हुवा, उन में से 12 का तआ़रुफ़ मालुहज़ा फ़रमाइये :

**उ़लमाए इस्लाम** رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام

**1** इमाम सुलैमान बिन ह़र्ब वासिह़ी बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत माहे सफ़र सिन 140 हि. में हुई। आप इमाम शोबा बिन ह़जाज और इमाम ह़म्माद बिन ज़ैद जैसे मुह़द्दिसीन के शागिर्द और कसीरुल फ़ैज़ थे। एक मरतबा आप के लिये इम्ला की मजलिस मुन्अ़क़िद की गई जिस में ह़ाज़िरीन की तादाद (तक़रीबन) 40 हज़ार थी। आप का विसाल माहे रबीउ़ल आख़िर 224 हि. को बसरा में हुवा।(1)

**2** ह़ाकिम शहीद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद मरवज़ी बल्ख़ी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मुह़द्दिसुल अ़सर, शैख़ुल ह़नफ़िया, क़ाज़ी व वज़ीर, किताबुल काफ़ी के मुसन्निफ़, साह़िबे ज़ोहदो तक़्वा और मक़्बूले ख़ासो आ़म थे। आप ने बह़ालते सज्दा रबीउ़ल आख़िर 334 हि. में शहादत पाई।(2)

**3** इमाम इब्ने ख़मीस हुसैन बिन नसर मूसली शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 466 हि. में हुई, आप ज़हीनो फ़तीन, मुह़द्दिस व क़ाज़ी, इमामुल उ़लमा, मुसन्निफ़े कुतुब, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर और साह़िबे वक़ार आ़लिमे दीन थे। 9 रबीउ़ल आख़िर 552 हि. को विसाल फ़रमाया।(3)

**4** मुह़द्दिसुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम फ़ख़रुद्दीन अबुल ह़सन अ़ली बिन अह़मद मुक़द्दसी सालिही ह़म्बली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 595 हि. को एक इ़ल्मी घराने में हुई और आप ने रबीउ़ल आख़िर 690 हि. में विसाल फ़रमाया। आप आ़लिम व फ़क़ीह, फ़ाज़िल व अदीब, मुस्नदुल आ़लिम, साह़िबे वक़ार व हैबत, तक़्वा व वरअ़ के पैकर और इ़ल्मो अ़क़्ल में कामिल थे। अ़र्सए दराज़ तक ख़िदमते क़ुरआनो सुन्नत में मसरूफ़ रहे, शाम, मिस्र और इ़राक़ के मुह़द्दिसीन ने आप से इस्तिफ़ादा किया।(4)

**5** मराग़ी कबीर ह़ज़रते अबू ह़फ़्स उ़मर बिन ह़सन माराग़ी मिज़्ज़ी दिमश्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 8 रजब 679 या 680 हि. को मिज़्ज़ह, दिमश्क़ में हुई और 8 रबीउ़ल आख़िर 778 हि. को मराग़ी दिमश्क़, शाम में विसाल फ़रमाया। आप मुह़द्दिस व

क़ारी, मुस्नदुश्शाम, मर्जअ़ फ़ुक़हा व मुह़द्दिसीन और अकाबिरीने अहले सुन्नत से थे। आप से इस्तिफ़ादा करने वालों की तादाद कसीर है, مشیخۃ الامام ابی حفص عمر المراغی आप की अस्नाद का मज्मूआ़ है।[5]

6 मुस्तफ़्तिए आला ह़ज़रत अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद रियासत अ़ली ख़ान शाहजहानपुरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ शागिर्द व ख़लीफ़ा ताजुल मुह़द्दिसीन अ़ल्लामा इरशाद हुसैन रामपुरी, मुसन्निफ़े कुतुब, शैख़े त़रीक़त और अहले सुन्नत के जलीलुल क़द्र आ़लिमे दीन थे। आप का हाशिया तफ़्सीरे जलालैन बनाम "ज़लालैन" यादगार है। आप का विसाल 22 रबीउ़ल आख़िर 1349 हि. को हुवा, तदफ़ीन शाहजहानपूर, यूपी हिन्द में की गई।[6]

7 ह़ज़रते मौलाना क़ाज़ी नूरुल ह़क़ चिश्ती رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ 1333 हि. को ढाब कलां के इ़ल्मी घराने में पैदा हुए, उन की शोहरत अपने दादा पीर क़ाज़ी अ़ब्दुल ह़लीम से थी, आप ने दर्से निज़ामी के बाद फ़ौज में बत़ौरे ख़त़ीब ख़िदमात सरअन्जाम दीं फिर कई स्कूल्ज़ में टीचर रहे, आप का फ़तवा अ़लाक़े में सनद रखता था। आप की बैअ़त शैख़ुल इस्लाम ख़्वाजा क़मरुद्दीन सियालवी से थी। विसाल 6 रबीउ़ल आख़िर 1402 हि. को हुवा, तदफ़ीन मज़ार बावा मख़्दूम साहिब से मुत्तसिल की गई।[7]

## औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام

8 पीर सय्यिद सख़ी बचल शाहसानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ साहिबे जूदो सख़ा, सिल्सिलए क़ादिरिय्या के शैख़े त़रीक़त, साहिबे फ़ैज़ और मक़्बूले ख़ास व आ़म थे। आप का विसाल 29 रबीउ़ल आख़िर 1310 हि. को हुवा, तदफ़ीन पर दादा पीर सय्यिद अ़ली अस़्ग़र शाह जीलानी के पहलू में हुई।

9 अजी सरकार पीर सय्यिद अह़मद शाह नक़्शबन्दी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ तक़रीबन 1223 हि. में पैदा हुए और 27 रबीउ़ल आख़िर 1315 हि. को विसाल फ़रमाया। आप आस्तानए नक़्शबन्दिया में मुरीदो ख़लीफ़ा, कसीरुल फ़ैज़ और सादगी के पैकर थे। ख़लीफ़ए पीर सियाल ख़्वाजा सय्यिद महताब शाह ख़लख़ाली उन्हीं के फ़रज़न्द हैं।[8]

10 पीरे त़रीक़त मौलाना सय्यिद बशीर हुसैन अ़लीपूरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की पैदाइश 1339 हि. को हुई और 28 रबीउ़ल आख़िर 1396 हि. को विसाल फ़रमाया। आप अमीरे मिल्लत के पोते, मुरीदो ख़लीफ़ा, हाफ़िज़े क़ुरआन, फ़ारिग़ुत्तह़सील आ़लिमे दीन, मुबल्लिग़े इस्लाम और दरवेश सिफ़त बुज़ुर्ग थे।[9]

11 सूफ़िये बा सफ़ा सूफ़ी मुबारक अ़ली औज चिश्ती साबिरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ, आप ने सूफ़ी मुह़म्मद सिद्दीक़ साइर चिश्ती हाफ़िज़ाबादी से बैअ़त व फ़ैज़ पाया और 12 रबीउ़ल आख़िर 1417 हि. को विसाल फ़रमाया।[10]

12 सूफ़ी ख़्वाजा बाबा फ़रीद अ़ली हाशिमी ह़सनी उ़मरी शाह सरकार رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ सिल्सिलए आ़लिया जहांगीरिया अबुल उलाइय्या के शैख़े त़रीक़त थे, एक मस्जिद में कभी कभी ख़ुत़्बा जुमुआ भी देते थे, कई लोग आप के दस्ते हिदायत पर ताइब हुए, आप ने 13 रबीउ़ल आख़िर 1417 हि. को विसाल फ़रमाया।

---

(1) اسامی شیوخ البخاری للصغانی، ص120 (2) الفوائد البہیہ فی طبقات الحنفیہ، ص243 (3) وفیات الاعیان، 2/118- سیر اعلام النبلاء، 15/89 (4) شذرات الذھب، 6/79 تا81- تاریخ اسلام للذہبی، 51/665 تا667 (5) معجم الشیوخ سبکی، ص312- الدرر الکامنہ، 3/159، 160- شذرات الذہب، 6/465 (6) مولانا ارشاد حسین مجددی رامپوری، حیات، خدمات، ص28، 31، فتاویٰ رضویہ، 12/445، کتبہ مزار (7) تذکرہ علمائے اہل سنت، ص132، 133 (8) فوز المقال فی خلفائے پیر سیال، 3/840 (9) تذکرۂ خلفائے امیر ملت، ص357 (10) انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام، 3/766

# नए लिखारी
(New Writers)

## मीज़ान का क़ुरआनी बयान

शब्बीर रज़ा
(दर्जए तख़स्सुस फ़िल ह़दीस साल दुवुम, जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना)

दीने इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ाइद में से एक अ़क़ीदा, वज़्ने आमाल भी है कि अल्लाह तआ़ला रोज़े क़ियामत मीज़ान क़ाइम करेगा जिस पर आमाल तोले जाएंगे और हस्बे आमाल नेक लोगों को जज़ा और गुनाहगारों को सज़ा दी जाएगी क़ुरआने पाक में मुतअ़द्दद मक़ामात पर इस का ज़िक्र फ़रमाया गया, चन्द आयात ज़िक्र की जाती हैं :

**मीज़ान ह़क़ है :** अ़क़ीदए मीज़ान पर ईमान लाना वाजिब है और उस की ह़क़्क़ानिय्यत पर क़ुरआने करीम शाहिद है चुनान्चे इरशादे रब्बुल इ़बाद है : ﴿وَالْوَزْنُ يَوْمَىٕذِ الْحَقُّ ۚ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस दिन तोल ज़रूर होनी है। (پ8، الاعراف:8)

जम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़दीक इस आयत में "वज़्न" से मीज़ान के ज़रीए आमाल का वज़्न करना मुराद है।
(خازن، 2/78، الاعراف، تحت الآیۃ:8)

**मीज़ान क़ाइम करने का मक़्सद** क़ियामे मीज़ान का मक़्सद लोगों के माबैन इन्साफ़ क़ाइम करना और हुज्जत तमाम करना है ताकि हर शख़्स अपने आमाल देख ले और इन्कार की कोई गुन्जाइश बाक़ी न रहे चुनान्चे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : ﴿وَنَضَعُ الْمَوَازِیْنَ الْقِسْطَ لِیَوْمِ الْقِیٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَیْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَیْنَا بِهَا ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम अ़द्ल की तराज़ूएं रखेंगे क़ियामत के दिन तो किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न होगा और अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो तो हम उसे ले आएंगे। (پ17، الانبیآء:47)

**मीज़ान की कैफ़िय्यत** मीज़ान की कैफ़िय्यत दुन्यवी तराज़ू की त़रह नहीं होगी जैसे भारी पलड़ा नीचे जाता है और हल्का ऊपर जाता है बल्कि भारी होने पर वोह ऊपर उठेगा, चुनान्चे आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : वोह मीज़ान यहां के तराज़ू के ख़िलाफ़ है वहां नेकियों का पल्ला अगर भारी होगा तो ऊपर उठेगा और बदी का पल्ला नीचे बैठेगा। ﴿اِلَیْهِ یَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّیِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ یَرْفَعُهٗ ؕ﴾ तर्जमा : उसी की त़रफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम और जो नेक काम है वोह उसे बुलन्द करता है। (پ22، فاطر:10- فتاویٰ رضویہ، 29/626)

**मीज़ान को भारी या हल्का करने में बुन्यादी चीज़** मीज़ान के भारी या हल्का होने में सब से बुन्यादी चीज़ ईमान है कि बग़ैर ईमान के आमाल कैसे ही अच्छे क्यूं न हों फ़ाएदा न देंगे और पलड़ा भारी न कर सकेंगे, चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآىٕهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِیْمُ لَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَزْنًا(۱۰۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह लोग हैं जिन्हों ने अपने रब की आयतें और इस का मिलना न माना तो उन का किया धरा सब अकारत (ज़ाएअ़) है तो हम उन के लिये क़ियामत के दिन कोई तोल न क़ाइम करेंगे। (پ16، الکہف:105)

इस आयत की तफ़्सीर में है : येही वोह लोग हैं जिन्हों ने अपने रब की आयात और उस की मुलाक़ात का इन्कार किया, रसूल और क़ुरआन पर ईमान न लाए और मरने के बाद उठाए जाने, ह़िसाब, सवाब और अ़ज़ाब के मुन्किर रहे तो उन के सब आमाल बर्बाद हो गए और उन्हें उन आमाल पर कोई सवाब न मिलेगा।
(सिरातुल जिनान, 6/44)

**भारी पलड़े वालों के लिये ख़ुश्ख़बरी** भारी पलड़े वालों के लिये मुतअ़द्दद ख़ुशख़बरियां क़ुरआने पाक में मज़कूर हुईं, एक मक़ाम पर फ़रमाया : ﴿فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِیْنُهٗ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ(۸)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तो जिन के पलड़े भारी होंगे तो वोही लोग

फ़लाह़ पाने वाले होंगे। (پ8،الاعراف:8) मज़ीद उन की उ़ख़रवी ह़यात की कैफ़िय्यत बयान करते हुए फ़रमाया:

﴿فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِیْنُهٗۙ(۶) فَهُوَ فِیْ عِیْشَةٍ رَّاضِیَةٍؕ(۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जिस की तोलें भारी हुई वोह तो मन मानते ऐ़श में हैं। (پ30،القارعۃ:6،7)

**हल्के पलड़े वालों के लिये वई़द** हल्के पलड़े वालों के लिये भी एक से ज़ाइद मक़ामात पर वई़दात हैं, चुनान्चे इरशाद हुवा :

﴿وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِیْنُهٗ فَاُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فِیْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَۚ(۱۰۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन की तोलें हल्की पड़ीं वोही हैं जिन्होंने अपनी जानें घाटे में डालीं हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। (پ18،المؤمنون:103) और उन के ठिकाने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया :

﴿وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِیْنُهٗۙ(۸) فَاُمُّهٗ هَاوِیَةٌؕ(۹) وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا هِیَهْؕ(۱۰) نَارٌ حَامِیَةٌ۠(۱۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिस की तोलें हल्की पड़ीं वोह नीचा दिखाने वाली गोद में है और तू ने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली एक आग शोले मारती। (پ30،القارعۃ:8تا11)

अल्लाह तआ़ला हमें बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िला अ़ता फ़रमाए और अपने मह़बूब के सदक़े मीज़ाने अ़मल पर रुस्वाई से बचाए। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّین صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मिसालों से तरबियत फ़रमाना

मुह़म्मद ह़सन रज़ा
(दर्जए तख़स्सुस फ़िल ह़दीस जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना)

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते त़य्यिबा इन्सानिय्यत के लिये कामिल नमूना है। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न सिर्फ़ एक अ़ज़ीम राहनुमा और ह़ाकिम थे बल्कि बेहतरीन मुअ़ल्लिम, मुरब्बी और मुस्लेह़ भी थे। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमात का हर पहलू फ़ित़रते इन्सानी से हम आहंग और इस्लाह़े मुआ़शरा के लिये मश्अ़ले राह है। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसे ऐसे अन्दाज़े तरबियत अपनाए जो सादगी, तासीर, फ़हमो फ़िरासत और मह़ब्बत से भरपूर थे। उन्ही में से एक अ़ज़ीम उस्लूब मिसालों के ज़रीए़ तरबियत फ़रमाना है। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मत कि तरबियत एसे अन्दाज़ से फ़रमाई के बात कि बात न सिर्फ़ दिल में उतर जाए बल्कि अ़मलकी सूरत भी इख़्तियार कर ले।उस की कुछ मिसालें पढ़िए :

**1 जल्ती हुई आग और परवाने** एक मरतबा रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी और तुम्हारी मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख़्स आग जला रहा हो और परवाने उस में गिरने लगें और वोह शख़्स उन को रोक रहा हो और वोह बाज़ नहीं आ रहे। मैं तुम्हें दोज़ख़ से बचा रहा हूं और तुम हो कि उस में गिरने को तय्यार हो। (بخاری،4/243،حدیث:6483)

इस मिसाल से आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मत को दोज़ख़ की हौलनाकी से डराया और अपनी मह़ब्बत व शफ़क़त को बयान फ़रमाया।

**2 साफ़ पानी की नहर** एक बार नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم से फ़रमाया : अगर किसी के दरवाज़े पर नहर हो और वोह दिन में पांच बार उस में ग़ुस्ल करे, तो क्या उस के जिस्म पर मैल बाक़ी रहेगा ? अ़र्ज़ की : नहीं। ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येही मिसाल पांच वक़्त की नमाज़ की है, अल्लाह तआ़ला उस के ज़रीए़ गुनाहों को मिटा देता है। (بخاری،1/197،حدیث:528)

इस मिसाल से नमाज़ की अहमिय्यत वाज़ेह़ होती है।

**3 अल्लाह की रह़मत** एक ग़ज़्वे के मौक़े़अ़ पर एक सह़ाबिय्या को अपनी गुमशुदा बच्ची मिली तो वोह ख़ुशी से उसे गले लगाने लगी। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : क्या तुम देखते हो येह मां अपनी बच्ची को आग में फेंक सकती है ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : हरगिज़ नहीं ! आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : अल्लाह पाक अपने बन्दों पर इस मां से भी ज़ियादा मेहरबान है। (مسلم،ص1129،حدیث:6978)

येह मिसाल अल्लाह कि रह़मत को समझाने का ह़सीन अन्दाज़ है।

**4 अच्छा और बुरा साथी** नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अच्छे और बुरे साथी की मिसाल इ़त्र फ़रोश और लोहार जैसी है। इ़त्र फ़रोश से तुम फ़ाएदा उठाओगे या ख़ुश्बू पाओगे और लोहार या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या बदबू देगा। (بخاری،3/567،حدیث:5534)

इस मिसाल के ज़रीए़ आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अच्छी सोह़बत के असरात वाज़ेह़ फ़रमाए।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमात का येह अन्दाज़ हमें सिखाता है कि सिर्फ़ बात कहना काफ़ी नहीं बल्कि अन्दाज़े बयान भी ऐसा हो कि सुनने वाले के दिल में उतर जाए। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मिसालों में ह़िक्मत, मह़ब्बत, आसानी और

तरबियत का बेहतरीन नमूना है। हमें भी अपनी गुफ़्तगू और तरबियत में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस उस्लूब को अपनाना चाहिये।

## जानवरों के हुक़ूक़

अ़ब्दुल अ़हद अ़त्तारी
(दर्जए ख़ामिसा मर्कज़ी जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मदीना)

अल्लाह तआ़ला ने दुनिया को पैदा फ़रमाया और उस को रंग बिरंगे फूलों से सजाया और बेशुमार मख़्लूक़ को उस में बसाया उन्ही मख़्लूक़ में से अल्लाह पाक की एक मख़्लूक़ जानवर भी हैं। अल्लाह पाक ने हर चीज़ को किसी न किसी हिक्मत के तहत पैदा फ़रमाया है, चुनान्चे जानवरों की हिक्मत को बयान करते हुए अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और (उस ने) घोड़े और ख़च्चर और गधे (पैदा किये) ताकि तुम उन पर सुवार हो और येह तुम्हारे लिये ज़ीनत है। (پ14، النحل:8)

जिस त़रह दीगर मख़्लूक़ात के हुक़ूक़ होते हैं इसी त़रह जानवरों के भी हुक़ूक़ होते हैं, उन में से पांच हुक़ूक़ दर्जे ज़ैल हैं :

**1 ज़ुल्म न करना** याद रहे ! जानवरों को ज़ुल्म से बचाना उन के अव्वलीन हुक़ूक़ में से है कि वोह बेज़बान किस से फ़रियाद करेगा, जानवर पर ज़ुल्म की वज्ह से अगर जानवर बद दुआ़ दे तो उस की बद दुआ़ मक़्बूल होती है, चुनान्चे मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मज़्लूम जानवर बल्कि मज़्लूम काफ़िर व फ़ासिक़ की भी दुआ़ क़बूल होती है, अगर्चे मुसलमान मज़्लूम की दुआ़ ज़ियादा क़बूल है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 3/300)

**2 मुश्किल व परेशानी से नजात दिलाना** मुसीबत व परेशानी हर ह़ाल में उस बेज़बान मख़्लूक़ की मदद करनी चाहिये येह मदद बख़्शिश का ज़रीआ़ भी बन सकती है। चुनान्चे नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिलनशीन है : एक फ़ाहिशा औ़रत की सिर्फ़ इस लिये मग़्फ़िरत कर दी गई कि उस का गुज़र एक हांपते प्यासे कुत्ते के पास से हुवा, क़रीब था कि वोह शिद्दत प्यास से मर जाता उस ने मोज़ा उतार कर दोपट्टे से बांधा और पानी निकाल कर पिलाया इस वज्ह से उस की बख़्शिश हो गई। (بخاری، 2/409، حدیث:3321)

**3 रह़मतो शफ़्क़त करना** इन्सान को चाहिये कि हर जानदार जिस से ज़रर का अन्देशा न हो उस से भलाई करे, उस की एक मिसाल नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक अ़मल से मुलाह़ज़ा कीजिये : नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक हिरनी के पास से गुज़रे जो पिंजरे में क़ैद थी उस ने आप عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रियाद की, कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरा दूध पीता बच्चा है, आप मुझे आज़ाद फ़रमा दें ताकि मैं अपने बच्चे को दूध पिला आऊं तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं पिंजरे वाले की ग़ैर मौजूदगी में तुम्हें कैसे आज़ाद कर दूं : तो हिरनी ने कहा : आप मुझे आज़ाद कर दें मैं लौट आऊंगी तो (हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने रह़म फ़रमाते हुए) उसे आज़ाद फ़रमा दिया और वहीं तशरीफ़ फ़रमा रहे, ह़त्ताकि वोह हिरनी वापस लौट आई, प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पिंजरे वाले से उस की आज़ादी की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई तो उस शख़्स ने हिरनी को आज़ाद कर दिया। (دیکھئے: شرف المصطفیٰ، 3/406، حدیث:1148)

**4 वक़्त पर खाना देना** जानवर जिस शख़्स की कफ़ालत में हैं तो उस शख़्स पर उन जानवरों को वक़्त पर खाना देना ज़रूरी है, चुनान्चे एक रिवायत में आता है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबा को मुख़ात़ब कर के (एक ऊंट की त़रफ़ इशारा करते हुए) इरशाद फ़रमाया : येह ऊंट मुझे शिकायत करता है कि इसे चारा कम दिया जाता है और इस से काम ज़ियादा लिया जाता है। (الشفاء، 1/312)

**5 बर वक़्त इ़लाज करना** इन्सान हों या ह़ैवान उन से हमदर्दी करते हुए उन का इ़लाज करना फ़ित़री और दीनी फ़रीज़ा है और येह हमारे बुज़ुर्गाने दीन का मामूल रहा है। चुनान्चे मन्क़ूल है कि ह़ज़रते अह़मद कबीर रिफ़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने एक ख़ारिश ज़दा कुत्ते को देखा जिसे बस्ती वालों ने बाहर निकाल दिया था आप उसे जंगल ले गए, उस पर साइबान बनाया, उसे खिलाते पिलाते रहे, ह़त्ताकि जब वोह कुत्ता तन्दुरुस्त हो गया तो आप ने उसे गर्म पानी से नहला कर साफ़ सुथरा कर दिया। (देखिये : शाने रिफ़ाई, स. 5)

अल्लाह पाक से दुआ़ है कि वोह हमें मुसलमानों के हुक़ूक़ के साथ साथ जानवरों के हुक़ूक़ का भी ख़याल रखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आओ बच्चो ! ह़दीसे रसूल सुनते हैं

# घर वालों को सलाम करो, बरकत पाओ !

हमारे प्यारे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से फ़रमाया : يَا بُنَيَّ إِذَا دَخَلْتَ عَلَى أَهْلِكَ فَسَلِّمْ يَكُونُ بَرَكَةً عَلَيْكَ وَعَلَى أَهْلِ بَيْتِكَ यानी ऐ मेरे बेटे ! जब तुम अपने घर वालों के पास जाओ तो सलाम करो, येह तुम्हारे और तुम्हारे घर वालों के लिये बरकत का बाइ़स होगा। (دیکھیے: ترمذی، 4/320، حدیث: 2707)

दीने इस्लाम ज़िन्दगी के हर मुआ़मले में हमारी राहनुमाई करता है। चाहे वोह इ़बादत हो, दूसरों से मेलजोल हो, या घर में आने जाने के आदाब हों, दीने इस्लाम हर बात सादा और ख़ूबसूरत अन्दाज़ में सिखाता है। हमारा एक छोटा सा अ़मल, जैसे घर में दाख़िल होते वक़्त सलाम करना, हमारे घर को मह़ब्बत और सुकून से भर सकता है। येह ह़दीस हमें बताती है कि किस त़रह़ अपने घर में ख़ुशी और बरकत ला सकते हैं।

इस ह़दीसे पाक में तीन चीज़ों के बारे में बताया गया है : ✿ सलाम करने की अहमिय्यत ✿ घर में दाख़िल होने के आदाब और ✿ घर में बरकत लाने का वज़ीफ़ा।

सलाम एक दुआ़ है, इस से अम्न ख़ैर और बरकत नाज़िल होती है, सलाम करना हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़रीक़ा व अन्दाज़ है, इस पर अ़मल कर के हम अपने नबी की सुन्नत पर अ़मल कर सकते हैं।

**घर में दाख़िल होने के आदाब :** ✿ दरवाज़ा आहिस्ता से इस त़रह़ खटखटाएं कि घर वालों को पता चल जाए कि कोई दरवाज़े पर आया है ✿ दरवाज़ा बार बार और ज़ोर से बजा कर घर वालों को परेशान न करें ✿ एक बार खटाखटाने के बाद दरवाज़ा खुलने का इन्तिज़ार करें ✿ जब दरवाज़ा खुल जाए तो पहले सीधा क़दम दाख़िल करें और येह दुआ़ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَ بِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَ عَلَى رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

यानी ऐ अल्लाह पाक ! मैं तुझ से दाख़िल होने की और निकलने की भलाई मांगता हूं, अल्लाह पाक के नाम से हम (घर में) दाख़िल हुए और उसी के नाम से बाहर आए और अपने रब्बे करीम पर हम ने भरोसा किया। (ابوداؤد، 4/420، حدیث: 5096)

✿ दुआ़ पढ़ने के बाद घर वालों को मुस्कुरा कर इतनी आवाज़ में सलाम करें कि जो अफ़राद मौजूद हैं वोह सुन लें ✿ अपने जूते, स्कूल बैग और यूनीफ़ॉर्म वग़ैरा उन की जगह पर रखें ✿ घर में अम्मी अब्बू, भाई बहन अगर मौजूद हों तो हो सके तो कुछ देर उन के साथ बैठें, उस के बाद अपनी दीगर एक्टिविटी में मसरूफ़ हो जाएं ।

इस त़रह़ घर का माह़ौल ख़ुशगवार होगा, सब आप से ख़ुश होंगे, शुरूअ़ में लिखी ह़दीसे पाक में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने घर में बरकत लाने का वज़ीफ़ा भी बता दिया, आप भी इस पर अ़मल करें, घर में अम्नो सुकून आएगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه

अल्लाह पाक हमें प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक अह़ादीस पढ़ कर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और हमारे घरों में रह़मत व बरकत और ख़ुशह़ाली अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلّی اللہ علیہ واٰلہ وسلّم

# बारगाहे रिसालत से क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा की बख़्शिश

हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे मुक़द्दसा में जिस्मानी बीमारियों और रूहानी अमराज़ दोनों का मोजिज़ाती इ़लाज हो जाया करता था। अल्लाह पाक के हुक्म से आप के लुआ़बे दहन (मुबारक थूक), लम्से मुबारक (छूने) और दुआ़ओं की वोह तासीरें थीं जिन के ज़रीए अ़क़्लो फ़हम से बालातर मोजिज़ात का ज़ुहूर हो जाया करता। ऐसा ही एक प्यारा मोजिज़ा उस वक़्त रूनुमा हुवा जब एक सह़ाबिये रसूल ने हुज़ूर अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपनी याददाश्त कमज़ोर होने की परेशानी अ़र्ज़ की, तफ़्सील इस की येह है कि ह़ज़रते उ़स्मान बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि मुझे क़ुरआन याद नहीं रहता (याद दाश्त कमज़ोर है)। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह शैत़ान है जिसे ख़न्ज़ब कहते हैं।" फिर फ़रमाया : "ऐ उ़स्मान ! मेरे क़रीब आओ।" जब मैं क़रीब हुवा, तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे मुंह में अपना मुबारक लुआ़बे दहन डाला और अपने दस्ते शफ़्क़त को मेरे सीने पर रखा जिस की ठन्डक मैं ने दोनों कन्धों के दरमियान मह़सूस की। फिर इरशाद फ़रमाया : "**ऐ शैत़ान ! उ़स्मान के सीने से निकल जा।**" चुनान्चे उस दिन के बाद मैं जो बात भी सुनता, याद हो जाती, कभी नहीं भूला। (دیکھئے: دلائل النبوۃ لابی نعیم، ص277، حدیث:396)

यक़ीनन वाक़िआ़ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे करम और दुआ़ की बदौलत ज़ाहिर होने वाले एक अ़ज़ीम मोजिज़े का तर्जुमान है कि शैत़ान की त़रफ़ से पैदा कर्दा ज़ेहनी रुकावट को नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ पहचाना ही नहीं बल्कि अपने मोजिज़ाती तसर्रुफ़ से उसे दूर फ़रमा कर अपने प्यारे सह़ाबी को ह़ाफ़िज़े की क़ुव्वत से मालामाल कर दिया। इस वाक़िए से चन्द बातें मालूम होती हैं :

- याददाश्त की कमज़ोरी कभी कभार शैत़ानी वस्वसों या असरात की वज्ह से भी हो सकती है।
- रूहानी इ़लाज और अल्लाह के नेक बन्दों की दुआ़एं बात़िनी मसाइल का मुअस्सिर ह़ल हो सकती हैं।
- नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से ऐसी मारिफ़त ह़ासिल थी कि आप शैत़ान का नाम तक ले कर उस की कारस्तानी को वाज़ेह फ़रमा देते।
- सह़ाबए किराम दीन सीखने में संजीदा और फ़िक्रमन्द रहा करते थे हमें भी ह़ुसूले इ़ल्म में फ़िक्रमन्द रहना चाहिये।
- रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का लुआ़बे दहन अल्लाह के हुक्म से जिस्म व रूह की शिफ़ा का ज़रीआ़ था।
- इ़ल्म के लिये कोशिश और दुआ़ दोनों का एहतिमाम होना चाहिये मेहनत के साथ साथ रूहानी अस्बाब से मदद लेनी चाहिये।
- राहे दीन की मुश्किलें और रुकावटें जल्द या बदेर बिल आख़िर अल्लाह के फ़ज़्लो करम से दूर हो ही जाती हैं।

क्लास रूम

# बैल की नसीह़त

सर बिलाल जैसे ही क्लास रूम में दाख़िल हुए तो पहली क़त़ार में बैठे हु़ज़ैफ़ा को देख कर चौंके लेकिन अगले ही लम्ह़े मामूल के मुताबिक़ अपनी कुर्सी की त़रफ़ बढ़ते हुए बुलन्द आवाज़ से सभी बच्चों को सलाम किया, जिस का जवाब सभी बच्चों ने अदब से खड़े हो कर दिया।

तख़्लीक़े इन्सानी का अव्वलीन मक़्सद, वाइट बोर्ड पर सर ने आज के सबक़ का उ़न्वान लिखा और फिर मार्कर बन्द करते हुए बच्चों के दरमियान में आ खड़े हुए, तो बच्चो आप को क्या लगता है कि आप की ज़िन्दगी का मक़्सद क्या हो सकता है ?

पिछली क़त़ार से एक बच्चे ने खड़े हो कर कहा : खाना पीना, ऐ़श करना और शादी करना।

बच्चों के साथ सर भी मुस्कुरा पड़े कहने लगे : बेटा जी मैं सिर्फ़ आप की ज़िन्दगी का मक़्स्द नहीं पूछ रहा बल्कि हम सब इन्सानों को जो अल्लाह पाक ने पैदा फ़रमाया है, इस दुनिया में भेजा है उस का क्या मक़्स्द है ? सिर्फ़ खाना पीना ऐ़श करना तो मक़्सद नहीं हो सकता वरना वोह तो जानवर भी पूरा कर रहे हैं तो आख़िर हम इन्सानों को पैदा करने का मक़्सद क्या हो सकता है ? कभी सोचा नहीं आप लोगों ने। बात करते करते सर हु़ज़ैफ़ा के पास आ चुके थे और उसे मुख़ात़ब करते हुए कहा : हु़ज़ैफ़ा बेटा येह चश्मा नज़र का है या शौक़िया लगा रखा है ?

नहीं नहीं सर, नज़र का ही है, काफ़ी दिनों से मेरे सर में दर्द रहता था, मेडिसीन के बावुजूद आराम नहीं आ रहा था तो मम्मा पापा आंखों के डॉक्टर के पास ले गए थे, हु़ज़ैफ़ा ने खड़े हो कर जवाब दिया।

सर बिलाल : बेटा इतनी सी उ़म्र में नज़र का चश्मा तो ख़त़रनाक बात है, आप अपनी डेली रूटीन चेक करें कि क्या मस्अला है ?

सरजी डेली रूटीन में तो हु़ज़ैफ़ा भाई के सिर्फ़ वीडियोगेम ही है, उन का तो बस नहीं चलता स्कूल में भी ले आया करें।

मुआ़विया की बात पर सर बिलाल परेशान दिखाई दिये और फिर हु़ज़ैफ़ा को बैठने का इशारा करते हुए बक़िय्या बच्चों की त़रफ़ रुख मोड़ते हुए कहा : तो बच्चो ! हम येह जानने की कोशिश कर रहे थे कि हमारी पैदाइश का मक़्सद क्या है ? तो जैसे हमारे दीन और दुनिया के दूसरे मसाइल का ह़ल क़ुरआने मजीद से मिलता है तो इस मस्अले के लिये भी हम क़ुरआने पाक से ही पूछते हैं कि ऐ अल्लाह पाक की आख़िरी और कामिल किताब तू ही बता कि हम इन्सानों की पैदाइश का मक़्सद क्या है तो बच्चो पता है हमें क़ुरआने मजीद ने क्या जवाब दिया ? सत्ताइसवें पारे के शुरूअ़ में है :

﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ(۵۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मैं ने जिन्न और आदमी इसी लिये बनाए कि मेरी इबादत करें। (پ27،الذّٰرِیٰت:56)

आप को पता है नां येह कौन सा इस्लामी महीना है ? सर बिलाल के पूछने पर उसैद रज़ा ने बताया ? सर येह रबीउल आख़िर है।

सर बिलाल : जी जी बेटा वोही ग्यारहवीं वाला माह तो चलें आप को ग्यारहवीं वाले पीर के बचपन का एक वाक़िआ सुनाता हूं : बचपन में एक बार हज़रते अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जंगल में थे कि एक बैल नज़र आया और आप उस के पीछे पीछे चल पड़े, कुछ देर बाद बैल ने मुड़ कर आप की तरफ़ देखा और कहा : "ऐ अब्दुल क़ादिर ! तुम को इस क़िस्म के कामों के लिये तो पैदा नहीं किया गया।" (ग़ौसे पाक के हालात, स. 25) येह सुन कर शैख़ मुहयुद्दीन जीलानी वापस घर लौटे और अपनी अम्मीजान से इजाज़त ले कर राहे इल्म के मुसाफ़िर बन गए।

देखा बच्चो ! अल्लाह पाक के नेक बन्दों की ज़िन्दगी में हमारी तरह फ़ुज़ूल खेलकूद की तो जगह ही नहीं थी जब कि दूसरी तरफ़ हम ने ऐसी एक्टीविटीज़ पाल रखी हैं जिन में हमारे दीन का तो नुक़्सान है ही दुनिया का भी नुक़्सान है जैसे वीडियो गेम्ज़ वग़ैरा।

मुआविया : सर वीडियोगेम्ज़ में दीन का क्या नुक़्सान है ?

सर बिलाल : देखें बच्चो ! दुश्मनाने इस्लाम ऐसी ऐसी गेम्ज़ तय्यार कर रहे हैं कि बच्चे खेल ही खेल में न सिर्फ़ अमलन इस्लाम से दूर चला जाए बल्कि مَعَاذَ الله उस के दिल में दीने इस्लाम ही की नफ़रत बैठ जाए मसलन कुछ गेम्ज़ ऐसी भी होती हैं जिन में इस्लामी हुल्ये यानी दाढ़ी टोपी वाले को बुरा बना कर दिखाया जाता है और दुनिया के नुक़्सान की बात करूं तो वीडियोगेम्ज़ बीमारियों का पैकेज है पूरा, नज़र की कमज़ोरी और सर दर्द वग़ैरा तो सिर्फ़ छोटी सी दो बीमारियां हैं जो वीडियोगेम्ज़ की वज्ह से होती हैं और फिर सब से अहम बात जितना हम वीडियोगेम्ज़ जैसी फ़ुज़ूलिय्यात के क़रीब होते जाएंगे उतना ही अपने अस्ली मक़्सद से दूर होते जाएंगे।

## बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोहफ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे।(جمع الجوامع،3/285،حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिये 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

### बच्चों के 3 नाम

| नाम | पुकारने के लिये | माना | निस्बत |
|---|---|---|---|
| मुहम्मद | अब्दुल क़ादिर | क़ुदरत रखने वाले (अल्लाह पाक) का बन्दा | ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुबारक नाम |
| | ग़ुलाम ग़ौस | मदद करने वाले का ग़ुलाम | ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه |
| | जीलान | | ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की जाए विलादत |

### बच्चीयों के 3 नाम

| | | |
|---|---|---|
| आइशा | ख़ुशहाल | उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللهُ عَنْهَا का बा बरकत नाम |
| उम्मुल ख़ैर | भलाई वाली | ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की अम्मीजान की मुबारक कुन्यत |
| ग़ौसिया | | ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه |

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

# सफ़र और बच्चे

सफ़र महज़ मन्ज़िल तक पहुंचने का नाम नहीं बल्कि येह बच्चों की शख़्सिय्यत साज़ी, मुशाहदाती सलाहिय्यतों और तरबियती मवाक़ेअ़ से भरपूर एक ह़सीन तजिरबा होता है । वालिदैन अगर चाहें तो सफ़र के लम्ह़ात को सिर्फ़ तफ़रीह़ नहीं बल्कि तरबियत का ज़रीआ भी बना सकते हैं। रास्ते में आने वाली तब्दीलियां, नया माह़ौल, मुख़्तलिफ़ लोग, अजनबी मन्ज़र, सब कुछ बच्चे के ज़ेहन पर गहरा असर डालते हैं, ऐसे में उन की बातों, सुवालात और मुशाहदात को संजीदगी से लेना ज़रूरी होता है।

**सफ़र से पहले की तरबियत** 1 बच्चों की ह़िफ़ाज़त के पेशे नज़र बच्चे को अपना और वालिदैन का नाम और राबित़ा नम्बर याद होना बहुत ज़रूरी है। इस लिये वालिदैन को चाहिये कि सफ़र से पहले बच्चों को येह चीज़ें लाज़िमी अच्छे त़रीक़े से याद करवा दें ताकि किसी हंगामी सूरतेह़ाल में फ़ौरन राबित़ा किया जा सके। 2 बच्चों को येह बात भी समझाई जाए कि अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता वोह मां बाप से बिछड़ जाएं तो घबराने के बजाए फ़ौरन किसी पोलीस अहलकार या सफ़र के मुन्तज़िम के पास जाएं और मदद त़लब करें। साथ ही उन्हें येह भी बताया जाए कि पोलीस या मुन्तज़िम को पहचानने का त़रीक़ा क्या है, ताकि वोह किसी ग़लत़ शख़्स के बजाए दुरुस्त फ़र्द से राबित़ा कर सकें। 3 इसी त़रह़ सफ़र में अजनबी लोगों से मिलने का मौक़अ़ भी बच्चों की तरबियत का ह़िस्सा बन सकता है। वालिदैन को चाहिये कि वोह बच्चों को सिखाएं कि हर अजनबी से बेतकल्लुफ़ी मुनासिब नहीं, मगर हर अजनबी दुश्मन भी नहीं होता। सलाम करना, रास्ता देना, छोटे मोटे एह़सानात करना येह सब ह़ुस्ने सुलूक की अ़लामतें हैं, मगर बच्चों को येह भी सिखाना ज़रूरी है कि ह़ुदूद का ख़याल रखना, मोह़तात़ रहना, और ज़रूरत से ज़ियादा बातचीत से बचना क्यूं ज़रूरी है। यूं वोह इ़ज़्ज़तो शराफ़त, मगर एह़तियात़ के साथ बरताव करना सीखते हैं।

**खाने पीने के ह़वाले से तरबियत** 1 बच्चे सफ़र के दौरान अक्सर फ़ुज़ूल और ग़ैर सेहतमन्द चीज़ों का मुत़ालबा करते हैं जो न सिर्फ़ सेह़ह़त के लिये नुक़्सान देह साबित होती हैं बल्कि वालिदैन के लिये परेशानी का बाइ़स भी बनती हैं इस लिये वालिदैन को चाहिये कि सफ़र शुरूअ़ करने से पहले ही घर से हल्की फुल्की और सेहतबख़्श चीज़ें साथ रखें, ताकि बच्चों को मुनासिब मुतबादिल मिल सके 2 उस के साथ साथ बच्चों को येह आ़दत भी डालनी चाहिये कि वोह फ़ुज़ूल और ग़ैर ज़रूरी चीज़ों का मुत़ालबा न करें और क़नाअ़त इख़्तियार करें।

**दूध पीते बच्चों के ह़वाले से एह़तियात़** सफ़र में दूध पीने वाले बच्चों की ज़रूरिय्यात और एह़तियात़ बड़े बच्चों से अलग होती हैं। वालिदैन को उन के लिये ख़ास तय्यारी करनी चाहिये ताकि दौराने सफ़र मुश्किलात पेश न आएं। यहां चन्द ज़रूरी निकात हैं : 1 बच्चे को अगर डब्बे का दूध देना पड़े तो साफ़ बोतलें, पानी और दूध का पावडर साथ रखें 2 सफ़ाई का ख़ास ख़याल रखें ताकि जरासीम से बचा जा सके 3 वक़्त पर दूध देने की आ़दत बरक़रार रखी जाए ताकि बच्चा ज़िद न करे 4 उ़म्र के एतिबार से गर्मी में वक़्फ़े वक़्फ़े से उबला हुवा ठन्डा पानी देना मुफ़ीद है 5 दूध पिलाते वक़्त पुरसुकून जगह का इन्तिख़ाब करें 6 इज़ाफ़ी कपड़े, डाइपर्ज़ और छोटे तोलिये ज़रूर रखें 7 दूध पिलाते वक़्त बिस्मिल्लाह कहना और बच्चे पर दुआ़एं पढ़ना रूह़ानी ह़िफ़ाज़त का ज़रीआ है।

**पेशाब पाख़ाना या क़ै (उल्टी) के ह़वाले से एह़तियात़ी तदाबीर** बाज़ बच्चे दौराने सफ़र गाड़ी में पेशाब पाख़ाना या उल्टी कर देते हैं जिस से दीगर मुसाफ़िरों को तक्लीफ़ होती है इस ह़वाले से भी वालिदैन को चाहिये कि बच्चों को चन्द एह़तियात़ी तदाबीर बताएं : 1 बच्चों को भारी या चिकनी अश्या के बजाए हल्की फुल्की ग़िज़ा लेने पर आमादा करें ताकि क़ै या बद ह़ज़्मी का ख़त़रा कम

से कम हो। **2** बच्चों को समझाएं कि सफ़र शुरूअ करने से पहले वॉशरूम लाज़िमी जाया करें ताकि रास्ते में किसी क़िस्म की मुश्किल न हो। यहां वालिदैन को भी चाहिये कि पहले से ही प्लास्टिक बैग्ज़, टिस्यू और छोटे तोलिये साथ रखें ताकि अगर बच्चा गाड़ी में गन्दगी करे तो फ़ौरन साफ़ किया जा सके और दूसरों को तक्लीफ़ न हो **3** इसी त़रह बच्चों को येह भी सिखाएं कि जैसे ही दिल घबराए या मतली हो फ़ौरन बताएं ताकि वालिदैन उस का बर वक़्त तदारुक कर सकें। **4** बच्चों को सिखाएं कि आप की वज्ह से दूसरों को तक्लीफ़ न हो। अगर गाड़ी में उल्टी या पेशाब पाख़ाने वाला मुआमला हो भी जाए तो फ़ौरन सफ़ाई का एहतिमाम करें और दीगर मुसाफ़िरों से माज़ेरत करना न भूलें। येह बच्चों की एक बेहतरीन तरबियत है कि दूसरों को तक्लीफ़ देना बुरी बात है।

**सब्र, हुस्ने अख़्लाक़ और शुक्र गुज़ारी की तरबियत** सफ़र के दौरान वालिदैन का रवय्या, अल्फ़ाज़, रद्दे अमल और बरदाश्त का मेयार बच्चों के दिलो दिमाग़ पर गहरे नुक़ूश छोड़ता है। अगर वालिदैन सब्र, हुस्ने अख़्लाक़, शुक्र गुज़ारी, और नज़्मो ज़ब्त का मुज़ाहरा करें तो बच्चे भी वोही सीखते हैं। मसलन ट्रैफ़िक जाम में वालिद का पुरसुकून रवय्या, किसी परेशानी पर मां की शुक्रगुज़ारी, या किसी फ़क़ीर को सदक़ा देने का अमल येह सब अमली अस्बाक़ हैं जिन्हें अल्फ़ाज़ में समझाना मुश्किल और अमल में दिखाना आसान होता है। लिहाज़ा वालिदैन अपने अमल के ज़रीए बच्चों को सब्र, हुस्ने अख़्लाक़ और शुक्र गुज़ारी की तरबियत दें।

**दौराने सफ़र नागहानी आफ़त आने पर तसल्ली दीजिये** अगर दौराने सफ़र कोई नागहानी हादिसा या तक्लीफ़ देह वाक़िआ पेश आ जाए। जैसे गाड़ी बन्द हो जाना, किसी का ज़ख़्मी हो जाना, या किसी ग़ैर मुतवक़्क़ेअ रुकावट का आ जाना, तो येह लम्हे वालिदैन के लिये आज़माइश और तरबियत दोनों का मौक़अ होते हैं ऐसी सूरत में वालिदैन को चाहिये कि वोह ख़ुद घबराहट का शिकार न हों, न ही बच्चों के सामने ख़ौफ़ व परेशानी का इज़्हार करें उन के चेहरे पर इत़मीनान, अल्लाह पर भरोसा, और मुस्बत कलिमात बच्चों को हौसला देते हैं। बच्चों को तसल्ली दी जाए, उन से नर्मी से बात की जाए और उन्हें समझाया जाए कि ज़िन्दगी में ऐसे लम्हात आते रहते हैं मगर हम सब्र और तदबीर से उन का सामना करते हैं।

**क़ुदरती मनाज़िर की मालूमात फ़राहम कीजिये** सफ़र के दौरान बच्चे वालिदैन के साथ ज़ियादा वक़्त गुज़ारते हैं, येह वक़्त उन के दिल में अपने वालिदैन के क़रीब होने, उन से बातें करने, और सीखने के लिये क़ीमती होता है। मां बाप को चाहिये कि वोह उस वक़्त को सिर्फ़ मोबाइल या ख़ामोशी में ज़ाएअ न करें बल्कि बच्चों से गुफ़्तगू करें, उन के सुवालात के जवाब दे, उन्हें नए शहरों, रास्तों, पहाड़ों, दरियाओं या दीगर क़ुदरती मनाज़िर के बारे में मालूमात फ़राहम करें। इस त़रह बच्चों में इल्म, शौक़, अदब और सलीक़ा परवान चढ़ता है।

**सफ़र की सुन्नतें और आदाब सिखाइये** सफ़र में बच्चों को दुआ सिखाना, आदाबे सफ़र याद दिलाना, सफ़र की सुन्नतों से रूशनास कराना, और दूसरे मुसाफ़िरों के हुक़ूक़ के बारे में बताना भी अहम है। होटल में खाने के आदाब, वुज़ू और नमाज़ की एहतियात़, सोने जागने के अवक़ात की तरतीब, अगर वालिदैन येह सब बातें बच्चों को महब्बत और हिक्मत के साथ सिखाएं तो बच्चे उन्हें ज़िन्दगी भर याद रखेंगे اِنْ شَآءَ اللّٰه।

**दौराने सफ़र बच्चों के साथ नर्म रवय्या रखिये** सफ़र में बच्चों के साथ नर्मी, सब्र और बरदाश्त का रवय्या रखना भी तरबियत का एक अहम पहलू है। अगर बच्चा थक जाए, ज़िद करे या परेशान हो तो वालिदैन को चाहिये कि वोह सख़्ती करने के बजाए शफ़्क़त से काम लें। येह लम्हात बच्चे को सिखाते हैं कि मुश्किल में घर वाले साथ होते हैं, और सब्र का फल अच्छा होता है।

**सफ़ाई के ह़वाले से तरबियत** बच्चे अक्सर रेपर, जूस के डब्बे या गन्द कचरा वग़ैरा गाड़ी या सड़क पर फेंक देते हैं। वालिदैन को चाहिये कि बच्चों को शुरूअ से येह आदत डालें कि कूड़ा हमेशा डस्टबिन में डालें।

आख़िर में येह बात याद रखने की है कि सफ़र में की गई तरबियत दिल पर लिखी जाती है, जो कमरए जमाअत या नसीह़त के ज़रीए मुम्किन नहीं। वालिदैन अगर तरबियत को एक बोझ नहीं बल्कि एक मौक़अ समझें तो हर सफ़र बच्चों की शख़्सिय्यत संवारने का ज़रीआ बन सकता है। इस लिये अगली बार जब आप सफ़र पर जाएं, तो सामान के साथ साथ तरबियत का अज़्म भी बांध लीजिये। येही सफ़र कल के बेहतर इन्सानों की तय्यारी का ज़रीआ बन सकता है।

# अपना वक़ार बनाइये

अल्लाह पाक ने इन्सान को बाइ़ज़्ज़त बनाया, और इन्सान की अस्ल इ़ज़्ज़त का मेयार तक़्वा क़रार दिया । चुनान्चे इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह है जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है।[1]

मोह़तरम इस्लामी बहनो ! इस आयते मुबारका के इस ह़िस्से में वोह बुन्यादी उसूल बयान किया जा रहा है जो किसी इन्सान के लिये शराफ़त, अ़ज़मत और फ़ज़ीलत का अस्ल ज़रीआ़ है और जिस के सबब उसे अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इ़ज़्ज़त व मरतबा नसीब होता है।[2]

इस से येह ह़क़ीक़त रौशन हो गई कि इन्सान की ह़क़ीक़ी इ़ज़्ज़त और वक़ार माल, नस्ल या शोहरत पर नहीं बल्कि दिल की परहेज़गारी, इख़्लास और किरदार की पाकीज़गी पर मौक़ूफ़ है।

याद रखिये वक़ार (Dignity) का मतलब है : इन्सान अपने गुफ़्तार, किरदार, सोच और अ़मल में संजीदा, मुतवाज़न और शाइस्ता हो। वोह न तो किसी पर ज़ुल्म करे, न ख़ुद को जलील करे, न अपनी इज्जते नफ़्स को सस्ते मफ़ाद पर क़ुरबान करे। एक मोमिन को अपनी ख़ुदी और शराफ़त का पास रखना चाहिये। अपनी इ़ज़्ज़त को ख़्वाहिशात, दुन्यावी मफ़ादात या वक़्ती लज़्ज़तों के बदले न बेचे।

## औलाद को बावक़ार बनाने में माओं का किरदार

माओं को चाहिये कि जब वोह अपनी बेटियों की तरबियत करें तो उन के अन्दर वक़ार और इ़ज़्ज़ते नफ़्स पैदा करने के लिये चार अहम उमूर को बत़ौरे ख़ास पेशे नज़र रखें :

1 अ़क़ाइद की इस्लाह़ पर ख़ुसूसी तवज्जोह दें। 2 ज़ाहिरी आमाल को दुरुस्त करने की फ़िक्र करें। 3 बात़िनी सिफ़ात की बेहतरी और तज़्कियए नफ़्सल की कोशिश करें । 4 अख़्लाक़िय्यात में बुलन्दी पैदा करने पर भरपूर मेह़नत करें। येह चारों निकात दुन्यावी व उख़रवी कामयाबी के लिये निहायत मुअस्सिर और बुन्याद फ़राहम करने वाले हैं।

अगर अख़्लाक़ अच्छे होंगे तो मुआ़शरे में इन्सान को क़द्रो मन्ज़िलत की निगाह से देखा जाएगा, लोग इ़ज़्ज़त देंगे और दिलों में जगह बनेगी। मज़ीद येह कि अच्छे अख़्लाक़ अल्लाह पाक की रिज़ा और आख़िरत में कामयाबी का ज़रीआ़ बनेंगे। जब कि अगर अख़्लाक़ ख़राब हों, ज़बान में कड़वाहट, रवय्ये में ग़ुरूर या बदतमीज़ी हो तो उस से इन्सान की साख गिरती है, न सिर्फ़ अपनी इ़ज़्ज़त ख़ाक में मिलती है बल्कि वालिदैन की बदनामी और मुआ़शरती रुस्वाई का सबब भी बनती है । आख़िरत में ऐसे अख़्लाक़ अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी का मूजिब बनेंगे, और ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद की पामाली की सूरत में लोग आख़िरत में मुतालबा करेंगे कि उन के ह़ुक़ूक़ का ह़िसाब लिया जाए।

## बुलन्दिये इ़ज़्ज़तो वक़ार के अस्बाबो औसाफ़

वक़ार और मुकम्मल शख़्सिय्यत के निखार के लिये दर्जे ज़ैल चन्द ख़ुसूसिय्यात को अपनाना बहुत मुफ़ीद हो सकता है :

• अगर किसी मुआमले में आप से कोई ग़लती सरज़द हो जाए तो उस का एतिराफ़ करें, उस से इ़ज़्ज़त घटेगी नहीं, बल्कि बढ़ेगी। • ज़िन्दगी को आसान बनाएं, तअ़ल्लुक़ात में नर्मी लाएं, ग़ैर ज़रूरी सख़्ती और ज़िद से गुरेज़ करें। • लोगों को अहमिय्यत देना सीखें। अगर कोई आप के पास आए तो खड़े हो कर उस का ख़ैर मक़दम करें, निशस्त पेश करें। यूं आप ने अगर्चे किसी को ज़मीन पर जगह दी, मगर वोह आप को दिल में जगह देगा। येह रवय्या आप की अहमिय्यत, इ़ज़्ज़त और वक़ार में इज़ाफ़ा करेगा। • जब भी किसी से बात करें तो उस के मक़ाम, मर्तबे, उ़म्र और ह़ालात को मद्दे नज़र रख कर गुफ़्तगू करें। हम उ़मूमन अपनी त़बीअ़त, मिज़ाज या लहजे के मुत़ाबिक़ बात करते हैं, मगर सामने वाले के एह़सासात, तजरिबात और उ़म्र का लिह़ाज़ ज़रूरी है। • बुराई का जवाब भलाई से देना सीखें। बदला लेने वाले न बनें, दरगुज़र और मुआ़फ़ करने को आ़दत बना लें। • अल्लाह के बन्दे बन कर ज़िन्दगी गुज़ारें। जो अल्लाह के सामने झुकता है अल्लाह मख़्लूक़ के दिलों को उस के लिये झुका देता है। • सच बोलें • दयानतदार बनें • किरदार को मज़बूत रखें • इ़ल्मो अ़मल में संजीदगी लाएं • अल्लाह के लिये तवाज़ोअ़ इख़्तियार करें ह़दीसे पाक में है : जो कोई अल्लाह पाक के लिये तवाज़ोअ़ अपनाता है अल्लाह पाक उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है।[3] • हर हफ़्ते, बाद नमाज़े इ़शा मदनी मुज़ाकरा ज़रूर देखिये।

मज़कूरा बाला हिदायात पर अ़मल की सूरत में اِنْ شَآءَاللہ आप की शख़्सिय्यत में ऐसी बहुत सी मुस्बत तब्दीलियां आएंगी जो मुआ़शरे में आप को एक इ़ज़्ज़तदार और बावक़ार ख़ातून बनाने की ज़ामिन होंगी।

## इ़ज़्ज़तो वक़ार मजरूह़ करने वाली बातें

प्यारी इस्लामी बहनो ! उन बातों को अपनाने के साथ साथ कुछ बातों से बचना भी ज़रूरी है ताकि हमारा दामने इ़ज़्ज़तो वक़ार गदला न हो :

• लोगों की नफ़्सियात के ख़िलाफ़ बातें न करें। मसलन : शादी शुदा औ़रत बेवा के सामने अपने शौहर की तारीफ़ें करे, बेऔलाद के सामने अपनी औलाद की बातें करे, यतीम के सामने मां बाप के प्यार की बातें करे, तो येह एह़सासे मह़रूमी को जन्म देती हैं। सामने वाला कुछ न कहे, लेकिन दिल टूट फूट का शिकार हो सकता है और लाशुऊ़री त़ौर पर उस की नज़र में आप की क़द्रो वुक़्अ़त कम होगी। • जब हम मकान बनाते हैं तो ऐसा सूराख़ नहीं छोड़ते जिस से कोई झांक सके, इसी त़रह़ एक समझदार, साह़िबे अ़क़्ल ख़ातून अपने किरदार में ऐसी कमज़ोरी नहीं छोड़ती कि कोई उस की शख़्सिय्यत में झांक कर ऐ़ब निकाले। • ऐसे कामों से बचें जिन का न दुनिया में फ़ाएदा है न आख़िरत में। रसूले करीम صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बन्दे के इस्लाम की ख़ूबसूरती में से है कि वोह ला यानी बातों को छोड़ दे।[4] और उस में शक नहीं कि बेफ़ाएदा कामों में दीगर फ़ुज़ूलिय्यात के इ़लावा सोशल मीडिया की फ़ुज़ूल मसरूफ़िय्यत, मोबाइल का बेमक़्सद इस्तिमाल, और ग़ैर ज़रूरी बात चीत भी शामिल है। ख़वातीन का अपनी सहेलियों, रिश्तेदार व दीगर मुतअ़ल्लिक़ा ख़वातीन के साथ घन्टों घन्टों ग़ैर ज़रूरी कोल्ज़ में लगे रहना वक़्त, तवानाई, किरदार और वक़ार, सब को ज़ाएअ़ करता है।

• ग़ीबत, चुग़ली, फ़ह़ाशी, लालच और नफ़रत से दूर रहें कि येह चीज़ें भी इन्सानी वक़ार की क़ातिल हैं।

येह वोह छोटी छोटी बातें ज़िक्र की गई हैं जिन का लिह़ाज़ रखें तो आप की शख़्सिय्यत निखरने लगेगी, आप का मेयार बुलन्द होता चला जाएगा। फिर जब आप अपनी ज़ात की इस्लाह़ पर तवज्जोह देंगी तो न आप को दूसरों की ऐ़बजोई का वक़्त मिलेगा, न ही बेजातन्क़ीद का रुज्ह़ान बाक़ी रहेगा और येह दोनों बातें भी इन्सान के वक़ार को मजरूह़ करने में बहुत अ़मल दख़्ल रखती हैं।

"**अपना वक़ार बनाइये**" दर अस्ल एक जामेअ़ और बसीरत अफ़रोज़ पैग़ाम है, जो हमें दीने इस्लाम की रौशनी में ख़ुद्दारी, इ़ज़्ज़ते नफ़्स, वक़ार और किरदार की पुख़्तगी सिखाता है।

अल्लाह पाक हमें उ़म्दा अख़्लाक़ से मालामाल फ़रमाए बल्कि अख़्लाक़े नबवी का सदक़ा हमें अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) پ 26، الحجرات: 13 (2) مدارک، الحجرات، تحت الآیۃ: 13، ص1156 - جلالین، الحجرات، تحت الآیۃ: 13، ص428 ملتقطاً (3) مسلم، ص 1071، حدیث: 6592 (4) ترمذی، 4/142، حدیث: 2324۔

# इ़ज़्ज़ते निस्वां और इस्लाम

तारीख़ के औराक़ बताते हैं कि हर अ़हद में औ़रत कैसे कैसे मसाइबो आलाम झेलती रही है और कितनी बेदर्दी के साथ तौहीन व ज़ुल्म की तारीक वादियों में धकेली गई। इस्लाम से क़ब्ल मुआ़शरे में औ़रत ज़ात को ह़क़ीर और अपने लिये बाइ़से आ़र तसव्वुर किया जाता, उस के साथ ग़ुलामों और जानवरों से बदतर सुलूक किया जाता था। जाहिल, दरिन्दा सिफ़त लोगों ने उसे मह़ज़ ख़्वाहिशात का खिलौना समझा, उस की बदतरीन तौहीन की और ज़िन्दा दरगोर कर के उस पर ज़ुल्मो सितम की इन्तिहा कर दी। मगर जब इस्लाम का सूरज तुलूअ़ हुवा और आफ़ाक़े आ़लम में उस की किरनें फूटीं तो औ़रत की ह़ैसिय्यत यकदम बदल गई। मोह़सिने इन्सानिय्यत, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़ज़ीम एहसान फ़रमाया, जहालत के तारीक अन्धेरों में डूबे लोगों को इ़ल्मो हिदायत की सुब्ह़ से रूशनास करवाया।

**बेटियों के लिये इस्लाम का इन्क़िलाबी इक़्दाम** यहूदी बेटियों को नौकरानी के मरतबे से ज़ियादा नहीं रखते, बेटों के होते बेटी को विरासत का ह़क़दार न जानते, नीज़ अपनी छोटी बच्चियों को बेच देने का रिवाज आ़म था। बाज़ क़बाइले अ़रब में बच्ची को पैदा होते ही ज़िन्दा दफ़्ना दिया जाता। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! इस्लाम ने बेटी को जान व इ़ज़्ज़त का तह़फ़्फ़ुज़ फ़राहम किया, उस की अ़ज़्मत और वक़ार बुलन्द किया। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बेटियों की अच्छी परवरिश का बदला जन्नत में अपनी रफ़ाक़त की सूरत में बताया,[1] बेटियों को ख़ुश रखने वाले को अल्लाह पाक की रिज़ा व ख़ुशी की नवेद सुनाई।[2] बल्कि बेटियों के साथ तरजीह़ी सुलूक की तल्क़ीन करते हुए इरशाद फ़रमाया : जो बाज़ार से अपने बच्चों के लिये कोई चीज़ लाए तो वोह उन (यानी बच्चों) पर सदक़ा करने वाले की त़रह़ है और उसे चाहिये कि बेटियों से इब्तिदा करे क्यूंकि अल्लाह पाक बेटियों पर रह़म फ़रमाता है।[3]

**औ़रत का ह़क़ छीनने वालों के लिये वई़दे जहन्नम** दीने इस्लाम ने औ़रत के साथ होने वाली नाइन्साफ़ी और तर्के में ह़िस्सेदार न बनाने वाली ग़लत़ रस्म का रद किया और उसे सरीह़ ज़ुल्म बताया, और मर्दो औ़रत दोनों को माले विरासत का ह़क़दार ठहराया।[4] नीज़ विरासत के ह़िस्से हुदूदुल्लाह हैं, जिन्हें तोड़ने वाले को अल्लाह व रसूल का नाफ़रमान बताया गया और उसे जहन्नम की भड़कती आग की वई़द सुनाई गई है।[5]

**जब्रन ह़क़ जताने की मुमानअ़त** क़ब्ले इस्लाम अ़रब में शौहर के इन्तिक़ाल के बाद रिश्तेदार बीवी के वारिस बन जाते तो बे महर ही उस से शादी कर लेते या किसी से शादी करवा कर महर ख़ुद रख लेते अलग़रज़ वोह उन के हाथों मजबूर हो कर रह गई थी। ऐसी औ़रत ज़ेहनी और जिस्मानी अज़िय्यतों का शिकार रहती, अपने इख़्तियार से कुछ न कर सकती थी। इस्लाम ने औ़रतों की फ़रियाद रसी की : तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम्हें ह़लाल नहीं कि औ़रतों के वारिस बन जाओ ज़बरदस्ती और औ़रतों को रोको नहीं इस निय्यत से कि जो महर उन को दिया था उस में से कुछ ले लो मगर इस सूरत में कि सरीह़ बेह़याई का काम करें और उन से अच्छा बरताव करो।[6]

## इस्लाम बेवाओं और बेसहारा औ़रतों का मुह़ाफ़िज़

हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "बेवाओं के निगहबान और बे सहारों के मददगार" हैं। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने घर बैठी, बेशौहर वालियों से अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया और उस पर अ़ज़ीम अज्र की बिशारत सुनाई। चुनान्चे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : السَّاعِي عَلَى الْاَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِيْنِ كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيْلِ اللهِ اَوِ الْقَائِمِ اللَّيْلَ الصَّائِمِ النَّهَار यानी बेशौहर वाली (ख़्वाह कुंवारी हो, बेवा या मुत़ल्लक़ा व मुअ़ल्लक़ा) और मिस्कीन के लिये कोशिश करने वाला अल्लाह पाक की राह में जिहाद करने वाले की त़रह है या रात को क़ियाम और दिन में रोज़े रखने वाले की मानिन्द है।[7] एक ह़दीस में इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी यतीम या बेवा की कफ़ालत करे तो अल्लाह पाक उसे सायए अ़र्श में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा और अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।[8]

## बीवी के लिये ज़मानए जाहिलिय्यत वाली ज़िल्लत का ख़ातिमा

बीवी पांव की जूती नहीं बल्कि अपने घर की मलिका है,[9] बच्चों की वालिदा और पहली मुरब्बिया (तरबियत करने वाली) है। नीज़ क़ुरआने करीम उन्हें मर्दों के सुकून और आराम का ज़रीआ़ बताता है।[10] और उन के साथ अच्छा बरताव करने की तल्क़ीन भी।[11] ज़मानए जाहिलिय्यत में लोग अपनी बीवियों से माल त़लब करते, अगर वोह देने से इन्कार करतीं तो कई कई साल उन के पास "**न जाने**" की क़सम खा लेते। बीवी न तो बेवा होती कि कहीं और जाए पनाह पाए और न शौहर की होती कि उस से कुछ राह़त पाए। इस्लाम ने इस ज़ुल्म का क़लअ़ क़मअ़ किया और सालहा साल की मुद्दत ख़त्म कर के सिर्फ़ चार (4) महीने मुअ़य्यन फ़रमाई।[12] इस्लाम इस जैसे तमाम ज़ालिमाना, जाबिराना नज़रियों और रवय्यों की ह़ौसला शिक्नी कर के मर्दों को अपनी बीवियों के साथ अच्छे बरताव का हुक्म देता है।[13] औ़रतों के मुआ़मले में अल्लाह से डरते रहने की तल्क़ीन की गई और उन से अच्छा सुलूक करने वाले को लोगों में बेहतर शख़्स फ़रमाया गया है।[14]

## सौतेली मां भी इ़ज़्ज़तो मह़ब्बत की ह़क़दार

अ़हदे जाहिलिय्यत में बाप के मरने के बाद सौतेली मां से निकाह़ कर लेने का आ़म रिवाज था, क़ुरआने करीम में आयत नाज़िल कर के इस क़बीह़ अ़मल से मना किया गया।[15] आज भी मग़रिबी मुआ़शरे से मिलने वाली ग़लत़ सोच के सबब सौतेली मां को पहली औलाद के ह़क़ में ज़ालिमाना, बेरह़म किरदार तसव्वुर किया जाता है। जिस की इस्लाम हरगिज़ इजाज़त नहीं देता बल्कि सब को अपने अपने ह़ुक़ूक़ अदा करने की तल्क़ीन करता है न सौतेली मां के साथ बदसुलूकी की इजाज़त है और न ही किसी की बातों में आ कर औ़रत सौतेली औलाद के साथ नाइन्साफ़ी या ज़ुल्म कर सकती है। दीने इस्लाम सौतेली मां से भी मह़ब्बत, इ़ज़्ज़तो एह़तिराम भरा तअ़ल्लुक़ रखने का दर्स देता है।

बहरह़ाल इन तालीमात को पेशे नज़र रखते हुए दौरे ह़ाज़िर पर नज़रें दौड़ाने से मालूम होगा कि ऐसे लोग मौजूद हैं जो जिस्मानी त़ौर पर तो इस दौर में हैं मगर ज़ेहनी और अख़्लाक़ी लिह़ाज़ से ज़मानए जाहिलिय्यत में रहते हैं। ऐसे तब्क़े में इस्लामी तालीमात, शुऊ़र व आगही और नेकी की दावत बढ़ाने का अन्दाज़ा बख़ूबी लगाया जा सकता है। नीज़ इस्लाम की येह रौशन तालीमात व अह़काम उन लोगों को भी दावते फ़िक्र देते हैं जो उस शैत़ानी वस्वसे का शिकार हैं कि "इस्लाम में औ़रत पर सख़्ती है!" वोह ग़ौर करें, क्या इस्लाम में औ़रत पर सख़्ती की गई है या सख़्तियों से नजात दिला कर राह़तो आराम का एहतिमाम किया गया है?

---

(1) مسند احمد، 4/296، حدیث:12500 ملخصاً (2) فردوس الاخبار، 2/263، حدیث:5830 ملخصاً (3) فردوس الاخبار، 2/263، حدیث:5830 ملتقطاً (4) پ4، النسآء:7 (5) پ4، النسآء: 12 تا 14 (6) پ4، النسآء: 19 – بخاری، 3/203، حدیث: 4579، تفسیر قرطبی، 3/67، النسآء، تحت الآیۃ:19، ملتقطاً (7) بخاری، 3/511، حدیث:5353– مراٰۃ المناجیح، 6/547 ملخصاً (8) مکارم الاخلاق للطبرانی، ص349، رقم:101 (9) عمل الیوم واللیلۃ لابن السنی، ص246، حدیث: 388 (10) پ21، روم:21 (11) پ4، النسآء:19 (12) پ2، البقرۃ:226، 227 مع خزائن العرفان (13) پ4، النسآء:19 (14) ترمذی، 5/475، حدیث:3921 (15) تفسیر قرطبی، 3/73، جز5، النسآء، تحت الآیۃ:22۔

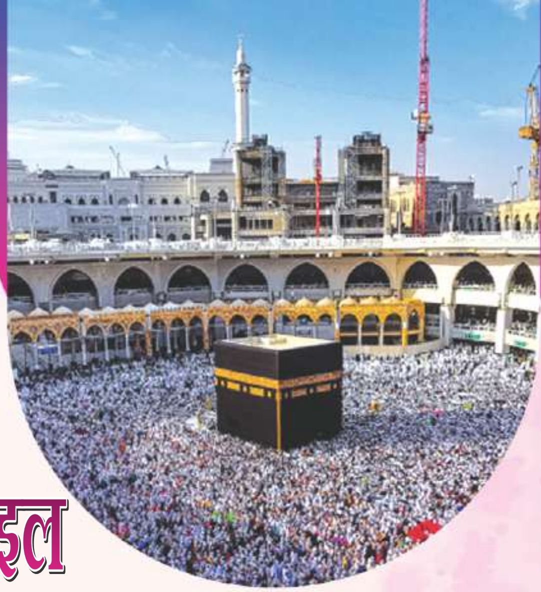

# इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

## 1 शौहर या महरम मर्द के बग़ैर औ़रत का सफ़रे उ़मरा करना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस बारे में कि दो ख़वातीन हैं जो आपस में बहनें हैं और दोनों बेवा हैं, येह दोनों उ़मरे पर जाना चाह रही हैं, उन दोनों की उ़म्रें 54 और 55 साल हैं, उन के साथ उन का कोई बेटा, भाई या कोई और महरम मर्द नहीं जा रहा, तो सुवाल येह है कि उन ख़वातीन का इस त़रह तन्हा उ़मरे पर जाना जाइज़ है या नहीं, जब कि वोह हिन्दूस्तान में रहती हैं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

शरीअ़ते मुत़ह्हरा में किसी भी औ़रत के लिये शौहर या महरम के बग़ैर शरई़ मसाफ़त (यानी 92 किलो मीटर या उस से ज़ाइद की मसाफ़त) का सफ़र करना नाजाइज़ो ह़राम है, ख़्वाह वोह सफ़रे ह़ज व उ़मरे की ग़रज़ से हो या किसी और मक़्सद के लिये हो, ख़्वाह वोह औ़रत जवान हो या बूढ़ी हो। लिहाज़ा पूछी गई सूरत में वोह दोनों ख़वातीन बग़ैर किसी महरम मर्द के उ़मरे के लिये तन्हा सफ़र नहीं कर सकतीं, अगर जाएंगी तो गुनहगार होंगी।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 2 मां का अपनी नाबालिग़ा औलाद के माल में तसर्रुफ़ करना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि एक नाबालिग़ा बच्ची की मिल्क में कुछ सोना है, उस की वालिदा चाहती है कि येह सोना अपनी बड़ी बेटी को उस की शादी में दे दे और बाद में उसी वज़्न का सोना बनवा कर नाबालिग़ा बेटी को वापस कर दे, क्या वोह इस त़रह कर सकती है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में मां का अपनी नाबालिग़ा बच्ची का सोना दूसरी बेटी को देना जाइज़ नहीं है, क्यूंकि येह क़र्ज़ की सूरत है जो कि बच्ची के ह़क़ में ज़ररे मह़ज़ है और क़वानीने शरइ़य्या के मुत़ाबिक़ जिस तसर्रुफ़ से नाबालिग़ को ज़रर मह़ज़ हो, ऐसा तसर्रुफ़ उस का वली जैसे बाप वग़ैरा भी नहीं कर सकता, तो मां को बदर्जए औला उस की इजाज़त नहीं होगी कि माली तसर्रुफ़ में मां के लिये अपनी नाबालिग़ औलाद पर बिल्कुल ही विलायत नहीं है।

याद रहे कि अगर बाप मोहताज और फ़क़ीर हो, और फ़क़्र की वज्ह से उसे माल की ज़रूरत हो तो ऐसी सूरत में वोह नाबालिग़ औलाद का माल बिला मुआ़वज़ा भी ले सकता है और अगर फ़क़्र व मोहताजी न हो, बल्कि और कोई ऐसी ज़रूरत हो जिस के लिये अपने पास रक़म न हो तो ऐसी सूरत में वोह नाबालिग़ औलाद का माल सिर्फ़ बतौरे क़र्ज़ ले सकता है, बिला मुआ़वज़ा नहीं ले सकता।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# रबीउ़ल आख़िर के चन्द अहम वाक़िआत

| तारीख़ / माह / सिन | नाम वाक़िआ | मज़ीद मालूमात के लिये पढ़िये |
|---|---|---|
| 15 रबीउ़ल आख़िर 953 हि. | यौमे उ़र्स ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद इब्राहीम ईर्ची رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हि. |
| 6 रबीउ़ल आख़िर 1370 हि. | यौमे विसाल ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आज़म मुह़म्मद शरीफ़ मुह़द्दिसे कोटलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हि. |
| 11 रबीउ़ल आख़िर 561 हि. | यौमे उ़र्स ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1438 ता 1445 हि. और **"ग़ौसे पाक के ह़ालात"** |
| 17 रबीउ़ल आख़िर 701 हि. | यौमे विसाल वलिय्ये कामिल ह़ज़रते सय्यिद मुह़म्मद शाह दूल्हा सब्ज़वारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हि. |
| 18 रबीउ़ल आख़िर 725 हि. | यौमे विसाल सुल्तानुल मशाइख़ ह़ज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हि. |
| 21 रबीउ़ल आख़िर 1252 हि. | यौमे विसाल ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अमीन इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1439 हि. |
| 25 रबीउ़ल आख़िर 1046 हि. | यौमे विसाल क़ुत़्बे आ़लम ह़ज़रते सय्यिद आ़लम शाह बुख़ारी सोहरवर्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1441 हि. |
| 29 रबीउ़ल आख़िर 627 हि. | यौमे विसाल सूफ़ी बुज़ुर्ग ह़ज़रते शैख़ फ़रीदुद्दीन मुह़म्मद अ़त्तार رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1441 हि. |
| रबीउ़ल आख़िर 4 हि. | विसाले मुबारका उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते बीबी ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1438, 1439 हि. और **"फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन"** |
| रबीउ़ल आख़िर 6 हि. | शोहदाए सरियए मुह़म्मद बिन मस्लमा : रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने 10 सह़ाबए किराम को ज़ुल क़ुस्सा के क़बाइल की सरकोबी के लिये भेजा उस सरिये में अक्सर सह़ाबा शहीद हुए। | माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1442 हि. |

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के शुमारे दावते इस्लामी की वेबसाइट से डाउनलोड कर के पढ़िये और दूसरों को शेयर भी किजीये।

## रबीउ़ल आख़िर की मुनासबत से क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुबो रसाइल

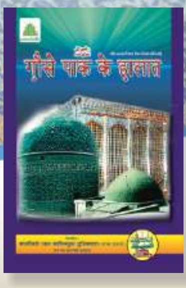


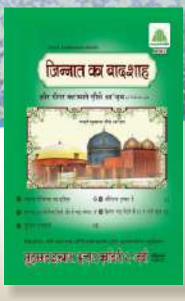


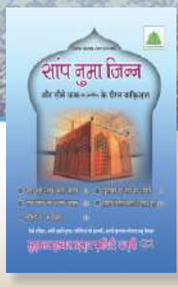


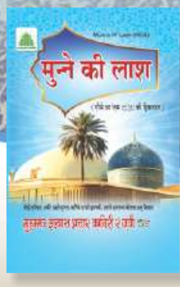

اللّٰہ

# روزگار کی تکلیف کا ایک سبب

فرمانِ آخری نبی صلّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلّم:

"گناہوں میں سے کچھ گناہ ایسے ہوتے ہیں جن کو رزق حاصل کرنے میں پہنچنے والا رنج و غم ہی مٹا سکتا ہے"۔

(دیکھئے: معجم الاوسط، ج01، ص42، حدیث:102)

محمد الیاس قادری ۱۴۴۷ھ

8-11-25

## रोज़गार की तक्लीफ़ का एक सबब

**फ़रमाने आख़िरी नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

"गुनाहों में से कुछ गुनाह ऐसे होते हैं जिन को रिज़्क़ हासिल करने में पहुंचने वाला रंजो ग़म ही मिटा सकता है।"

(دیکھئے: معجم الاوسط، ج1، ص42، حدیث:102)

**दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए़ माली तआ़वुन कीजिये !**

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही़ (Reformatory), फ़लाही़ (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है